नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 288, नई दिल्ली, गुरुवार 18 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जब तक सांस है, तब तक संघर्ष है, और जब तक संघर्ष है, तब तक उम्मीद है।

03 हनुमत साधना - दुर्लभ प्राचीन विचित्र वीर हनुमान यंत्र दर्शन....

06 रामानुजन: वह आदमी जो अनंत को जानता था

08 रांची राजभवन का नाम बिरसा भवन नामित हो: राधाकृष्ण किशोर, संसदीय मंत्री

सड़क हादसों की बढ़ती वजह: अवैध पार्किंग और हाईवे किनारे ढाबे

सुनील कुमार महला

सड़क हादसे एक बहुत बड़ी मानवीय त्रासदी है, जो पल भर में हँसते-खेलते परिवारों को उजाड़ देती है। इनमें किसी अपने की जान जाना या जीवन भर की अपंगता पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल देती है। हादसे के बाद केवल आर्थिक नुकसान ही नहीं होता, बल्कि मानसिक और भावनात्मक पीड़ा भी लंबे समय तक बनी रहती है। बच्चों का भविष्य प्रभावित होता है और बुजुर्ग सहारे से वंचित हो जाते हैं। समाज पर भी इसका व्यापक असर पड़ता है, क्योंकि कार्यशील नागरिकों की क्षति से सामाजिक-आर्थिक विकास बाधित होता है। अस्पतालों और आपात सेवाओं पर अतिरिक्त दबाव पड़ता है। इन हादसों का सबसे दुखद पहलू यह है कि अधिकांश दुर्घटनाएं थोड़ी-सी सावधानी और नियमों के पालन से रोकी जा सकती हैं। इसलिए सड़क सुरक्षा को केवल कानून नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में समझना बेहद जरूरी है।

घना कोहरा व धुंध सड़क हादसों का प्रमुख कारण:-

हाल ही में यमुना एक्सप्रेसवे पर मथुरा के पास 16 दिसंबर २०२५ मंगलवार तड़के कोहरा 13 लोगों के लिए काल बन गया। दरअसल, कोहरे के कारण दृश्यता शून्य होने के कारण आपस में टकराने से वाहनों में आग लग गई, जिससे यात्री जिंदा जलकर मर गये। जानकारी के अनुसार हादसा इतना भीषण था कि सौ से अधिक लोग इसमें घायल हो गए। वास्तव में, घने कोहरे के कारण आगे चल रहा वाहन ड्राइवर से टकराकर संतुलन खो बैठा और इसके बाद पीछे से आ रहे वाहन एक के बाद एक टकराते चले गए। इससे वाहनों में आग लग गई। गहरी नींद में सो रहे यात्रियों की तेज आवाज से आंख खुली तो चीख-पुकार मच गई और वे जान बचाने के लिए जलते वाहनों से कूदने लगे। आशंका है कि सीएनजी वाहन में विस्फोट से आग लगी। दमकलों ने जब तक आग पर काबू पाया, 14 वाहन जल चुके थे। इनमें आठ बसें और एक कार शामिल है। ये बसें यूपी, बिहार, अरुणाचल प्रदेश से दिल्ली आ रही थीं। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस घटना पर दुख जताया है। उन्होंने कहा है कि, 'मेरी संवेदनाएं अपनों को खोने वाले परिवारों के साथ हैं।' भीषण हादसे के बाद प्रधानमंत्री राहत कोष से प्रत्येक मृतक के परिजनों को दो-दो लाख और घायलों को 50 हजार रुपये देने की घोषणा की गई है। वहीं, यूपी के मुख्यमंत्री कार्यालय ने भी मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख और घायलों को 50-50 हजार की मदद देने का ऐलान किया है।

सड़क हादसों के लिए वाहन चालकों की लापरवाही ही जिम्मेदार नहीं:-

हाल फिलहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि हाल के दिनों में राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेस-वे पर जो बड़े सड़क हादसे हुए हैं, उनके लिए सिर्फ वाहन चालकों की लापरवाही ही जिम्मेदार नहीं है। सच तो यह है कि सड़क किनारे बने ढाबे और होटल भी इन दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण बन रहे हैं। अक्सर इन ढाबों के सामने ट्रक, बस या अन्य वाहन सड़क के किनारे खड़े कर दिए जाते हैं और सड़क पर तेज रफ्तार से दौड़ने वाली गाड़ियां उन्हें समय पर देख नहीं पातीं और उनसे टकरा जाती हैं। इसका गंभीर उदाहरण कुछ समय पहले ही राजस्थान के फलोदी में हुआ एक हादसा है, जहां सड़क किनारे खड़े एक ट्रेलर से टेम्पो ट्रैवलर टकरा गया। मीडिया में आईं ख़बरों के अनुसार इस दुर्घटना में 10 महिलाओं और 4 बच्चों सहित कुल 15 लोगों की मौत हो गई थी। इस घटना पर माननीय सुप्रीम कोर्ट ने खुद संज्ञान लिया और सुनवाई के दौरान एनएचएआई यानी कि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (नेशनल हाइवेज अथारिटी ऑफ इंडिया)और प्रशासन की कार्यप्रणाली पर कड़ी नाराजगी जताई। अदालत ने साफ कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेस-वे के किनारे बने अवैध ढाबे और होटल सड़क हादसों की बड़ी वजह हैं और इन्हें रोकने के लिए देशभर में लागू होने वाले नियम बनाने की जरूरत है। वास्तव में, असल समस्या यह है कि कई ढाबे और होटल लाभ कमाने के उद्देश्य से बिना पर्याप्त पार्किंग के ही सड़क किनारे खोल दिए जाते हैं और वहां ठहरने वाले लोग मजबूरी में अपनी गाड़ी सड़क पर खड़ी कर देते हैं, जबकि इन सड़कों पर वाहन बहुत तेज रफ्तार से चलते हैं। ऐसे में हादसों का खतरा लगातार बना रहता है। सवाल यह है कि ऐसे ढाबों को बिना नियम-कानून के चलने की इजाजत किसने दी और अब तक सरकार ने इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई क्यों नहीं की ? क्या ऐसे ढाबा व होटल मालिकों के खिलाफ कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए ? यह विडंबना ही है कि आज हमारे देश में सड़क किनारे खुलने वाले ढाबे, रेस्टोरेंट और होटल अक्सर बिना किसी ठोस नियम-कानून के संचालित हो रहे हैं। ये जहां जगह मिल गई, वहीं बना दिए जाते हैं, जिससे यातायात व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित होती है। अधिकांश ढाबों के सामने वाहनों की अवैध पार्किंग रहती है, या बहुत से स्थानों पर तो पार्किंग व्यवस्थाएं होतीं ही नहीं हैं, ऐसे में वाहनों को यत्र-तत्र अव्यवस्थित रूप से पार्क करना पड़ता है, जो सड़क हादसों का कारण बनती है। वास्तव में ऐसी जगहों पर न तो यहां सुरक्षित पार्किंग की व्यवस्था होती है और न ही प्रवेश-निकास के लिए निर्धारित स्थान। कई जगहों पर तो पीने के पानी और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव देखने को मिलता है। इससे यात्रियों को, वाहन चालकों को परेशानी होती है और आसपास गंदगी भी फैलती है यह एक कड़वा सच है कि स्वच्छता और सुरक्षा मानकों की खुलेआम अनदेखी की जाती है। जरूरत है कि ऐसे ढाबों और होटलों के लिए स्पष्ट नियम बनाए जाएं और उनका सख्ती से पालन कराया जाए।

आंकड़े बयां करते हैं सड़क हादसों की भयावहता:-

हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर आंकड़ों की बात करें तो २०२५ में भारत में सड़क हादसों की स्थिति बेहद चिंताजनक बनी हुई है। उपलब्ध सरकारी व मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, जनवरी से जून 2025 के बीच केवल राष्ट्रीय राजमार्गों पर ही लगभग 67,900 से अधिक सड़क दुर्घटनाएँ दर्ज की गईं, जिनमें करीब 29,000 लोगों की मौत हुई। यह आंकड़ा दर्शाता है कि हर दिन औसतन 150 से अधिक लोग सड़क हादसों में अपनी जान गंवा रहे हैं। तेज रफ्तार, ओवरलोडिंग, शराब पीकर वाहन चलाना, ट्रैफिक नियमों की अनदेखी और सड़क किनारे अव्यवस्थित ढाबे-पार्किंग जैसी समस्याएँ इन हादसों के प्रमुख कारण बने हुए हैं। विशेषज्ञों के अनुसार यदि यही रुझान जारी रहा, तो २०२५ में सड़क दुर्घटनाओं में मरने वालों की कुल संख्या पिछले वर्षों के रिकॉर्ड को भी पार कर सकती है, जो सड़क सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है। वास्तव में आज देश में सड़कें तो तेजी से बन रहीं हैं, लेकिन उन पर सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने को उतनी गंभीरता नहीं दी जा रही। हादसों के कारण बार-बार सामने आने के बावजूद ठोस नीति और सख्त नियम लागू नहीं किए जा रहे हैं। अगर समय रहते अवैध ढाबों, पार्किंग व्यवस्था और सड़क सुरक्षा पर ध्यान नहीं दिया गया, तो ऐसे हादसे आगे भी होते रहेंगे और देश को जान-माल का भारी नुकसान उठाना पड़ेगा।

सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों के पालन की जिम्मेदारी पूरे समाज की है:-

बहरहाल, यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि हमारे देश में दिसंबर-जनवरी ठंड के महीने होते हैं और इस दौरान देश के कई हिस्सों, विशेषकर पानी वाले इलाकों में घना कोहरा व धुंध छा जाती है, जिससे सड़क पर दृश्यता बेहद कम हो जाती है। ऐसे हालात में वाहन चलाते समय विशेष सावधानी बरतना अनिवार्य है। मोबाइल फोन का उपयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह ध्यान भटकाता है और दुर्घटना का खतरा बढ़ाता है। शराब या किसी भी प्रकार के नशे में वाहन चलाना जानलेवा साबित हो सकता है। यदि नींद या थकान महसूस हो रही हो तो वाहन रोककर विश्राम करना ही सुरक्षित विकल्प है। इसके साथ ही यातायात नियमों का सख्ती से पालन करना चाहिए, गति सीमित रखनी चाहिए और सीट बेल्ट अवश्य लगानी चाहिए, क्योंकि यह दुर्घटना की स्थिति में जान बचाने में अहम भूमिका निभाती है। वास्तव में, सावधानी और जिम्मेदारी ही ठंड व कोहरे के मौसम में सुरक्षित यात्रा की कुंजी है। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों का पालन किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि यह हमारे पूरे समाज की एक सामूहिक जिम्मेदारी है। अधिकतर सड़क हादसे तेज़ गति, नशे में ड्राइविंग, मोबाइल फोन के प्रयोग और यातायात के नियमों की अनदेखी के कारण होते हैं। हेलमेट, सीट बेल्ट, लेन ड्राइविंग और ट्रैफिक संकेतों का पालन करने से दुर्घटनाओं में भारी कमी लाई जा सकती है। सड़कों की खराब स्थिति, अव्यवस्थित पार्किंग और अतिक्रमण भी हादसों को बढ़ावा देते हैं। सरकार, प्रशासन और नागरिकों सभी को मिलकर सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। जागरूकता अभियान, सख्त कानून और उनका ईमानदार क्रियान्वयन बेहद आवश्यक है। सुरक्षित सड़कें केवल नियमों से नहीं, बल्कि जिम्मेदार व्यवहार से बनती हैं। यदि समय रहते सावधानी बरती जाए, तो अनमोल जानें बचाई जा सकती हैं।

माननीय उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी दिल्ली में ई वाहन खरीदने वालो को घोषित सब्सिडी क्यों नहीं मिल रही ?

संजय बाठला

दिल्ली सरकार द्वारा इलेक्ट्रिक वाहनों को खरीदने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने पर प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) की घोषणा की गई है पर ई वाहन खास तौर से ई रिक्शा, ई लोडर और दो पहिया वाहन खरीदने वालों की शिकायत प्राप्त हो रही हैं की उनको कई सालों से बार बार चक्कर लगाने के बाद भी ना तो घोषित प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) मिली और ना ही कोई सही जवाब।

दिल्ली परिवहन विभाग में बनाए गए ई शाखा में या तो कोई मिलता नहीं और मिल भी जाए तो भी कोई सही जवाब नहीं मिलता।

ई वाहन खरीदने वाले मालिक डीलर और विभाग मे चक्कर काट के परेशान हो रहे है और कुछ ई वाहन मालिकों द्वारा उपराज्यपाल पोर्टल और परिवहन विभाग के पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई तो परिवहन विभाग द्वारा जवाब में कहा गया की

* आपके द्वारा दिए गए वाहन नबर के लिए कोई प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने का या देने के लिए कोई पोर्टल पर आवेदन प्राप्त नहीं हुआ।

* क्या दिल्ली सरकार द्वारा अपनी घोषित स्कीम में ई वाहन खरीदने वाले के लिए किसी पोर्टल पर आवेदन आवश्यक किया था जो उसके द्वारा नहीं भरा गया, बड़ा सवाल ?

* ई वाहन बेचने वाले डीलर जो परिवहन विभाग द्वारा अधिकृत है ने पोर्टल पर अपने द्वारा बेचे हुए ई वाहन की प्रोत्साहन राशि के लिए आवेदन करना था तो उसके द्वारा नहीं किए जाने का जिम्मेदार ई वाहन मालिक कैसे, बड़ा सवाल ?

* अगर ई वाहन डीलर द्वारा ई वाहन बेचा गया और उसने उसका पंजीकरण करवाकर ई वाहन खरीदने वाले को दिया तब पंजीकरण के साथ ही प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) के लिए आवेदन नहीं करने वाले डीलरो के खिलाफ परिवहन विभाग द्वारा कार्रवाई क्यों नहीं की गई, बड़ा सवाल ?

* डीलरो का ई वाहन खरीदने वाले मालिकों को कहना है की दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) आवेदन पोर्टल ही बंद कर रखा है तो हम उस पर कैसे आवेदन भेजे, बड़ा सवाल ?

* क्या दिल्ली परिवहन विभाग जानबूझ कर प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) नहीं दे रहा और जनता को प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) का झूठा प्रचार करके ई वाहनों को खरीदवा रहा है सबसे मुख्य और बड़ा सवाल ?

दिल्ली परिवहन विभाग को दिल्ली में ई वाहन खरीदने वाले मालिकों को तत्काल प्रभाव से घोषित प्रोत्साहन राशि (सब्सिडी) देनी चाहिए या फिर यह बताना चाहिए की किस आधार पर घोषित प्रोत्साहन राशि उन्हें नहीं दी जाएगी

आपकी जानकारी हेतु कुछ विशेष

दिल्ली में ई-रिक्शा, ई-लोडर और दोपहिया EV खरीदारों को घोषित सब्सिडी मुख्यतः प्रशासनिक देरी, पोर्टल बंद/असक्रिय रहने, बजट-स्वीकृति की दिक्कत और नीति के बीच में "लैप्स" हो जाने के कारण समय पर नहीं मिली है।

नीति और पोर्टल की स्थिति

दिल्ली EV नीति 2020 के तहत ई-रिक्शा/ई-कार्ट पर 30,000 रुपये तक प्रति वाहन की खरीद प्रोत्साहन राशि का प्रावधान है, जिसके लिए आवेदन डीलर के माध्यम से ऑनलाइन पोर्टल पर जाना था, सीधे मालिक से नहीं।

यह पोर्टल कई बार तकनीकी कारणों, डेटा-समीक्षा, और नई नीति (EV Policy 2.0) तैयार होने के बीच "सस्पेंड/स्लो" मोड में रहा, जिसकी वजह से वर्षों तक सब्सिडी क्लेम लंबित पड़े।

लंबित सब्सिडी और हाईकोर्ट की फटकार 2024–25 के दौरान लगभग 2.19 लाख EV के लिए करीब 140 करोड़ रुपये की सब्सिडी लंबित बताई गई, जिनमें बड़ी संख्या दोपहिया और तीन पहिया (ई-रिक्शा/ई-लोडर) भी शामिल हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने 3 सितंबर 2025 को आदेश देकर कहा कि सरकार "प्रोसीजरल अड़चनों" का बहाना बनाकर सब्सिडी देने में देरी नहीं कर सकती और तुरंत लंबित सब्सिडी रिलीज़ करने के लिए कदम उठाए।

"पोर्टल पर आवेदन नहीं मिला" वाला जवाब हाईकोर्ट को दिए बयानों और नीति-दस्तावेजों से साफ है कि EV सब्सिडी के लिए आवेदन करने की जिम्मेदारी मुख्यतः अधिकृत डीलर पर रखी गई, ताकि उपभोक्ता पर तकनीकी बोझ न पड़े; पोर्टल पर एंट्री डीलर आईडी से होती है।

ऐसी स्थिति में अगर विभाग यह कह रहा है कि "आपके वाहन नंबर के लिए कोई आवेदन नहीं मिला", तो दो संभावनाएँ हैं: (1) डीलर ने समय पर आवेदन ही नहीं किया या गलत तरीके से किया, या

(2) पोर्टल/डेटाबेस में गड़बड़ी रही और एंट्री ट्रेस नहीं हो रही।

खबर का असर

ड्राइवर के साथ मारपीट प्रकरण: संगठन की एकजुटता और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों की त्वरित कार्रवाई से मिला न्याय

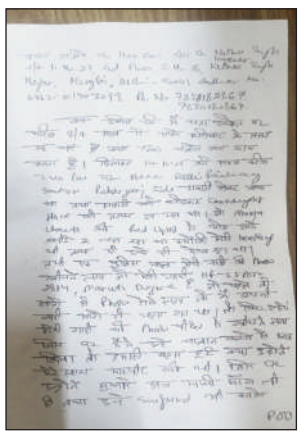

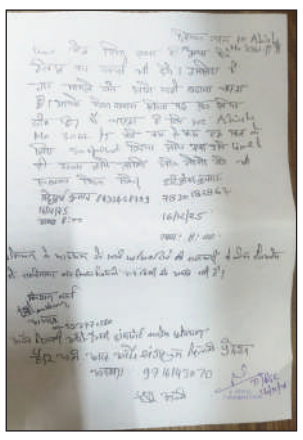

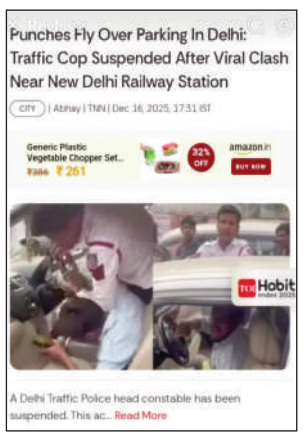

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन क्षेत्र में एक ड्राइवर के साथ ट्रैफिक पुलिसकर्मी द्वारा की गई मारपीट की घटना ने न केवल ड्राइवर समाज को आहत किया, बल्कि पुलिस व्यवस्था में जवाबदेही और संवेदनशीलता पर भी गंभीर प्रश्न खड़े किए। यह स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि यह घटना किसी "आम व्यक्ति" के साथ नहीं, बल्कि ड्यूटी पर कार्यरत एक ड्राइवर के साथ हुई, जो देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति द्वारा लगातार पत्राचार, तथ्यों और साक्ष्यों के साथ मामला उठाए जाने के बाद दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने त्वरित, निष्पक्ष और निर्णायक हस्तक्षेप किया, जिसके परिणामस्वरूप आरोपी ट्रैफिक पुलिस कांस्टेबल को विभाग द्वारा निलंबित (Suspended) किया गया। साथ ही संगठन को पूरे प्रकरण की संपूर्ण और स्पष्ट जानकारी भी उपलब्ध कराई गई।

समिति यह स्पष्ट रूप से कहना चाहती है कि इस प्रकरण में दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के उच्च अधिकारियों की भूमिका जिम्मेदार और सराहनीय रही, जिससे यह संदेश गया कि वर्दी में अनुशासन और कानून सर्वोपरि है।

हालांकि, यह भी तथ्य सामने आया कि प्रारंभिक स्तर पर पहाड़गंज थाना SHO द्वारा अपेक्षित सहयोग नहीं किया गया, बल्कि आरोपी कर्मी को बचाने और मामले को हल्के में लेने का प्रयास दिखाई दिया। वरिष्ठ अधिकारियों के हस्तक्षेप के बाद ही दृष्टिकोण में परिवर्तन आया और आवश्यक कार्रवाई संभव हो सकी। समिति की मांग है कि ऐसे मामलों में स्थानीय स्तर की भूमिका की भी समीक्षा हो, ताकि भविष्य में किसी पीड़ित ड्राइवर को न्याय के लिए संघर्ष न करना पड़े।

यह प्रकरण एक स्पष्ट संदेश देता है कि

> संगठन से बड़ा कोई नहीं होता।

एकजुट रहकर, तथ्य और सच्चाई के साथ खड़े होकर, किसी भी बड़े से बड़े अन्याय के विरुद्ध परिणाम हासिल किए जा सकते हैं।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति यह दोहराती है कि वह कानून और संविधान में पूर्ण विश्वास रखती है, परंतु ड्राइवरों के सम्मान, सुरक्षा और अधिकारों से किसी भी स्तर पर समझौता नहीं किया जाएगा।

जारीकर्ता: राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार

फ़िशिंग SMS सिंडिकेट कैसे काम करता है ?

इंफ्रास्ट्रक्चर सेटअप: CBI द्वारा पकड़ी गई भारत की सबसे बड़ी SMS फ़ैक्ट्री

सिंडिकेट ने एक पूरी तरह स्वचालित, इंडस्ट्रियल स्केल SMS ब्लास्टिंग प्लांट बनाया था, जो हर दिन लाखों फ़िशिंग संदेश भेजने में सक्षम था।

1. यह गुप्त सेटअप एक समानांतर टेलीकॉम नेटवर्क की तरह काम करता था, जिसमें शामिल थे:
* हाई स्पीड SMS ब्लास्टिंग सॉफ़्टवेयर चलाने वाले रैक माउंटेड सर्वर
* दर्जनों/सैकड़ों मोबाइल डिवाइसों से जुड़े USB हब
* बिना रुके, मल्टी नेटवर्क कनेक्टिविटी देने वाले इंटरनेट डोंगल
* GSM मॉडेम/फ़ोनों में लगी हज़ारों सक्रिय SIM कार्ड
* रिमोट एक्सेस टूल, जिससे ऑपरेटर कहीं से भी सिस्टम चला सकें
इस ढांचे ने उन्हें वैध कंपनियों जैसा दिखने, फ़िल्टर बायपास करने और देशभर में धोखाधड़ी वाले SMS फैलाने में सक्षम बनाया।

२. SIM की खरीद व रोटेशन: ऑपरेशन का ईंधन, गुप्त रहने के लिए:
३ SIM कार्ड फर्जी, चोरी या किराए पर लिए गए KYC से लिए जाते थे
* ब्लॉकिंग से बचने के लिए SIMs को लगातार घुमाया जाता था
* SIM बैंक दैनिक सीमा पूरी होते ही SIM को ऑटो स्विच कर देते थे
* जांच से बचने के लिए SIMs दूर दराज़ राज्यों में रजिस्टर कराए जाते थे
इससे "क्लीन" नंबरों की लगातार सप्लाई बनी रहती थी।

३. फ़िशिंग कंटेंट तैयार करना: डर और घबराहट पैदा करना, गिरोह ऐसे संदेश टेम्पलेट इस्तेमाल करता था जो डर, तात्कालिकता और दबाव पैदा करें:
* बैंक, FASTag, कूरियर, बिजली बोर्ड और सरकारी पोर्टल जैसे दिखने वाले प्री टेस्टेड टेम्पलेट
* दुर्भावनापूर्ण लिंक छिपाने के लिए URL शॉर्टनर और समझौता किए गए डोमेन
* हर पीड़ित के लिए अलग, मुश्किल से ब्लॉक होने वाला डायनेमिक लिंक
* आम ट्रिगर संदेश*:
* आपका बैंक खाता ब्लॉक हो जाएगा "
* "आपका FASTag KYC लंबित है "
* "आपका पार्सल होल्ड पर है "
हर संदेश का उद्देश्य था—पीड़ित को तुरंत कार्रवाई करने पर मजबूर करना।

4. ऑटोमेटेड ब्लास्ट मैकेनिज़्म: Fire and Forget Fraud, सर्वर पर चलने वाली स्क्रिप्ट:
* SIM बैंक से SIM खींचती
* संदेश टेम्पलेट चुनती
* SMS API या GSM मॉडेम को ऑटो डायल करती
* पीक आवर्स में ब्लास्ट शेड्यूल करती
* असली ट्रस्टेड ब्रांड SMS जैसा दिखाने के लिए Sender ID बदलती
नतीजा: लगभग बिना मानव प्रयास के लाखों SMS प्रतिदिन।

5. ट्रैफ़िक रीडायरेक्शन: डिजिटल जाल, लिंक पर क्लिक करते ही पीड़ित पहुंचते थे:
* बैंक/सरकारी/पेमेंट पोर्टल जैसे दिखने वाली क्लोन वेबसाइटों पर जो होस्ट होती थीं:
o समझौता किए गए सर्वरों पर
o बुलेटप्रूफ़ होस्टिंग पर
o फ़ास्ट फ़्लक्स नेटवर्क पर
ये फ़िशिंग पेज चुराते थे:
* मोबाइल नंबर
* OTP
* कार्ड विवरण
* नेट बैंकिंग क्रेडेंशियल
डेटा तुरंत Telegram बॉट्स या लाइव डैशबोर्ड पर भेज दिया जाता था।

6. रियल टाइम फ्रॉड एक्ज़ीक्यूशन: "Fraud Desk", क्रेडेंशियल मिलते ही:
* एक समर्पित फ्रॉड डेस्क सेकंडों में खाते में लॉग इन कर जाती
* OTP हासिल किए जाते:
o लाइव फ़िशिंग पेज से
o कॉल स्पूफ़िंग फॉलो अप से
o मैलवेयर युक्त APK से (उन्नत मामलों में)
पैसा तुरंत भेजा जाता था:
* म्यूल अकाउंट्स में
* क्रिप्टो वॉलेट्स में
* इंस्टेंट लोन ऐप्स के ज़रिए
यह सटीक समयबद्ध, असेंबली लाइन फ्रॉड था।
7. मनी लॉन्ड्रिंग लेयर: पैसे को गायब करना, ट्रेल मिटाने के लिए:
* म्यूल्स को जॉब ऐड, Telegram ग्रुप या हैक्ड अकाउंट्स से भर्ती किया जाता
* पैसा लेयर किया जाता:
o UPI चेन
o छोटे छोटे ट्रांसफ़र
o ATM कैश आउट
o क्रिप्टो कन्वर्ज़न
कुछ ही मिनटों में पैसा अनट्रेसएबल और अनरिकवरएबल हो जाता था।

8. ऑपरेशनल सिक्योरिटी (OpSec): पूरी तरह Ghost Mode, सिंडिकेट की सुरक्षा रणनीतियाँ:
* VPN और प्रॉक्सी
* रिमोट डेस्कटॉप
* डिस्पोज़ेबल डिवाइस
* एनक्रिप्टेड कम्युनिकेशन
* उपकरणों का लगातार स्थान बदलना
SIM बैंक अक्सर किराए के फ्लैट, गोदाम या ग्रामीण सुरक्षित ठिकानों में छिपाए जाते थे।

9. यह सेटअप इतना खतरनाक क्यों है ऐसी स्वचालित प्रणालियाँ:
* कुछ घंटों में पूरे भारत में फ़िशिंग SMS की बाढ़ ला सकती हैं
* टेलीकॉम फ़िल्टर और डिटेक्शन सिस्टम को मात दे सकती हैं
* देशव्यापी, समन्वित फ्रॉड अभियान चला सकती हैं
* अपराधियों को बड़े पैमाने पर गुमनाम रहने देती हैं
ऐसे इंफ्रास्ट्रक्चर की जब्ती फ़िशिंग इकोसिस्टम पर बड़ा प्रहार है और नागरिकों की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कदम।

Legal Awareness, Know your rights. Respect the law

जगमोहन सिंह

In a क्रिमिनल केस, "Denial" — यानी आरोप से साफ़ इंकार —

is considered the safest defence for any accused person.

Under Indian law, हर इंसान innocent माना जाता है जब तक वो दोषी साबित न हो,

and the burden of proof हमेशा prosecution पर होता है — not on the accused,

यानि Complainant / State पर।

हर आरोपी को चुप रहने का अधिकार (Right to Silence) भी प्राप्त है,

as guaranteed under Article 20(3) of the Constitution of India.

कानून किसी व्यक्ति को खुद के ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए मजबूर नहीं करता,

यानि न पुलिस और न ही कोर्ट किसी को मजबूर कर सकती है कि वह अपना जुर्म क़ुबूल करे।

Burden of proof हमेशा केस डालने वाले पर होता है, और उसे ही अपना केस साबित करना पड़ता है।

यहां तक कि सिर्फ़ पुलिस के पूछने पर ही नहीं, बल्कि कोर्ट के पूछने पर भी आरोपी कह सकता है:

"I choose to remain silent and exercise my legal Right to Silence."

लेकिन अक्सर आरोपी अपने इस legal right से अनजान होते हैं।

Know your rights. Respect the law.

Cases

जगमोहन सिंह

तफ्तीश मैं पेंडिंग 70% केसों को दोनों पार्टियों की एक दो बार आपसी मीटिंग करवाकर और मामूली काउंसलिंग के बाद क्लोजर रिपोर्ट फाइल करके बंद किया जा सकता है।

60% पेंडिंग ट्रायल केसों में से आधे मामूली काउंसलिंग के बाद विदड्रॉ हो सकते हैं, बाकी में समझौते होकर राहतें मिल सकती हैं। इससे अदालत और लोगों का समय बचाया जा सकता है। बस काउंसलर सही मंशा वाले होने चाहिए लिटिगेन्ट्स से फीस लेने का ध्यान थोड़ा सा कम करना होगा।

कम मुकदमे होंगे तो लोगों पर टैक्स भी घट जाएगा। सरकार तो और कहीं से भी कमा लेगी !

90% मुकदमे तो करने की ज़रूरत ही नहीं होती। गुस्से में या उकसावे में कर दिये जाते हैं क्योंकि ग्रामीण पंचायती व्यवस्था ने काम करना बंद कर दिया है। उसमें राजनीति घुस गई। ग्रामीण भाईचारा राजनीति की भेंट चढ़ गया। पर अभी बिगड़ा कुछ नहीं। सब आराम से पुनर्जीवित हो सकता है।

कर के तो देखें।

BailSystem

जगमोहन सिंह

बेल ओपोज करना एक ट्रेडिशनल ड्यूटी बन चुकी है, जिसके पीछे कोई लॉजिक तो है नहीं, पर प्रशासनिक मजबूरी है। बेल का विरोध न करने को संदेह की नजर से देखा जाता है, इसलिए डर के मारे सब कुछ ना कुछ विरोध दर्ज कराते ही हैं, और पाक साफ बन जाते हैं।

सब जानते हैं कि बेल के विरोध कैसे होते हैं? यही, कि अपराधी ट्रायल जम्प कर जाएगा, अपराधी गवाहों को धमकी देकर गवाही देने से तोड़ मरोड़ सकता है, अपराधी साक्ष्य मिटा सकता है या फिर अंत में कि अपराध संगीन है। जज ही-ही करके ऐसे विरोधों को चुस्कियां लेकर स्वीकार करते हैं क्योंकि ज़मानत के पैसे नहीं मिले होते, जबकि उनका वास्तव में विरोध का आधार होने का मतलब ही नहीं होता।

सुप्रीम कोर्ट जो मर्जी कहता रहे, सेशन जजों ने तो सुधारना नहीं है। अपराध संगीत होते हैं तभी तो नॉन-बेलेबल होते हैं वरना तो बेलेबल होते व जमानत की अर्जी लगाने की जरूरत ही ना पड़ती। जमानत पर छूटने के बाद साक्ष्य कौन मिटा सकते हैं? गवाहों ने मुकरना होगा तो वे तब भी मुकर जायेंगे जब मुल्जम जेल में है। क्योकि उसके बाकी समर्थक या गुंडे तो बाहर ही होते हैं।

यह सब अदालत सिस्टम की कमजोरी हैं, क्योंकि गवाहों के बयान अदालतें दर्ज करना ही नहीं चाहती। जल्दी से बयान दर्ज हो जाएं, तो गवाहों को धमकाने का सवाल ही नहीं रह जाता।

बेल, ज्यूडिशरी की सबसे बड़ी दुकानदारी है। इसमें माफिया चलता है पहले मजिस्ट्रेट, बेल देने की पावर होने के बावजूद बेल रिजेक्ट करता है, फिर सेशन कोर्ट रिजेक्ट करता है, फिर हाई कोर्ट रिजेक्ट करने में रही सही कसर पूरी कर देता है। और मुलजिम की जेबें खाली हो जाती है। अपराधी है या बेकसूर, यह तो तय ही नहीं हो पाता।

सुप्रीम कोर्ट तक तो पहुंचाना आम आदमी के बस की बात ही नहीं है। सरकारी खजाना लुटा कर कोई भी जा सकता है। कौन देगा 10 लाख रुपये एक पेशी के जब उस पेशी पर सुनवाई होने की कोई पक्की उम्मीद ही ना हो? ज्यूडिशल सिस्टम का ढांचा जानबूझकर इतना खराब किया गया कि अब ठीक करना बहुत मुश्किल वाला काम है। बड़ी जान चाहिए। जिन पर निर्भर है उन सांसदों का खराब कैलिबर किसी से छुपा हुआ नहीं है। उन पर चलने वाला कोड़ा whip भी सबको पता है। उन की कोई मजाल नहीं है कि कोई कानून लोगों के पक्ष का भी सही बना दें। ऐसा कहने से बुरा तो लगता है पर अब मजबूरी बन गई। आजादी के 77 साल बाद भी नागरिको ऐसी न्यायिक दुर्दशा बर्दाश्त से बाहर है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

सर्दियों में सुपरफूड है शलजम, सही तरीके से खाया तो बाल, स्किन और पेट के लिए अमृत

शलजम कैसे आपके बाल और स्किन को फायदा पहुंचाता है और आप इसे किन-किन तरीकों से डाइट में शामिल कर सकते हैं जानते हैं :-

बदलती जीवनशैली और बढ़ते प्रदूषण के कारण आज त्वचा और बालों से जुड़ी समस्याएं आम होती जा रही हैं। कम उम्र में झुर्रियां, रूखी त्वचा, बालों का झड़ना और समय से पहले सफेद होना अब केवल उम्र की समस्या नहीं रह गई है। महंगे ब्यूटी प्रोडक्ट्स में केमिकल होने के कारण फायदा कम और नुकसान ज्यादा पहुंचाते हैं। एक्सपर्ट्स का मानना है कि त्वचा और बालों की असली देखभाल भीतर से होती है और इसके लिए सही खानपान बहुत जरूरी है। आपको बता दें कि भारतीय रसोई में मौजूद कई सब्जियां इस काम में आपकी मदद कर सकती हैं, जिनमें शलजम भी शामिल है. सर्दियों में आसानी से मिलने वाली यह सब्जी सेहत के साथ-साथ त्वचा और बालों के लिए भी बहुत लाभकारी मानी जाती है।

शलजम बाल और स्किन के लिए क्यों है फायदेमंद - अमेरिकन नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के मुताबिक, शलजम में विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन के, कैल्शियम, पोटैशियम और फाइबर भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। सभी पोषक तत्व शरीर के लिए जरूरी होते हैं।

* विटामिन सी त्वचा को भीतर से मजबूत बनाने में मदद करता है, यह त्वचा में कोलेजन बनाने की प्रक्रिया को तेज करता है, जिससे त्वचा टाइट बनी रहती है और झुर्रियां जल्दी नहीं पड़तीं।

* वहीं, विटामिन ए त्वचा की कोशिकाओं की मरम्मत करता है और नई कोशिकाओं के निर्माण में मदद करता है, जिससे त्वचा साफ और चमकदार दिखती है. शलजम में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को नुकसान पहुंचाने वाले कणों से बचाते हैं। इसका नियमित सेवन शरीर में सूजन को कम करता है, जिससे मुंहासे और जलन जैसी समस्याओं में राहत मिल सकती है.

* इसके अलावा शलजम में पानी की मात्रा बेहतर होती है, जो त्वचा को भीतर से नमी प्रदान करती है और रूखेपन से बचाती है.

* बालों की सेहत के लिए भी शलजम को फायदेमंद माना जाता है। इसमें मौजूद विटामिन ए सिर की त्वचा में प्राकृतिक तेल के संतुलन को बनाए रखता है, जिससे बाल रूखे और बेजान नहीं होते. विटामिन सी बालों की जड़ों को मजबूत करता है और बालों के टूटने की समस्या को कम कर सकता है. शलजम में मौजूद तत्व रक्त संचार को बेहतर बनाते हैं, जिससे सिर की त्वचा तक पोषण पहुंचता है और बालों की बढ़त में मदद मिलती है।

शलजम के अन्य फायदे -

* शलजम का असर केवल त्वचा और बालों तक सीमित नहीं है. यह पाचन तंत्र को दुरुस्त रखने में भी सहायक है. इसमें मौजूद फाइबर कब्ज की समस्या से राहत देता है और पेट को साफ रखता है. पेट साफ रहने से त्वचा पर भी सकारात्मक असर पड़ता है।

* इसके अलावा, शलजम प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है, जिससे शरीर मौसमी बीमारियों से बेहतर तरीके से लड़ पाता है. कुछ शोधों में यह भी पाया गया है कि शलजम में मौजूद तत्व शरीर में सूजन को कम करने और कुछ गंभीर बीमारियों के खतरे को घटाने में मदद कर सकते हैं.

* शलजम कैसे खाएं - विशेषज्ञों का कहना है कि शलजम को सब्जी, सूप या सलाद के रूप में आहार में शामिल किया जा सकता है लेकिन इसका सेवन संतुलित मात्रा में ही करना चाहिए।

* जरूरत से ज्यादा सेवन करने पर कुछ लोगों को पेट से जुड़ी परेशानियां हो सकती हैं।

चिलगोजा / नियोजा

कीमत और पौष्टिकता दोनों में काजू से श्रेष्ठ यह ड्राई फूड वाकई में बेमिसाल है।

चिलगोजा एक ऐसा ड्राई फ्रूट है जिसके फायदों के बारे में शायद ही आपने इससे पहले सुना होगा ! हिमाचल प्रदेश का एक प्यारा सा शहर है किन्नौर ! यही पाये जाते है चिलगोजा के पेड़ ! खासकर टापरी से लेकर पूह तक केवल सतलुज नदी के किनारे ही पाया जाता है। किन्नौर के अलावा भारत में कश्मीर के छोटे से हिस्से में भी चिलगोजा पाया जाता है। उधर नेपाल, अफगानिस्तान और चीन में भी कुछ सीमित क्षेत्रों में चिलगोजा पाया जाता है।

किन्नौर में नेयोजा के नाम से मशहूर चिलगोजा को किन्नौर में नेयोजा के नाम से जाना जाता है। पाइन नट्स नाम का यह पेड़ चीड़ के पेड़ से मिलता जुलता है।

चिलगोजा के पेड़ का तना सफेद होता है जबकि चीड़ की तरह ही इसके कोन्स होते हैं जिसमें बीज लगते है। ऊंची चट्टानों, पहाड़ों और पत्थरों के बीच बड़े पेड़ों से इन कोन्स को निकालना आसान नहीं होता। काफी मेहनत के बाद निकले चिलगोजे को मार्किट में खरीदने के लिए व्यवसायी दूर--दूर से किन्नौर के मुख्यालय रिकांगपिओगो पहुंचते हैं। चिलगोजा भारतीय बाजार में ही 2 हजार रूपये प्रति किलोग्राम से कीमत में बिकता है।

चिलागोजा की वैज्ञानिक खेती नहीं हो पाई संभवः- चिलगोजा की वैज्ञानिक खेती अभी तक संभव नहीं हो पाई है। वन विभाग और बागवानी विभाग इसकी अन्यत्र खेती के प्रयास में जुटा है लेकिन अब तक यह संभव नहीं हो पाया है।

किन्नौर के इस क्षेत्र में भी हर साल हजारों नए पौधे रोपे जा रहे हैं, लेकिन उम्मीद के अनुरूप कम ही पौधे टिक पाते हैं। जानकारों का कहना है कि यदि इस पेड़ का वैज्ञानिक दोहन न हुआ और इसके संरक्षण पर विशेष ध्यान ना दिया गया तो औषधीय तत्वों से भरपूर यह चिलगोजा विलुप्त हो सकता है।

चिलगोजा के फायदे स्वास्थ्य संबंधित कई फायदे शामिल हैं, जो चिलगोजा खाने के फायदे के महत्व को दर्शाते हैं।

मधुमेह मेंः- मधुमेह जैसी बीमारी में खान-पान का विशेष ध्यान देना पड़ता है, लेकिन यदि आप चिलगोजा का सेवन कर रहे हैं तो निश्चिन्त रहिये क्योंकि और इसमें मौजूद पोषक तत्वों से मधुमेह की समस्या में होने वाले खतरों को कई गुना तक कम किया जा सकता हैं।

1. एक वैज्ञानिक शोध के मुताबिक पाइन नट्स के प्रयोग से सीरम कोलेस्ट्रॉल के स्तर में कमी देखी गई। चिलगोजा में कैल्शियम, पोटैशियम और मैग्नेशियम जैसे मिनरल्स मौजूद होते हैं।

2. एक अन्य वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार यह पाया गया कि उपरोक्त तत्वों वाले नट का सेवन अगर किया जाए तो यह डायबिटीज के खतरे को कम कर सकते हैं ।।

हृदय स्वास्थ्य मेंः- चिलगोजा खाने का तरीका, हृदय स्वास्थ्य में भी लाभदायक हो सकता है। चिलगोजा एक नट है और

1. एक वैज्ञानिक शौध के अनुसार नट पदार्थों का सेवन करने से हृदय संबंधित बीमारियों का खतरा कम हो सकता है ।

2. एक अन्य अध्ययन की मानें तो पाइन नट्स के अंदर मौजूद पोषक तत्व हृदय संबंधी कई रोगों में कमी देखी गई। चिलगोजा में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने का गुण मौजूद होते हैं।

3. एक वैज्ञानिक शोध के अनुसार चिलगोजा में मौजूद पॉली अनसैचुरेटेड फैट कोलेस्ट्रॉल को कम कर हृदय रोगों से सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं

कोलेस्ट्रॉल के लिएः- चिलगोजा खाने का तरीकाः- इस्तेमाल कर कोलेस्ट्रॉल को संतुलित किया जा सकता है, क्योंकि चिलगोजा में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बिल्कुल भी नहीं होती है और यही वजह है कि चिलगोजा का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल में बढोत्तरी होने का खतरा कम हो सकता है

वजन संतुलित करने मेंः- वजन नियंत्रित रखने में भी चिलगोजा खाने के फायदे देखे जा सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक शोध के मुताबिक चिलगोजा से बने हुए तेल का सेवन वजन घटाने में अहम भूमिका निभा सकता है। दरअसल, चिलगोजा में पिनोलेनिक एसिड मौजूद होता है और यह 14 से 19 प्रतिशत फैटी एसिड को प्रदर्शित करता है। यह एसिड भूख को नियंत्रित कर वजन को कम करने में मदद कर सकता है ।

2. एक अन्य वैज्ञानिक शोध के मुताबिक भी यह कहा गया है कि रोजाना नट पदार्थों के सेवन से वजन घटाने में मदद मिल सकती है

कैंसर मेंः- चिलगोजे के फायदे कैंसर जैसी गंभीर बिमारी में भी देखने को मिल सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक शोध के अनुसार, कैंसर जैसी बीमारी से बचने के लिए नट पदार्थों का सेवन लाभदायक हो सकता है । शोध के अनुसार, पाइन नट्स में रेस्वेराट्रोल नमक एंटीऑक्सीडेंट मौजूद होता है, जो कैंसर के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है। वहीं, पाइन नट्स में उपस्थित फोलिक एसिड डीएनए (DNA) की क्षति को कम कर सकता है

मस्तिष्क स्वास्थ्य मेंः- मस्तिष्क स्वास्थ्य में चिलगोजा खाने के फायदे प्रभावकारी रूप में देखे जा सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार चिलगोजा में ओमेगा-3 एसिड पाया जाता है, जो मस्तिष्क की कोशिकाओं को बेहतरीन रूप से चलाने के लिए उपयोगी माना जाता है। चिलगोजा खाने से ओमेगा- 3 फैटी एसिड्स मस्तिष्क के बेहतरीन संचालन, याददाश्त को मजबूत बनाने का काम कर सकता है ।।

हड्डियों के लिएः- चिलगोजा खाने के फायदे हड्डियों की मजबूती के लिए भी देखे जा सकते हैं, क्योंकि चिलगोजा में मौजूद फैटी एसिड हड्डियों के विकास और मजबूती में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार चिलगोजा में पाया जाने वाला ओमेगा-6 फैटी एसिड्स हड्डियों को स्वस्थ रखने के साथ – साथ गठिया जैसे रोग में भी आराम पहुंचा सकता है ।। इसके अलावा चिलगोजे के फायदे में कैल्शियम भी शामिल है जो हड्डियों की मजबूती और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिएः- प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए भी चिलगोजा का प्रयोग किया जा सकता है।

1. एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार चिलगोजे में जिंक मौजूद होता है, जो प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने का काम करता है ।।

आंखों की देखभाल के लिएः- चिलगोजे के फायदे में आंखों की देखभाल भी शामिल हो सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक शोध के मुताबिक आंखों की देखभाल के लिए अगर आप चिलगोजा का सेवन कर रहे हैं, तो इसमें मौजूद ओमेगा-3 आपकी आंखों की मदद कर सकता है। यह आपकी आंखों की नाईट विजन (दृष्टि) और कलर विजन की क्षमता का विकास कर सकता है । इसके अलावा चिलगोजा में विटामिन- ए भी पाया जाता है, जो आंखों की रेटिना में रंजक (आंखों को विभिन्न रंगों को पहचानने की क्षमता) का विकास करता है । इसलिए आंखों की देखभाल के लिए चिलगोजा का प्रयोग किया जा सकता है।

एंटीऑक्सीडेंट के तौर परः- एंटीऑक्सिडेंट्स हमारी कोशिकाओं को नुकसान पहुंचने से बचाते हैं। अगर आप चिलगोजा का सेवन कर रहे हैं तो निश्चिंत हो जाइए, क्योंकि चिलगोजे में एंटीऑक्सीडेंट्स (विटामिन ए, विटामिन सी और विटामिन ई) भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं ।।

भूख नियंत्रित रखने मेंः- वजन को संतुलित रखने के लिए भी चिलगोजा खाने के फायदे देखे जा सकते हैं। जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं कि चिलगोजे में पिनोलेनिक नामक फैटी एसिड पाया जाता है, जो भूख को नियंत्रित करने का काम कर सकता है। इसके अलावा एक

1. वैज्ञानिक शोध में देखा गया है, कि पाइन नट दो खास हार्मोन सीसीके और जीएलपी-1 को बढ़ाने का काम करता है, जो भूख को नियंत्रित करने का काम कर सकते हैं।।

त्वचा के लिएः- त्वचा के लिए भी चिलगोजे के फायदे आपको लाभ पहुंचा सकते हैं।

1. एक वैज्ञानिक अध्ययन के मुताबिक चिलगोजा का इस्तेमाल त्वचा के लिए फायदेमंद हो सकता है, क्योंकि यह विटामिन-सी (एस्कॉर्बिक एसिड) का अच्छा स्रोत होता है। विटामिन सी एक एंटीऑक्सीडेंट्स है, जो सूर्य की हानिकारक किरणों से त्वचा की रक्षा करता है। साथ ही विटामिन सी त्वचा में कोलेजन को बढ़ाता है और एजिंग को कम करता है। इसके अलावा चिलगोजे में मौजूद मैंगनीज त्वचा को मुक्त कणों (Free Radicals) से दूर रखने का काम भी कर सकता है।

बालों के स्वास्थ्य के लिएः- बालों के स्वास्थ्य के लिए भी चिलगोजा खाने के फायदे देखे जा सकते हैं। चिलगोजे में पाया जाने वाला ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी एसिड बालों के विकास के लिए उपयोगी हो सकता है ।।

1. एक वैज्ञानिक अध्ययन के अनुसार, ओमेगा-6 फैटी एसिड बालों को झड़ने से रोकने में मदद करता है और बालों को घना बनाने में भी सहयोग कर सकता है ।

क्या कब्ज की समस्या बन सकती है कैंसर? जानें डॉक्टरों ने क्यों बताया इसे खतरनाक

कब्ज होना आम बात है, बहुत से लोगों को यह समस्या होती है। लोग इसकी ठीक करने के लिए चूर्ण से लेकर दवाओं तक का सहारा लेते हैं। कई मामलों में ये इससे ठीक भी हो जाता है, लेकिन अगर लंबे समय तक बना रहे तो सेहत के लिए खतरा हो सकता है। लेकिन क्या कब्ज कोलन कैंसर का कारण भी बन सकता है? इस बारे में कैंसर विशेषज्ञ से जानते हैं, कब्ज होता है जब आतों में से मल सही तरीके से नहीं निकलता है। खानपान की गलत आदतें, पानी की कमी और खाने में फाइबर न लेने से कब्ज की समस्या होती है। कब्ज हो जाए और लंबे समय तक रहे तो बीमार भी करता है।

कब्ज लंबे समय तक रहे तो ये बवासीर समेत कई बीमारियों का कारण बनता है, हालांकि अगर यह कुछ दिनों में ठीक हो जाए तो कोई खतरा नहीं, लेकिन अगर कब्ज महीनों या वर्षों तक बनी रहे, तो यह खतरनाक हो सकता है।

लगातार कब्ज रहने पर मल आंतों से निकलता नहीं है और इससे आंतों की परत पर सूजन हो सकती है। यह सूजन पॉलीप्स बनाती है, जो कुछ मामलों में आगे चलकर आंतों का कैंसर बन सकता है।

अगर किसी व्यक्ति को लंबे समय से कब्ज की समस्या है जैसे 5 से 6 महीने बीत गए हैं और आराम नहीं मिल रहा है तो इससे बवासीर, फिशर जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं, जो समय के साथ गंभीर रूप ले सकती हैं, हालांकि यह हर मामले में कैंसर नहीं बनती है, लेकिन फिर भी रिस्क रहता है। इसके कुछ लक्षण भी दिखते हैं जिनको नजरअंदाज नहीं करना चाहिए

कैंसर के शुरुआती लक्षण

* अचानक वजन कम होना
* पेट में दर्द बने रहना
* भूख कम होना
* हमेशा थकान बने रहना

कब्ज से बचाव के लिए क्या करें

* रोज कम से कम 7 गिलास पानी जरूर पीएं
* खाने में फल शामिल करें खासतौर पर सेब और संतरा
* रोज एक्सरसाइज करें
* अगर कब्ज की समस्या है तो डॉक्टर से सलाह लें।

पानी कब पिए, आयुर्वेदिक उपाय

पिंकी कुंडू

पानी केवल प्यास बुझाने का माध्यम नहीं है; आयुर्वेद में इसे शरीर की अग्नि और ओज के सूक्ष्म संतुलन का आधार माना गया है। जब जल सही समय, सही मात्रा और उचित विधि से ग्रहण किया जाता है, तब वह पाचन को सहारा देता है, शरीर में हल्कापन लाता है और आंतरिक व्यवस्था को सहज बनाए रखता है।

इसी कारण आयुर्वेद में जल को औषधि के समान महत्व दिया गया है, जहाँ उसका काल ही उसकी शक्ति निर्धारित करता है।

यदि जल का सेवन समय की उपेक्षा करके किया जाए, तो वही शुद्ध जल भी जठराग्नि को मंद कर सकता है और धीरे-धीरे असंतुलन का कारण बन सकता है।

आयुर्वेद निषेध नहीं, बल्कि विवेक सिखाता है—कब पीना है, कितना पीना है और कैसे पीना है। यही समय-सिद्ध समझ स्वास्थ्य को एक साधारण आदत से ऊपर उठाकर जीवन की गरिमामयी शैली में परिवर्तित करती है।

क्या एक कप पेय रक्त प्रवाह सुधार सकता है? — विज्ञान क्या कहता है

कुछ प्राकृतिक पेय, विशेषकर चुकंदर का रस, नियमित सेवन पर रक्त प्रवाह को सहारा दे सकते हैं।

चुकंदर कैसे काम करता है (वैज्ञानिक कारण) चुकंदर में नाइट्रेट्स होते हैं, जो शरीर में बदलकर नाइट्रिक ऑक्साइड बनते हैं।

नाइट्रिक ऑक्साइडः

1. रक्त नलिकाओं को फैलाता है
2. रक्तवाहिकाओं की कार्यक्षमता सुधारता है

3. कुछ लोगों में हल्का रक्तचाप कम कर सकता है

मानव अध्ययनों में पाया गया है कि चुकंदर का रस रक्त वाहिकाओं के कार्य में सुधार करता है।

जो बातें वैज्ञानिक रूप से सही हैं

1. रक्त वाहिकाओं की लचक बढ़ती है
2. रक्त प्रवाह बेहतर होता है
3. प्रभाव धीरे-धीरे और नियमित सेवन से होता है

सावधानियाँः- किडनी स्टोन वालों को सावधानी BP या हृदय की दवा लेने वाले पहले डॉक्टर से सलाह लें।

निष्कर्ष चुकंदर का रस रक्त प्रवाह के लिए सहायक है, पर इलाज नहीं। यह एक निवारक और सहायक उपाय है, जो सही आहार और जीवनशैली के साथ ही प्रभावी होता है।

एरोबिक व्यायाम (Aerobic Exercise)

एरोबिक व्यायाम (Aerobic Exercise) — जिसे आमतौर पर कार्डियो कहा जाता है*— में तेज़ चाल से चलना, जॉगिंग, साइकिल चलाना, तैराकी, नृत्य, रस्सी कूदना आदि गतिविधियाँ शामिल हैं।

जब इसे नियमित रूप से किया जाता है, तो यह शरीर, मस्तिष्क और दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत व्यापक लाभ प्रदान करता है।

एरोबिक व्यायाम के लाभ

1. हृदय और फेफड़ों के स्वास्थ्य में सुधार
* हृदय की मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं
* रक्त संचार और ऑक्सीजन की आपूर्ति बेहतर होती है
* आराम की अवस्था में हृदय गति और रक्तचाप कम होता है
* हार्ट अटैक और स्ट्रोक का जोखिम घटता है

2. कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर नियंत्रण में सहायक
* अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) में वृद्धि
* खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) और ट्राइग्लिसराइड्स में कमी
* इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार
* टाइप-2 डायबिटीज़ की रोकथाम और नियंत्रण में मदद

3. वज़न घटाने और चर्बी कम करने में सहायक
* कैलोरी का प्रभावी दहन
* पेट के अंदर जमा खतरनाक (विसरल) फैट में कमी
* नियमित अभ्यास से मेटाबॉलिज़्म तेज़ होता है

4. मस्तिष्क कार्यक्षमता और मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि
* स्मरण शक्ति, एकाग्रता और सीखने की क्षमता में सुधार
* तनाव, चिंता और अवसाद में कमी
* एंडॉर्फिन (खुशी देने वाले हार्मोन) का स्राव
* नींद की गुणवत्ता में सुधार

5. सहनशक्ति और ऊर्जा स्तर में बढ़ोतरी
* दैनिक कार्यों में थकान कम होती है
* शारीरिक स्टैमिना बढ़ता है
* काम और खेल प्रदर्शन में सुधार

6. हड्डियों और जोड़ों को मज़बूती
* वज़न वहन करने वाले एरोबिक व्यायाम (चलना, जॉगिंग, नृत्य) हड्डियों को मजबूत करते हैं
* ऑस्टियोपोरोसिस का खतरा कम होता है
* जोड़ों की गतिशीलता और लचीलापन बढ़ता है

7. रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार
* इम्यून कोशिकाओं का संचार बेहतर होता है
* नियमित व संतुलित अभ्यास से सामान्य संक्रमणों की आवृत्ति घटती है

8. दीर्घकालिक रोगों के जोखिम में कमी
नियमित एरोबिक व्यायाम निम्न रोगों का खतरा कम करता हैः
* हृदय रोग
* उच्च रक्तचाप
* स्ट्रोक
* मोटापा
* कुछ प्रकार के कैंसर
* फैटी लिवर रोग

9. हर आयु वर्ग के लिए लाभकारी
* बच्चेः विकास, फिटनेस, एकाग्रता और मेटाबॉलिज़्म में सुधार
* वयस्कः जीवनशैली जनित रोगों से बचाव
* वृद्धः संतुलन, आत्मनिर्भरता और दीर्घायु में वृद्धि

कितना व्यायाम पर्याप्त है?
* वयस्कः प्रति सप्ताह कम से कम 150 मिनट मध्यम तीव्रता का एरोबिक व्यायाम (जैसे—30 मिनट प्रतिदिन, सप्ताह में 5 दिन)
* बच्चेः प्रतिदिन कम से कम 60 मिनट सरल उदाहरण
* तेज़ चाल से चलना
* साइकिल चलाना
* तैराकी
* जॉगिंग
* रस्सी कूदना
* नृत्य
* सीढ़ियाँ चढ़ना

संक्षेप में:- एरोबिक व्यायाम प्रकृति की सबसे प्रभावशाली औषधियों में से एक है— जो हृदय स्वास्थ्य, मेटाबॉलिज़्म, मानसिक संतुलन और आयु को बेहतर बनाता है। यहाँ तीव्रता से अधिक निरंतरता मायने रखती है।

हनुमत साधना --- दुर्लभ प्राचीन विचित्र वीर हनुमान यंत्र दर्शन करने मात्र से ही सारे संकट मिट जाते हैं

पिंकी कुंडू

श्रीविचित्रवीर हनुमन्-मालामन्त्र यह दिव्य प्रभाव से परिपूर्ण है। इससे सभी प्रकार की बाधा, पीड़ा, दुःख का निवारण हो जाता है। शत्रु-विजय हेतु यह अनुपम अमोघ शस्त्र है। पहले प्रतिदिन इस माला मन्त्र के ११०० पाठ १० दिनों तक कर, दशांश गुग्गुल से 'हवन' करके सिद्ध कर ले। फिर आवश्यकतानुसार एक बार पाठ करने पर 'श्रीहनुमानजी' रक्षा करते हैं।

सामान्य लोग प्रतिदिन केवल ११ बार पाठ करके ही अपनी कामना की पूर्ति कर सकते हैं। विनियोग, ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, ध्यान का पाठ पहली और अन्तिम आवृत्ति में करे।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीविचित्र-वीर-हनुमन्माला मन्त्रस्य श्रीरामचन्द्रो भगवान्-ऋषिः। अनुष्टुप छन्दः। श्रीविचित्र-वीर-हनुमान्-देवता। ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे माला-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

श्रीरामचन्द्रो भगवान्-ऋषये नमः शिरसि।

अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।

श्रीविचित्र-वीर-हनुमान्-देवतायै नमः हृदि। ममाभीष्ट-सिद्धयर्थे माला-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

षडङ्गन्यासः-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः)।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं)।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः (नेत्र-त्रयाय वौषट्)।

ॐ ह्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्राय फट्)।

ध्यानः- वामे करे वैर-वहं वहन्तम्, शैलं परे श्रृखला-मालयाढ्यम्।
दधानमाध्मातमुग्र-वर्णम्, भजे ज्वलत्-कुण्डलमाञ्नेयम्।।

माला-मन्त्रः-

"ॐ नमो भगवते, विचित्रवीर-हनुमते, प्रलय-कालानल-प्रभा-ज्वलत्-प्रताप-वज्रदेहाय, अञ्जनीगर्भ-सम्भूताय, प्रकट-विक्रमवीर- दैत्य-दानव-यक्ष-राक्षस-ग्रह-बन्धनाय, भूतग्रह, प्रेतग्रह, पिशाचग्रह, शाकिनीग्रह, डाकिनीग्रह, काकिनीग्रह, कामिनीग्रह, ब्रह्मग्रह, ब्रह्मराक्षस-ग्रह, चोर-ग्रह बन्धनाय, एहि एहि, आगच्छागच्छ, आवेशयावेशय, मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय, स्फुट स्फुट, प्रस्फुट प्रस्फुट, सत्यं कथय कथय, व्याघ्रमुखं बन्धय बन्धय, सर्पमुखं बन्धय बन्धय, राजमुखं बन्धय बन्धय, सभामुखं बन्धय बन्धय, शत्रुमुखं बन्धय बन्धय, सर्वमुखं बन्धय बन्धय, लंका-प्रासाद-भञ्जक। सर्वजनं मे वशमानय, श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वानाकर्षयाकर्षय, शत्रून्-मर्दय मर्दय, मारय मारय, चूर्णय चूर्णय, खे खे श्रीरामचन्द्राज्ञया प्रज्ञया मम कार्य-सिद्धिं कुरु कुरु, मम शत्रून्-भस्मी कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः फट् श्रीविचित्रवीर-हनुमते। मम सर्व-शत्रून्-भस्मी-कुरु कुरु, हन हन, हुं फट् स्वाहा।।"

(प्रति-दिनमेकादश-वारं जपेत्। पूर्व-न्यास-ध्यान-पूर्वकं निवेदयेत्)

1 श्रीहनुमान माला मंत्र1

ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रस्फें ख्रें ह्स्त्रौं ह्रस्ख्रें ह्स्त्रौं

ॐ नमो भगवते प्रकटपराक्रमाय आक्रान्त दिङ्मण्डल यशोवितान धवलीकृतजगत्त्रितय वज्रदेह ज्वलदग्नि सूर्यकोटि सम्प्रभतनुरूह रुद्रावतार लंकापुरी दहनोदधिलंघन दशग्रीवशिरः कृतान्तक सीताश्वासन वायुसुत अंजनगर्भसंभूत श्रीरामलक्ष्मणान्दकर कपिसैन्यप्राकारा सुग्रीवसख्यकारण बालिनिर्बहणकारण द्रोणपर्वतोत्पाटन अशोकवनविदारण अक्षयकुमारच्छेदन वनरक्षाकरसमूह विभंजन ब्रह्मास्त्रब्रह्मशक्तिग्रसन लक्ष्मणशक्तिभेदनिवारण विशल्यौषधि समानयन बालोदितभानुमण्डलग्रसन मेघनादहोमविध्वंसन इन्द्रजिद्धकारण सीतारक्षक राक्षसीसंघविदारण कुम्भकर्णादिवधपरायण श्रीरामभक्तितत्पर समुद्रव्योमद्रुमलंघन महासामर्थ्य महातेजःपुंजविराजमान स्वामिवचनसंपादित अर्जुनसंयुगसहाय कुमारब्रह्मचारिन गम्भीरशब्दोदय दक्षिणाशामार्तण्ड मेरूपर्वत पीठिकार्चन सकलमंत्रगमाचार्य मम सर्वग्रहविनाशन सर्वज्वरोच्चाटन सर्वविषविनाशन सर्वापत्तिनिवारण सर्वदुष्टनिबर्हण सर्वव्याघ्रादिभयनिवारण सर्वशत्रुच्छेदन मम परस्य च त्रिभुवन पुंस्त्रीनपुंसकात्मक सर्वजीवजातं वश्य वश्य मम आज्ञाकारकं संपादय संपादय नाना नाम धेयान्-सर्वान्-राज्ञः सपरिवान्-मम सेवकान्-कुरु कुरु सर्वशस्त्रास्त्र विषाणि विध्वंशय विध्वंसय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रां ह्रां एहि एहि ह्रसौं ह्रस्ख्रें ह्रस्त्रौं ख्रें ह्रस्फें सर्वशत्रून्-हन हन परदलानि परसैन्यानि क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्य जातं साधय साधय सर्वदुष्ट-दुर्जनमुखानि कीलय कीलय घे घे घे हा हा हा हुं हुं हुं फट् फट् फट् स्वाहा।।

ॐ अस्य श्रीहनुमत कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः।

अनुष्टुप्छन्दः।

श्रीमहावीरो हनुमान देवता।

मारुतात्मज इति बीजम्।।

ॐ अञ्जनीसूनुरिति शक्तिः।

ॐ ह्रैं ह्रां ह्रौं इति कवचम्।

स्वाहा इति कीलकम्।

लक्ष्मणप्राणदाता इति बीजम्।

मम सकल कार्यसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यासः

करन्यासः-

ॐह्रां, ॐह्रीं, ॐ ह्रूं, ॐ ह्रैं, ॐ ह्रौं, ॐ ह्रः।।

हृदयान्यासः-

ॐ अञ्जनीसुनवे हृदयाय नमः

ॐ रूद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा।

ॐ वायुसुतात्मने शिखायै वषट्।

ॐ वज्रदेहाय कवचाय हुम्। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय अस्त्राय फट्।।

ॐ रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमही

तन्नो हनुमान्-प्रचोदयात् ॐ हुं फट् स्वाहा।। इति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्।।

ॐ

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।

ॐ ह्रीं ह्रौं ॐ नमो भगवते महाबलपराक्रमाय भूतप्रेतपिशाच शाकिनी डाकिनी यक्षिणी पूतनामारी महामारी भैरव यक्ष वेताल राक्षस ग्रहराक्षसादिकं क्षणेन हन हन भञ्जय भञ्जय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामाहेश्वर रुद्रावतार हुं फट् स्वाहा। ॐ नमो हनुमदाख्याय रूद्राय सर्वदुष्टजनमुखस्तंभनं कुरू कुरू ह्रां ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवते अञ्जनीगर्भसम्भूताय रामलक्ष्मणानन्दकराय कपिसैन्यप्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाधकाय रणोच्चाटनाय कुमारब्रह्मचारिणे गम्भीरशब्दोदयाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं सर्वदुष्टनिवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहानुभूतभविष्यद्वर्तमानान दूरस्थान समीपस्थान-सर्वकालदुष्टदुर्बुद्धीनुच्चाटयोच्चाटय परबलानि

क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्यं साधय साधय हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् देहि। ॐ शिवं सिद्धं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते परकृतान्-तन्त्रमन्त्रपराहङ्कारभूतप्रेतपिशाच परदृष्टिसर्वविघ्नदुर्जनचेटकविधान्-सर्वग्रहान्-निवारय निवारय

वध वध पच पच दल दल किल किल सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं फट् स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि एहि सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां विषं दुष्टानां सर्वविषयान्-आकर्षय आकर्षय मर्दय मर्दय भेदय भेदय मृत्युमुत्पाटयोत्पाटय शोषय शोषय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल भूतमण्डलं प्रेतमण्डलं पिशाचमण्डलं निरासय निरासय भूतज्वर प्रेतज्वर चातुर्थिकज्वर विषमज्वर माहेश्वरज्वरान्-छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि अक्षिशूल-वक्षःशूल-शरोभ्यन्तरशूल-गुल्मशूल-पित्तशूल-ब्रह्मराक्षसकुल-परकुल-नागकुल-विषं नाशय नाशय निर्विषं कुरू कुरू फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं सर्वदुष्टग्रहान्-निवारय फट् स्वाहा। ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरमुखाय हन हन पापदृष्टिं षण्ढदृष्टिं हन हन हनुमदाज्ञया स्फुर स्फुर फट् स्वाहा।

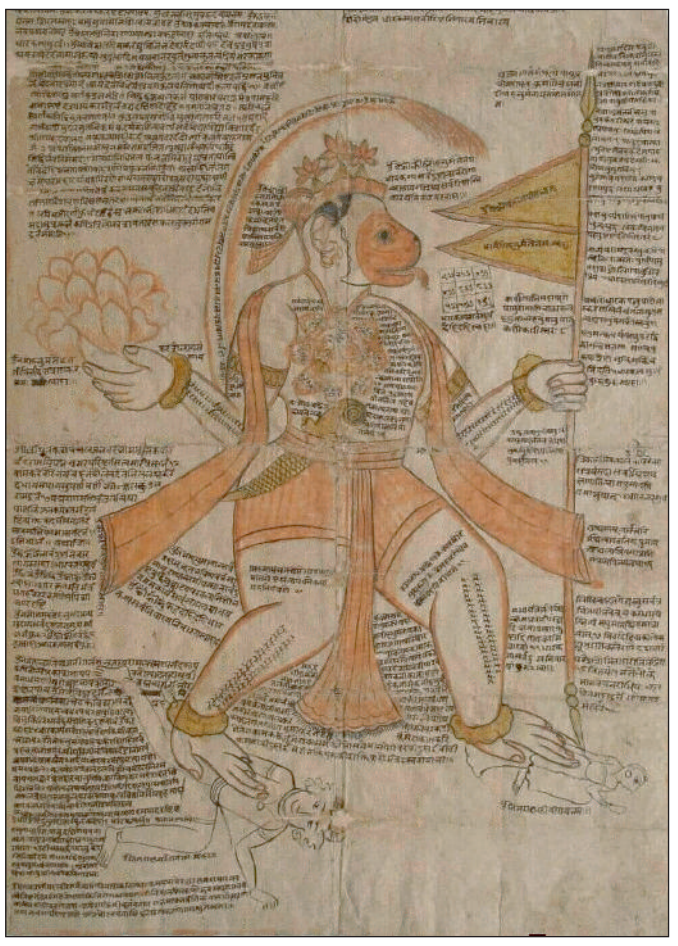

श्रीराम उवाच

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः। प्रतीच्यां पातु रक्षोघ्न उत्तरस्यामब्धिपारगः।।1

उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरीप्रियनन्दनः। अधश्च विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः।2

अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः। लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम्।।3।

सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकम् वायुनन्दनः। भालं पातु महावीरो भ्रुवोमध्ये निरन्तरम्।।4

नेत्रे छायाऽपहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः। कपोलेकर्णमूले तु पातु श्रीरामकिङ्करः।।5

नासाग्रे अञ्जनीसूनुर्वक्त्रं पातु हरीश्वरः। वाचं रूद्रप्रियः पातु जिह्वां पिङ्गललोचनः।।6

पातु दन्तान्-फाल्गुनेष्टश्चिबुकं दैत्यप्राणहृत। ओष्ठं रामप्रियः पातु चिबुकं दैत्यकोटिहृत।।7

पातु कण्ठं च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः। भुजौ पातु महातेजाः करौ तु चरणायुधः।।8

नखन्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः। वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः।।9

लंकाविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्। नाभिञ्च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः।।10

गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सृक्किणी च शिवप्रियः। ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः।।11

जङ्घे पातु महाबाहुर्गुल्फौ पातु महाबलः। अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसन्निभः।।12

पादान्ते सर्वसत्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीस्तथा। सर्वाङ्गानि महावीरः पातु रोमाणि चात्मवान्।।13

हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान विचाक्षणः। स एव पुरूषश्रेष्ठो भक्तिं मुक्तिं च विन्दति।।14

त्रिकालमेककालं वा पठेन्मासत्रयं सदा। सर्वान्-रिपून्-क्षणे जित्वा स पुमान्-श्रियमाप्नुयात्15

आर्किवारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पठति यः पुमान्। अचलां श्रियमाप्नोति सङ्ग्रामे विजयी भवेत्।16।

हनुमान उवाच

राम स्तुति।

नमो रामाय विष्णवे प्रभविष्णवे। आदि देवाय पुराणाय गदाभृते।।1।।

विष्टरे पुष्पके नित्यं निविष्ठाय महात्मने। प्रहष्ठवानरानीकजुष्ठ पदाम्बुजाय ते।2।

निष्पिष्ठ राक्षसेन्द्राय जगदिष्ठ विधायिने। नमः सहस्रशिरसे सहस्रचरणाय च।।3।।

सहस्राक्षाय शुद्धाय राघवाय च विष्णवे। भक्तार्तिहरणे तुभ्यं सीताया पतये नमः।।4।।

हरये नारसिंहाय दैत्यराजाय विदारिणे। नमस्तुभ्यं वराहाय दंष्टोद्धत वसुंधर।5।।

त्रिविक्रमाय भवते बलियज्ञबिभेदिने। नमो वामन रूपाय महामन्दधारिणे।।6।।

नमस्ते मत्स्य रूपाय त्रयीपालन कारिणे। नमः परशुरामाय क्षत्रीयान्तकराय ते।।7।।

नमस्ते राक्षसघ्नाय नमो राघव रूपिणे। महादेवाय भीमाय महाकोदण्ड भेदिने।8।

क्षत्रियान्तकरक्रूरभार्गवत्रासकारिणे। नमोऽस्त्वहल्यासंतापहारिणे चापहारिणे।9।

नागायुतबलेपेततातका देहधारिणे। शिला कठिन विस्तार बालिवक्षोविभेदिने।10।

नमो माया मृगोन्माथकारिणेऽज्ञानहारिणे। दशस्यनंदन दुःखाब्धिशोषणागस्त्य रूपिणे।11।।

अनेकोर्मितमाधूत समुद्रमदहारिणे। मैथिली मान साम्भोजभानवे लोकसाक्षिणे।12।

राजेन्द्राय नमस्तुभ्यं जानकी पतये हरे। तारक ब्रह्मणे तुभ्यं नमो राजीवलोचन।।13।

रामाय रामचन्द्राय वरेण्याय सुखात्मने। विश्वामित्रप्रियायेदं नमः खर विदारिणे।14।।

प्रसीद देवदेवेश भक्तनाम भयप्रद। रक्ष मां करुणासिन्धो रामचन्द्र नमोस्तुते ते।15।

रक्ष मां वेद वच सामप्यगोचर राघव। पाहि मां कृपया राम शरणं त्वामुपैम्हम।16।

रघुवीर महामोहमया कुरू ममाधुना। स्नाने चाचमने भुक्तौ जाग्रत स्वप्नसुषुप्तिसु।17।

सर्वावस्थासु सर्वत्र पाहि मां रघुनंदन। महिमानं तव स्तोतुं कः समर्थो जगत्त्रये।18।

त्वमेव त्वन्महत्वं वै जानसि रघुनंदन।....स्तुत्वा वायुपुत्रो रामचन्द्र घृणानिधिम।19।

सीता स्तुति।

सीतामप्यभितुष्टाय भक्तियुक्तेन चेतसा। जानकी त्वां नमस्यामि सर्व पाप प्रणाशिनीम।।1।।

दारिद्रयार्णवसंहर्त्री भक्तानाभिष्टदायनीम। विदेहराजतनयां राघवानन्दकारिणीम्।।2।।

भूमेर्दुहितरं विद्यां नमामि प्रकृतिं शिवाम्। पौलस्त्यैश्वर्यसंहर्त्री भक्ताभीष्टां सरस्वतीं।3।।

पतिव्रताधुरीणां त्वां नमामि जनकात्मजां। अनुग्रह परामृद्धिमनघां हरिवल्लभां।।4।।

आत्मविद्या त्रयीरूपा भुमारूपा नमाम्यहम्। प्रसादाभिमुखीं लक्ष्मीं क्षीराब्धितनयां शुभाम्।5।

नमामि चन्द्रभगिनीं सीतां सर्वाङ्गसुन्दरीम्। नमामि धर्मनिलयां करूणां वेदमातरम्।6।

पद्ममाल्यां पद्महस्तां विष्णुवक्षःस्थललालयाम्। नमामि चन्द्रनिलयां सीतां चन्द्र निभाननाम्।7।

आह्लादरूपिणीं सिद्धिं शिवां शिवकरीं सतीं। नमामि विश्वजननीं रामचन्द्रेष्टवल्लभाम्।8।

सीता सर्वानवद्यांङ्गी भजामि सततं हृदा।

श्री सूत उवाचः-

स्तुत्वैवं हनुमान सीतारामचन्द्रौ सभक्तिकम्। आनन्दाश्रुपरिक्लन्नस्तूष्णीमास्ते द्विजोत्तमाः।।1

या इदं वायुपुत्रेण कथितं पापनाशनम्। स्त्रोत्रं श्री रामचन्द्रस्य सीतायां पठतेऽन्वहम्।।2

स नरो महदैश्वर्यमश्नुते वांञ्छितं सदा। अनेकक्षेत्रधान्यानि गाश्च दोग्ध्रीः पयस्वनी।।3

आयुर्विद्याश्च पुत्रांश्च भार्यामपि मनोरमाम् एतस्तोत्रं सकृद विप्रा पठन्नप्नोत्य संशयः।।4

एतस्तोत्रस्य पाठेन नरकं नैव पश्यति। ब्रम्हहत्यादिपापानि नश्यन्ति सुमहान्त्यपि।।5।

श्री हनुमत्प्रोक्तं मन्त्रराजात्मक रामस्तव

तिरश्चामपि चारातिसमवायं समेयुषाम। यतः सुग्रीवमुख्यानां यस्तमुग्रं नमाम्यहम्।।1।।

सकृदेव प्रपन्नाय विशिष्टामैरयच्छियम्। विभीषणायाब्धितटे यस्तं वीरं नमाम्यहम्।।2।।

यो महान पूजितो व्यापी महानवै करुणामृतं। श्रुतं येन जटायोश्च महाविष्णुं नमाम्यहम्।।3।।

तेजसाप्यायिता यस्य ज्वलन्ति ज्वलनादयः। प्रकाशते स्वतंन्त्रो यस्तं ज्वलन्तं नमाम्यहम्।।4।।

सर्वतोमुखता येन लीलया दर्शिता रणे। रक्षसां खरमुख्यानां तं वन्दे सर्वतोमुखम्।।5।।

नृभावं यः प्रपन्नानाहिनस्ति च तथा नृषु। सिंहः सत्वेष्निवोत्कृष्टस्तं नृसिंहं नमाम्यहम्।।6।।

यस्माद्बिभ्यति वातार्कज्वलनेन्द्राः समृत्यवः। भियं तनोति पापानां भीषणं तं नमाम्यहम्।।7।।

परस्य योग्यतापेक्षाशहितो नित्यमंगलम्। ददात्येव निजौदार्याद्यस्तं भद्रं तं नमाम्यहम्।।8।।

यो मृत्युं निजदासानां नाशयत्यखिलेष्टदः। तत्रोदाहृतये व्याधो मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्।।9।।

यस्यपादपदमप्रणतौ भगत्युत्तमपुरूषः। तमजं सर्वदेवानां नमनीयं नमाम्यहम्।।10।।

अहंभाव समुत्सृज्य दास्येनैव रघूत्तमम्। भजेऽहं प्रत्यहं रामं ससीतं सहलक्ष्मणम्।।11।।

नित्यं श्री रामभक्तस्य किंकरा यमकिंकराः। शिवमयो दिशस्तस्य सिद्धयस्तस्य दासिकाः।।12।।

इमं हनुमताप्रोक्तं मन्त्रराजात्मकं स्तवम्। पठत्यनुदिनं यस्तु स रामे भक्तिमान भवेत्।।13।।

श्रीरामतापनी उपनिषद

कामरूपाय रामाय नमो मायामयाय च नमो वेदादिरूपाय ॐकाराय नमो नमः।

रमाधराय रामाय श्रीरामआत्ममूर्तये, जानकी देहभूषाय रक्षोघ्नाय शुभाङ्गिने।

भद्राय रघुवीराय दशास्यान्तक रूपिणे, रामभद्रमहेश्वास रघुवीर नृपोत्तम।

भो दशास्यान्तकं रक्षां देहि श्रियं च ते।

ऋषि मुनियों की भूमि भारत एक रहस्यमय देश है,आईये जानते हैं इसकी महानता के कारण

पिंकी कुंडू

1. प्रकृतिः एक ओर समुद्र तो दूसरी ओर बर्फीले हिमालय है, एक ओर रेगिस्तान तो दूसरी ओर घने जंगल है एक ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ तो दूसरी ओर मैदानी इलाके है। प्रकृति के ऐसे सारे रंग किसी अन्य देश में नहीं है। भारतीय मौसम दुनिया के सभी देशों के मौसम से बेहतर है। सिर्फ यहीं पर प्रमुख रूप से चार ऋतुएं होती है। विदेशी यहां आकर भारत के वातावरण से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

2. ऋषिमुनिः सप्त ऋषियों के अलावा, कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनि, व्यास, पतंजलि, बृहस्पति, अष्टावक्र, शंकराचार्य, गोरखनाथ, मत्स्येंद्र नाथ, जालंधर, गोगादेव, झुलेलाल, तेजाजी महाराज, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, रामानंद, कबीर, पीपा, रामसापीर बाबा रामदेव, पाबूजी, मेहाजी मांगलिया, हड़बू, रैदास, मीराबाई, गुरुनानक, धन्ना, तुलसीदास, दादू दयाल, मलूकदास, पलटू, चरणदास, सहजोबाई, दयाबाई, एकनाथ, तुकाराम, समर्थ रामदास, भीखा, वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु, विट्ठलनाथ, संत सिंगाजी, हितहरिवंश, गुरु गोविंदसिंह, हरिदास, दूलनदास, महामति प्राणनाथ, शैगांव के गजानन महाराज, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, मेहर बाबा, दादा धूनी वाले, लाहड़ी महाशय, शीलनाथ बाबा, महर्षि अरविन्द, जे कृष्णमूर्ति, ओशो, स्वामी प्रभुपाद, दयानंद सरस्वती, महर्षि महेश योगी, एनी बिसेंट, आनंद मूर्ति, दादा लेखराज, श्री शिव दयाल सिंह, श्रीराम शर्मा आचार्य, देवहरा बाबा, नीम करौली बाबा आदि ऐसे हजारों साधु और संत हैं।

3. 'प्रथम मानव': यूं तो मनुष्य विकास क्रम से मनुष्य बना, लेकिन कहते हैं कि मनुष्य प्रारंभ में भारत में ही रहता था। शोधानुसार सप्तचरुतीर्थ के पास वितस्ता नदी की शाखा देविका नदी के तट पर मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई। प्रथम सृष्टिकर्ता मानव को स्वायंभु मनु कहा गया।

4. 'प्रथम धर्म' : ऋग्वेद को संसार का प्रथम धर्मग्रंथ माना जाता है। ऋग्वेद को भारतीयों ने ही सरस्वती नदी के तट पर बैठकर लिखा गया। चार ऋषियों अग्नि, वायु, अंगिरा और आदित्य ने मिलकर ऋग्वेद के ज्ञान को वाचिक परंपरा में ढाला जो अभी तक जारी है। वेदों पर आधारित धर्म को ही सनातन वैदिक या हिन्दू धर्म कहा जाता है।

5. मोक्ष का दर्शन : योग, तप, षड् दर्शन और ध्यान ही धर्म और मोक्ष का मार्ग है। प्राचीन काल से ही साधु-संतों ने इसे प्रचारित किया।

* ऋषि पतंजलि ने इसे 'आष्टांग योग' नाम से सुव्यवस्थित किया। आष्टांग योग के बाहर धर्म, दर्शन और अध्यात्म की कल्पना नहीं की जा सकती।

6. मंदिर और गुफाएं : भारत में कई प्राचीन रहस्यमी मंदिर, स्तंभ, महल और गुफाएं हैं। बामियान, बाघ, अजंता-एलोरा, एलीफेंटा और भीमबेटका की गुफाएं। 12 ज्योतिर्लिंग, 51 शक्तिपीठ के अलावा कई चमत्कारिक मंदिर।

7. रहस्यमयी विद्याएं : प्राणविद्या, त्राटक, सम्मोहन, जादू, टोना, स्तंभन, इन्द्रजाल, तंत्र, मंत्र, यंत्र, चौकी बांधना, गार गिराना, सूक्ष्म शरीर से बाहर निकलना, पूर्वजन्म का ज्ञान होना, अंतर्ध्यान होना, त्रिकालदर्शी बनना, मृत संजीवनी विद्या, ज्योतिष, सामुद्रिक शास्त्र, वास्तु शास्त्र, हस्तरेखा, पानी बताना, धनुर्विद्या, अष्टसिद्धियां, नवनिधियां आदि सैंकड़ों विद्याओं का जन्म भारत में हुआ।

8. किताबें :: वेद, पुराण, गीता, उपनिषद की कथाएं, पंचतंत्र, बेताल या वेताल पच्चीसी, जातक कथाएं, सिंहासन बत्तीसी, हितोपदेश, कथासरित्सागर, तेनालीराम की कहानियां, शुकसप्तति, कामसूत्र, कामशास्त्र, रावण संहिता, भृगु संहिता, लाल किताब, संस्कृत सुभाषित, विमान शास्त्र, योग सूत्र, परमाणु शास्त्र, शुल्ब सूत्र, श्रौतसूत्र, अगस्त्य संहिता, सिद्धांतशिरोमणि, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, च्यवन संहिता, शरीर शास्त्र, गर्भशास्त्र, रक्ताभिसरण शास्त्र, औषधि शास्त्र, रस रत्नाकर, रसेन्द्र मंगल, कक्षपुटतंत्र, आरोग्य मंजरी, योग सार, योगाष्टक, अष्टाध्यायी, त्रिपिटक, आगम एवं जिन सूत्र, समयसार, लीलावती, करण कुतूहल, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, आदि लाखों ऐसी किताबें, ग्रंथ हैं जिनके दम पर आज विज्ञान, तकनीक आदि सभी क्षेत्रों में प्रगति हो रही है।

9. कला : कलारिपट्टू (मार्शल आर्ट), भाषा, लेखन, नाट्य, गीत, संगीत, नौटंकी, तमाशा, स्थापत्यकला, चित्रकला, मूर्तिकला, पाक कला, साहित्य, बेल-बूटे बनाना, नृत्य, कपड़े और गहने बनाना, सुगंधित वस्तुएं-इत्र, तेल बनाना, नगर निर्माण, सूई का काम, बढ़ई की कारीगरी, पीने और खाने के पदार्थ बनाना, पाक कला, सोने, चांदी, हीरे-पन्ने आदि रत्नों की परीक्षा करना, तोता-मैना आदि की बोलियां बोलना आदि कलाओं का जन्म भारत में हुआ।

10. खेल :: शतरंज, फुटबॉल, कबड्डी, सांप-सीढी का खेल, ताश का खेल, तलवारबाजी, घुड़सवारी, धनुर्विद्या, युद्ध कला, खो-खो, चौपड़ पासा, रथदौड़, नौका दौड़, मल्ल-युद्ध, कुश्ती, तैराकी, भाला फेंक, आखेट, छिपाछई, पिट्ठू, चर-भर, शेर-बकरी, चक-चक चालनी, समुद्र पहाड़, दड़ी दोटा, गिल्ली-डंडा, किकली (रस्सीकूद), मुर्ग युद्ध, बटेर युद्ध, अंग-भंग-चौक-चंग, गोल-गोलधानी, सितौलिया, अंटी-कंचे, पकड़मपकड़ाई, पोलो या सगोल कंगजेट, तीरंदाजी, हॉकी, गंजिफा, आदि खेलों का जन्म भारत में हुआ

11. अविष्कार : पहिया, बटन, रूलर स्केल, शैम्पू, विमान, नौका, जहाज, व्यंजन, रथ, बैलगाड़ी, भाषा, व्याकरण, शून्य और दशमलव, शल्य चिकित्सा, हीरे का खनन, खेती करना, रेडियो, बिनारी कोड, स्याही, धातुओं की खोज, प्लास्टिक सर्जरी, अस्त्र-शस्त्र, बिजली, ज्यामिती, गुरुत्वाकर्षन का नियम, आयुर्वेद चिकित्सा, पृथ्वी का सूर्य का चक्कर लगाना, ब्रह्मांड की लंबाई चौड़ाई नापना, कैलेंडर, पंचाग, परमाणु सिद्धांत, वाद्य यंत्र, पाई के मूल्य की गणना, लोकतंत्र, साम्यवाद आदि का अविष्कार भारत में हुआ !!

अंधकार को निगलकर भाग्य को जन्म देने वाली करुणामयी महाशक्ति और म्लेच्छों की तो काल है

पिंकी कुंडू

सप्तमातृकाओं में पांचवीं तथा श्री विद्या के रहस्यमयी तांत्रिक रूपों में से एक, वाराही देवी वह शक्ति हैं।

जिन्हें शास्त्र "दंष्ट्रांकिता भीषणा" कहते हैं, अर्थात जिनके दांत बाहर निकले हुए और भयंकर हैं, परंतु जिनका हृदय करुणा से भरा हुआ है।

यह विष्णु के वराह अवतार की शक्ति हैं, इसलिए इनका स्वरूप सूअर-मुख वाला बताया जाता है। लाल-केशरी वर्ण, आठ हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग, पाश, अभय और वरद मुद्रा धारण करने वाली यह देवी सिंह पर आरूढ़ होकर समस्त दुष्ट शक्तियों का संहार करती हैं।

तंत्रशास्त्र में वाराही को 'दुष्ट-दैन्य-विनाशिनी' कहा गया है। शत्रु, भय, अभिचार, प्रेतबाधा, पिशाच, डाकिनी-शाकिनी, ग्रह-दोष, नजर-बंदी और काला जादू – यह सब इनके नाम-स्मरण मात्र से भाग खड़े होते हैं। जो साधक इनकी साधना करता है, उसके चारों ओर एक अदृश्य कवच बन जाता है, जिसे कोई नकारात्मक शक्ति भेद नहीं पाती।

घर में वाराही कृपा लाने का सबसे सरल उपाय यदि आप जीवन में बार-बार बाधाएं आती हों, धन रुकता हो, शत्रु परेशान करते हों, या घर में कलह-रोग-दरिद्रता बनी रहती हो, तो प्रतिदिन सुबह या रात में निम्न सरल वाराही स्तोत्र का ११, २१ या १०८ बार पाठ करें। यह स्तोत्र इतना प्रभावशाली है कि तांत्रिक भी इसे गुप्त रखते हैं, पर सच्चे मन से जपने पर यह चमत्कार कर दिखाता है।

ॐ नमस्ते वाराही देवी वरदांगी वरप्रदा
रक्तवर्णा महाशक्ति सर्वकामफलप्रदा ॥
नमस्ते खड्गधारिणि नमस्ते पाशधारिणि
नमस्ते शूलहस्ते च नमस्ते वरदायिनि ॥
सिंहारूढ़े महादेवि दुष्टदैन्य विनाशिनि
सर्वव्याधि हरा देवी सर्वदुःख विनाशिनि ॥

धनं देहि यशो देहि सौभाग्यं सुव्रतां तथा
पुत्रान्-पौत्रान्-सुखं देहि जीवनं शुभमस्तु मे ॥
तव भक्तो निर्भयो नित्यं तव भक्तो विजयी सदा
दासोऽहं शरणं देहि वाराही परिपालय ॥
॥ इति श्री वाराही कवच स्तोत्रम् ॥

यह स्तोत्र क्या करता है?

- घर में नकारात्मक ऊर्जा, प्रेत-बाधा, काला जादू स्वतः नष्ट हो जाता है
- शत्रु स्वयं पीछे हटने लगते हैं, मुकदमे में विजय मिलती है
- अटका हुआ धन आता है, व्यापार में वृद्धि होती है
- रोग और मानसिक तनाव दूर होते हैं
- साहस और आत्मविश्वास इतना बढ़ता है कि साधक स्वयं को नया जन्मा हुआ महसूस करता है

वाराही देवी की साधना का सबसे बड़ा रहस्य यह है कि ये पहले साधक के भीतर का सारा भय जला देती हैं, फिर बाहर की दुनिया को उसके अनुकूल बना देती हैं। यह वह माँ हैं जो अपने बच्चे को गोद में उठाकर अंधेरे जंगल के पार ले जाती हैं, जहां कोई साधारण मनुष्य जाने से डरता है।

यदि आपका मन सच्चा है, आपका उद्देश्य न्यायपूर्ण है और आप नियमित रूप से इनका नाम जपते हैं, तो कुछ ही दिनों में आप स्वयं महसूस करेंगे कि जीवन की दिशा बदल रही है। अचानक नए अवसर, नए रास्ते, नई शक्ति – सब कुछ अपने आप प्रकट होने लगता है।

माँ वाराही की जय ! जो भक्त निडर होकर इनकी शरण में आता है, उसे ये कभी खाली हाथ नहीं लौटातीं।

ॐ वाराह्यै नमः
जय माँ वाराही
नमामीशमीशान निर्वाणरूपम्
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम् ॥

प्रदूषण को लेकर दिल्ली सरकार का 'मास्टरस्ट्रोक'

मनजिंदर सिंह सिरसा ने जारी किए 3 नए गाइडलाइन

दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने घोषणा की है कि गुरुवार से बिना पीयूसी प्रमाणपत्र के वाहनों को पेट्रोल नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा कि सभी वाहन मालिकों को मानदंडों का पालन करने के लिए एक दिन का समय दिया गया है। दिल्ली के बाहर पंजीकृत बीएस छह से कम श्रेणी के वाहनों को दिल्ली में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। सरकार प्रदूषण कम करने के लिए कई कदम उठा रही है, जिसमें इलेक्ट्रिक बसों को बढ़ावा देना और प्रदूषण निगरानी संयंत्र स्थापित करना शामिल है।

पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बिना पीयूसी प्रमाण पत्र के बिना वाहनों को पेट्रोल पंपों पर ईंधन भरने की अनुमति न देने की घोषणा की।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने मंगलवार को घोषणा की कि गुरुवार से राष्ट्रीय राजधानी में वैध प्रदूषण नियंत्रण (पीयूसी) प्रमाण पत्र के बिना वाहनों को पेट्रोल पंपों पर ईंधन भरने की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी वाहन मालिकों को पीयूसी मानदंडों का पालन करने के लिए एक दिन का समय दिया गया है।

दिल्ली सचिवालय में पत्रकार वार्ता के दौरान सिरसा ने कहा कि पेट्रोल पंपों पर लगे ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकाग्निशन (एएनपीआर) कैमरे वैध पीयूसी प्रमाणपत्र के बिना वाहनों की स्वतः ही पहचान कर लेंगे। ऐसे वाहनों को बिना किसी झड़प या व्यवधान के ईंधन देने से इनकार कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि वैध पीयूसी प्रमाणपत्र नहीं रखने वाले आठ लाख से अधिक वाहन मालिकों पर पहले ही जुर्माना लगाया जा चुका है।

मंत्री ने यह भी कहा कि दिल्ली के बाहर पंजीकृत और बीएस छह से कम श्रेणी के सभी वाहनों को ग्रेप तीन और ग्रेप चार लागू होने की वजह से दिल्ली में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। ऐसे में गुरुवार से और अगले आदेश तक, दिल्ली के बाहर से आने वाले सिर्फ बीएस छह वाहनों को ही शहर में प्रवेश करने की अनुमति होगी।

मंत्री ने कहा कि 2025 में दिल्ली की वायु गुणवत्ता पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग आठ महीने बेहतर रही है। प्रदूषण पर अंकुश लगाने के लिए सरकार की पहलों पर प्रकाश डालते हुए सिरसा ने कहा कि प्रतिदिन कार्रवाई की जा रही है। राजधानी में कचरे के ढेर की ऊंचाई 15 मीटर कम हो गई है। पुराने कचरे से प्रभावित कुल 202 एकड़ भूमि में से 45 एकड़ भूमि को साफ करके पुनः प्राप्त कर लिया गया है और वहां पौधारोपण अभियान शुरू कर दिए गए हैं।

इसी प्रकार, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति ने अब तक 2,000 से अधिक प्रदूषण निगरानी संयंत्र स्थापित किए हैं और 9.21 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूला है। अन्य विभागों द्वारा भी सख्ती बरती जा रही है। सिरसा ने कहा कि निर्माण सामग्री ले जाने वाले वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जाएगा और उल्लंघन करने वालों पर सख्त जुर्माना लगाया जाएगा, साथ ही दोषी वाहनों को सील कर दिया जाएगा।

पर्यावरण मंत्री ने जानकारी दी कि डीपीसीसी व जिला प्रशासन टीमों द्वारा औद्योगिक क्षेत्र, पुनर्वास और अनधिकृत इलाकों में सर्वे किया जा रहा है। अब तक 824 औद्योगिक इकाइयों को चिन्हित कर उन पर कार्रवाई की जा रही है। डीजल जनरेटर सेट और प्रदूषण फैलाने वाले व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर भी सख्त कार्रवाई जारी है। 3,200 से अधिक जनरेटर सेट की सीएक्यूएम मानकों के अनुसार जांच की गई है। वहीं 318 बैंक्वेट हालों को डीजी सेट मानकों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं।

सिरसा ने कहा कि बायोमेथेनेशन संयंत्र भी प्रदूषण में योगदान करते हैं। इसीलिए सरकार ने उत्सर्जन को कम करने और स्वच्छ संचालन सुनिश्चित करने के लिए 10,000 हीटर उपलब्ध कराए हैं। उन्होंने कहा कि जहां पिछली सरकार ने 2018 में 13 प्रदूषण हाट स्पाट की पहचान की थी, वहीं मौजूदा सरकार ने 62 हाटस्पाट की पहचान की है और उन पर काम भी कर रही है।

सिरसा ने कहा कि दिल्ली में वर्तमान में 3,400 इलेक्ट्रिक बसें हैं। सरकार स्वच्छ सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा दे रही है और 7,500 इलेक्ट्रिक बसों को तैनात करने की योजना बना रही है, जिससे वाहनों से होने वाले प्रदूषण में काफी कमी आएगी। उन्होंने बताया कि एक वैज्ञानिक समिति का भी गठन किया गया है, जिसने प्रभावी प्रदूषण नियंत्रण उपायों की सिफारिश करने के लिए पहले ही बैठकें की हैं। उन्होंने बताया कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग ने भी एक समिति का गठन किया है।

प्रदूषण खत्म नहीं कर सकने पर मंत्री ने मांगी माफी

पर्यावरण मंत्री ने दिल्ली में प्रदूषण पूरी तरह खत्म नहीं कर पाने के लिए माफी मागते हुए कहा कि आठ नौ महीने में किसी भी सरकार के लिए ऐसा करना संभव नहीं है। सिरसा ने इस 'बीमारी' के लिए आम आदमी पार्टी सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए कांग्रेस पर भी निशाना साधा।

सिरसा ने कहा, दिल्ली में प्रदूषण की बीमारी आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की पुरानी सरकारों की देन है। उन्होंने दोनों पार्टियों को एक साथ निशाने पर लेते हुए कहा, "10-11 साल की आम आदमी पार्टी की बीमारियां और 15 साल की कांग्रेस की बीमारी है। जो राहुल गांधी और प्रियंका गांधी मास्क लगाकर बातें कर रहे हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि पिछले साल आपके मास्क कहां थे। पिछले साल इससे ज्यादा प्रदूषण था।

स्वदेशी संकल्प दौड़ रन फॉर स्वदेशी के आयोजन हेतु विशेष बैठक का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज। दिनांक 18 दिसंबर 2025 को स्वदेशी जागरण मंच देवघर की बैठक संघ कार्यालय में संपन्न हुई। इस बैठक में सुनिश्चित हुआ कि विवेकानंद जयंती के अवसर पर देवघर जिले के दसों प्रखंड दोनों नगर में 151 से अधिक विद्यालय शिक्षण संस्थानों में यह दौड़ आयोजित होगी इस अवसर पर क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री अजय कुमार ने कहा कि अब आवश्यकता है कि विवेकानंद के संकल्प को स्वदेशी भाव से भरा जाए और अपने हृदय में स्वदेशी की विविधता को साकार करने के लिए घर-घर गांव गांव विद्यालय विद्यालय दुकान दुकान जय जय स्वदेशी का उद्घोष किया जाए इस बैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ देवघर विभाग के विभाग प्रचारक श्री vigendra ने कहा कि अब आवश्यकता है कि हम सभी स्वदेशी के भाव से अपने जीवन को भरें और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने समय वर्ष में स्व जागरण के अभियान में स्वदेशी के दिशा को घर-घर पहुंचने के लिए जनव्यापी समाज परिवर्तन का आंदोलन होगा। इस बैठक के अवसर पर प्रांत पूर्णकालिक श्री हिमांशु शेखर प्रांत के समन्वयक श्री मनोज सिंह जी जिला संयोजक श्री संजय सिंह जी विभाग महिला प्रमुख श्रीमति आशा झा जी श्रीमती सुप्रिया गुप्ता जी अमर सिंह जिला पूर्णकालिक और श्री गिरीश सिंह श्री महेश दुबे सह जिला संयोजक श्री प्रभाष गुप्ता जी सहित सभी प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

सेवा, संस्कार और समर्पण की मिसाल हैं अनिरुद्धाचार्य महाराज : मनप्रीत कौर

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। परिक्रमा मार्ग स्थित गौरी गोपाल आश्रम में संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ) पंजाब प्रान्त की अध्यक्ष, मां सीता रसोई की संचालिका एवं प्रमुख समाजसेविका ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) के द्वारा आश्रम के संस्थापक व विश्वविख्यात भागवताचार्य डॉ.अनिरुद्धाचार्य महाराज का उनके द्वारा धर्म-अध्यात्म के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान देने एवं वृद्ध माताओं की सेवा, गौ सेवा, संत सेवा, निर्धन-निराश्रित सेवा आदि के लिए सम्मान किया गया।

बहिन मनप्रीत कौर ने गौरी गोपाल आश्रम के संस्थापक-अध्यक्ष डॉ.अनिरुद्धाचार्य महाराज के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आज के समय में जब अधिकांश बच्चे अपने माता-पिता को घर में रखने से कतराते हैं और उन्हें अकेला छोड़ देते हैं, ऐसे में डॉ.अनिरुद्धाचार्य महाराज उन सभी बेसहारा माताओं को सहारा दे रहे हैं और पूरे सम्मान व प्रेम के साथ उनकी देखभाल कर रहे हैं। इसके अलावा उनके आश्रम में पूरे दिन निरंतर लंगर सेवा चलती रहती है, और यह सेवा कभी एक दिन के लिए भी नहीं रुकती। यह निःस्वार्थ सेवा, त्याग और करुणा का जीवंत उदाहरण है।

₹पंजाब रत्न₹ मनप्रीत कौर ने कहा कि डॉ.अनिरुद्धाचार्य महाराज धर्म व अध्यात्म की बहुमूल्य निधि हैं।उनके द्वारा श्रीमद्भागवत कथा, श्रीराम कथा एवं अपने प्रवचनों व समागमों के माध्यम से असंख्य व्यक्तियों को प्रभु भक्ति के मार्ग से जोड़ने का जो अभूतपूर्व कार्य किया जा रहा है, वो अति प्रशंसनीय है।

इस अवसर पर साहित्य संस्कृति मनीषी ₹ यूपी रत्न ₹ डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी, आचार्य अंशुल पाराशर, भगवताचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री महाराज, धर्म पथिक शैलेंद्र कृष्ण महाराज, भगवताचार्य विमल कृष्ण पाठक, आचार्य शिवम साधक, बागेश्वर धाम के आचार्य रोहित रिछारिया, आचार्य बद्रीश महाराज, डॉक्टर राधाकांत शर्मा, डॉक्टर सत्यमित्रानंद महाराज, पंडित श्याम सुंदर ब्रजवासी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

सर्दियों में अपनी सेहत के लिये अपनाएं खास खाद्य और व्यायाम और अपनी सेहत को रखें स्वास्थ्य : डॉ हृदयेश कुमार

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद हरियाणा डॉ हृदयेश कुमार अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट ने शिव मंदिर परिसर तिरखा कॉलोनी बल्लबगढ़ में सर्दियों में सेहत पर चर्चा कर लोगों को कर रहे जागरूक

सर्दी अपने साथ धुंध भरी सुबह, सुहावनी शाम और मौसमी त्योहारों की गर्माहट लेकर आती है। हालाँकि, यह सर्दी, रूखी त्वचा और सांस संबंधी समस्याओं जैसी अनोखी स्वास्थ्य चुनौतियाँ भी लेकर आती है। कुछ सावधानियों को अपनाकर आप स्वस्थ रह सकते हैं और मौसम का पूरा आनंद उठा सकते हैं। आंवला सर्दियों का पावरहाउस है, जो विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर है। इसे कच्चा, चटनी के रूप में या मुरब्बा में डालकर खाएं।

इसे "रूखी दूध" के नाम से जाना जाता है, यह एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों वाला एक प्राकृतिक इम्युनिटी बूस्टर है। सोने से पहले इसे गर्म करके पिएं। बेहतर प्रतिरक्षा कार्य के लिए अपने आहार में दालें, मेवे और तिल जैसे बीज शामिल करें। स्वस्थ आंत के लिए दही, छाछ, या इडली और डोसा जैसे किण्वित खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करें। अदरक, तुलसी या अजवाइन के साथ गर्म पानी पीने से आप हाइड्रेटेड रहते हैं और पाचन में सुधार होता है। घर पर बने सूप और हर्बल पेय जैसे काढ़ा सर्दियों के दौरान आरामदायक और पौष्टिक होते हैं। एलोवेरा या ग्लिसरीन जैसे प्राकृतिक तत्वों से युक्त गाढ़ी क्रीम का प्रयोग करें। स्वस्थ त्वचा न केवल अच्छी दिखती है, बल्कि कीटाणुओं के खिलाफ सुरक्षा कवच के रूप में भी काम करती है।

विटामिन डी के लिए सर्दियों की धूप का आनंद लें

ठंडे महीनों में अक्सर सूर्य की रोशनी कम मिलती है, जिससे विटामिन डी की कमी हो सकती है। प्राकृतिक विटामिन डी संश्लेषण के लिए सुबह की धूप में 15-20 मिनट बिताएं। अपने भोजन में मशरूम, फोर्टिफाइड दूध और रोहू जैसी मछली शामिल करें। यदि आवश्यक हो तो विटामिन डी के पूरक के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श जरूर लें।

पर्याप्त विटामिन डी लड्डियों के स्वास्थ्य, प्रतिरक्षा और समग्र जीवन शक्ति का समर्थन करता है।

प्राणायाम (योगिक श्वास) जैसे अभ्यास फेफड़ों की क्षमता में सुधार कर सकते हैं और जलन को कम कर सकते हैं।

बेहतर वायु गुणवत्ता के लिए एयर प्यूरीफायर में निवेश करें या एरेका पाम जैसे इनडोर पौधे रखें।

यह स्वस्थ फेफड़े सुनिश्चित करते हैं कि आप पूरे शीतकाल में सक्रिय और ऊर्जावान बने रहें।

सर्दियों की रातें आरामदायक नींद के लिए आदर्श होती हैं, लेकिन सुनिश्चित करें कि आप अच्छी गुणवत्ता वाली नींद के लिए माहौल तैयार कर रहे हैं।

तले हुए नाश्ते की जगह भुनी हुई मूंगफली, तिल के साथ गुड़ (तिल के लड्डू) या मखाना खाएं।

गाजर, पालक और मूली जैसी मौसमी सब्जियों के साथ बार-बार छोटे-छोटे भोजन करने से आपकी ऊर्जा स्थिर रहती है।

स्वस्थ वजन बनाए रखने से आपके हृदय और जोड़ों पर अनावश्यक दबाव नहीं पड़ता।

सूर्य के प्रकाश और गतिविधि से अपना मूड बेहतर करें

छोटे दिन कभी-कभी मूड में गिरावट का कारण बन सकते हैं, जिसे मौसमी भावात्मक विकार (एसएडी) के रूप में जाना जाता है। पार्क में सुबह की सैर भी आपका मन प्रसन्न कर सकती है।

अपनी ऊर्जा को उच्च बनाए रखने के लिए योग या इनडोर वर्कआउट का प्रयास करें।

शरीर की गर्मी बनाए रखने के लिए हल्के थर्मल और गर्म शॉल का उपयोग करें और जोड़ों की गतिशीलता में सुधार के लिए सुबह की स्ट्रेचिंग या हल्के योग जैसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।

ठंडे फर्श के संपर्क को कम करने के लिए गलीचे या कालीन का उपयोग करें।

कीटाणुओं को फैलने से रोकने के लिए नियमित रूप से सतहों को साफ करें और हाथ धोएं। एक गर्म और स्वच्छ घरेलू वातावरण श्वसन संबंधी समस्याओं के जोखिम को कम करता है और समग्र आराम को बढ़ावा देता है।

सर्दी का मौसम अपने त्योहारों, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों और ठंडे मौसम के साथ आनंद लेने का समय है। इन व्यावहारिक सुझावों का पालन करके, आप अपने स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं और मौसम का पूरा आनंद ले सकते हैं।

सर्दियों के दौरान, अत्यधिक संसाधित या उच्च शर्करा वाले खाद्य पदार्थों को सीमित करना सबसे अच्छा है, क्योंकि वे आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता को कम कर सकते हैं। अपने शरीर को मजबूत रखने के लिए ताजे, मौसमी और साबुत खाद्य पदार्थों का चुनाव करें।

सातवें वेतन आयोग के बाद आठवां वेतन आयोग- समय, सिफारिशें, संभावित वेतन वृद्धि और एरियर का समग्र विश्लेषण

वैश्विक स्तरपर भारत में केंद्रीय सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए वेतन आयोग केवल वेतन संशोधन का माध्यम नहीं होते,बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा, जीवन-स्तर, उपभोग क्षमता और मध्यवर्गीय स्थिरता का सबसे बड़ा आधार होते हैं। सातवें केंद्रीय वेतन आयोग का 10 वर्षीय कार्यकाल 31 दिसंबर 2025 को समाप्त हो रहा है,और इसके साथ ही देश का ध्यान स्वाभाविक रूप से आठवें केंद्रीय वेतन आयोग पर केंद्रित हो गया है।यह केवल वेतन वृद्धि का सवाल नहीं है, बल्कि यह प्रश्न भी है कि महंगाई, जीवन-यापन की बढ़ती लागत, रियल इनकम में गिरावट और भविष्य की आर्थिक चुनौतियों के बीच सरकार अपने कर्मचारियों को किस तरह का संरचनात्मक संरक्षण देती है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि भारत में परंपरागत रूप से यह देखा गया है कि किसी भी वेतन आयोग की रिपोर्ट आने के बाद सरकार उसे लागू करने से पहले तीन से छह महीने तक वित्त मंत्रालय,कार्मिक विभाग और कैबिनेट स्तरपर विचार-विमर्श करती है। इसी कारण यह लगभग तय माना जा रहा है कि आठवां वेतन आयोग जनवरी 2026 से लागू नहीं हो पाएगा।

साथियों बात अगर हम सातवें वेतन आयोग की समाप्ति और आठवें वेतन आयोग की आवश्यकता को समझने की करें तो,सातवें वेतन आयोग को वर्ष 2016 में लागू किया गया था। तब से लेकर अब तक देश की आर्थिक परिस्थितियों में भारी बदलाव आए हैं। महंगाई दर, स्वास्थ्य और शिक्षा खर्च, आवास लागत,शहरीकरणऔर तकनीकी परिवर्तन इन सभी ने सरकारी कर्मचारियों की वास्तविक आय पर दबाव डाला है।हालाँकि महंगाई भत्ता समय-समय पर बढ़ता रहा, लेकिन वेतन संरचना मूल रूप से वही बनी रही। यही कारण है कि 31 दिसंबर 2025 के बाद नया वेतन आयोग केवल औपचारिकता नहीं बल्कि आर्थिक अनिवार्यता बन चुका है।सरकार द्वारा गठित आठवें केंद्रीय वेतन आयोग की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति रंजना देसाई कर रही हैं। यह नियुक्ति यह संकेत देती है कि आयोग से न्यायपूर्ण, संतुलित और संवैधानिक दृष्टि से सुदृढ़ सिफारिशों की अपेक्षा की जा रही है।आयोग को निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों पर सिफारिशें देनी हैं वेतन संरचना के साथ फिटमेंट फैक्टर विभिन्न प्रकार के भत्ते, रिटायरमेंट लाभ, पेंशन और पारिवारिक पेंशन,ग्रेच्युटी और अन्य सामाजिक सुरक्षा उपाय।सरकार ने आयोग को लगभग 18 महीने का समय दिया है।टर्म्स ऑफ रेफरेंस और रिपोर्ट की संभावित समयसीमा-आठवें वेतन आयोग के टर्म्स ऑफ रेफरेंस अक्टूबर 2025 में जारी किए गए हैं। इसके बाद आयोग ने अपना काम औपचारिक रूप से शुरू किया।वर्तमान अनुमानों के अनुसार-(1) आयोग की रिपोर्ट अप्रैल 2027 तक आने की उम्मीद है (2) रिपोर्ट आने के बाद सरकार आमतौर पर 3 से 6 महीने विचार-विमर्श और वित्तीय मूल्यांकन में लगाती है (3) इसका सीधा अर्थ यह है कि जनवरी 2026 में नया वेतन आयोग लागू होना लगभग असंभव है।

साथियों बात अगर हम आठवां वेतन आयोग कब लागू हो सकता है? इसको समझने की करें तो वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी स्पष्ट कर चुके हैं कि, आठवें केंद्रीय वेतन आयोग को लागू करने की तारीख और फंडिंग पर फैसला बाद में लिया जाएगा,इस बयान का नीतिगत अर्थ यह है कि सरकार फिलहाल कोई पूर्व-निर्धारित तारीख घोषित नहीं करना चाहती, ताकि राजकोषीय संतुलन और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लिया जा सके।विश्लेषकों की आम राय है कि, 2027 के अंत या 2028 की शुरुआत में आठवां वेतन आयोग लागू हो सकता है।फिटमेंट फैक्टर क्या होता है और इसका महत्व -फिटमेंट फैक्टर वह गुणांक होता है जिसके माध्यम से पुराने वेतन को नए वेतन ढांचे में बदला जाता है।सातवें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर 2.57 था। इसका अर्थ यह था कि,नया मूल वेतन = पुराना मूल वेतन × 2.57 आठवें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर को लेकर सबसे ज्यादा चर्चा है, क्योंकि यही कर्मचारियों की सैलरी बढ़ोतरी का आधार बनेगा।

साथियों बात अगर हम निजी वित्तीय अनुसंधान संस्था एम्बिट कैपिटल का अनुमान को समझने की करें तो आठवें वेतन आयोग में कुल मिलाकर 30 से 34 प्रतिशत तक वेतन और पेंशन में वृद्धि हो सकती है। इस वृद्धि की प्रक्रिया यह होगी कि पहले मौजूदा महंगाई भत्ते को बेसिक सैलरी में मर्ज किया जाएगा और उसके बाद नए फिटमेंट फैक्टर के आधार पर वेतन संरचना लागू की जाएगी।कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में 50 से 54 प्रतिशत तक वेतन वृद्धि की बात भी सामने आई है, लेकिन अधिकांश अर्थशास्त्री और नीति विशेषज्ञ इस संभावना को कम मानते हैं क्योंकि इतनी बड़ी वृद्धि से केंद्र सरकार के राजकोषीय संतुलन पर अत्यधिक दबाव पड़ेगा।यदि व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो आठवें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर 1.8 से 2.1 के बीच रह सकता है। इसका अर्थ यह होगा कि वास्तविक वेतन वृद्धि लगभग 30 से 34 प्रतिशत के दायरे में सीमित रहेगी, जो सरकार और कर्मचारियों दोनों के लिए एक संतुलित समाधान माना जा सकता है। उदाहरण के तौर पर यदि किसी कर्मचारी का वर्तमान बेसिक वेतन 18,000 रूपए है और उस पर लगभग 50 प्रतिशत महंगाई भत्ता मिल रहा है, तो कुल प्रभावी वेतन 27,000 रूपए के आसपास होता है। जब इस महंगाई भत्ते को बेसिक में जोड़ दिया जाएगा, तो नया बेसिक 27,000 रूपए माना जाएगा। यदि इस पर 1.9 का फिटमेंट फैक्टर लागू किया जाता है, तो नया बेसिक वेतन 51,300 रूपए के करीब पहुंच सकता है। यह वृद्धि दिखने में बहुत बड़ी लगती है, लेकिन वास्तव में यह महंगाई भत्ते के समायोजन के बाद की वास्तविक वृद्धि है।

साथियों बात अगर हम आठवें वेतन आयोग का प्रभाव केवल कार्यरत कर्मचारियों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पेंशनभोगियों के लिए भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण होगा, इसको समझने की करें तो,पेंशन आमतौर पर अंतिम बेसिक वेतन का 50 प्रतिशत होती है, इसलिए जब बेसिक वेतन में वृद्धि होगी तो पेंशन में भी समानुपातिक बढ़ोतरी होगी। यदि किसी पेंशनभोगी की मौजूदा पेंशन 20,000 रूपए है और महंगाई भत्ते को जोड़कर यह 30,000 के आसपास पहुंच चुकी है, तो नए वेतन ढांचे में 1.9 फिटमेंट फैक्टर लागू होने पर संशोधित पेंशन लगभग 28,500 से 30,000 रूपए के बीच हो सकती है। यह वृद्धि बुजुर्ग पेंशनरों के लिए जीवन- यापन में बड़ी राहत लेकर आएगी।सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि आठवां वेतन आयोग 2028 में लागू होता है तो कर्मचारियों और पेंशनरों को कितना एरियर मिलेगा। यदि यह मान लिया जाए कि आयोग की सिफारिशें जनवरी 2026 से प्रभावी मानी जाएं, लेकिन वास्तविक भुगतान जनवरी 2028 से शुरू हो, तो कुल 24 महीनों का एरियर बनता है। यदि किसी कर्मचारी की मासिक वेतन वृद्धि 15,000 रूपए है,तो दो वर्षों का एरियर 3,60,000 रूपए तक हो सकता है। इसी तरह यदि किसी पेंशनभोगी की मासिक पेंशन वृद्धि 6,000 रूपए है, तो उसका एरियर लगभग 1,44,000 रूपए हो सकता है। यह एरियर एकमुश्त दिया जाएगा या किश्तों में, इसका निर्णय सरकार अपनी वित्तीय स्थिति के अनुसार करेगी। यह भी ध्यान देने योग्य है कि आठवें वेतन आयोग के लागू होने से केंद्र सरकार पर लाखों करोड़ रुपये का अतिरिक्त वित्तीय भार पड़ेगा। इसका प्रभाव केवल केंद्र तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि राज्यों पर भी अप्रत्यक्ष दबाव आएगा क्योंकि अधिकांश राज्य केंद्र के वेतन आयोग के अनुरूप अपने कर्मचारियों का वेतन संशोधित करते हैं। इसी कारण सरकार अत्यधिक सतर्कता के साथ इस पूरी प्रक्रिया को आगे बढ़ा रही है और किसी भी जल्दबाजी से बचना चाहती है।

अतः अगर हम ऑपरेट पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि आठवां केंद्रीय वेतन आयोग केवल वेतन बढ़ोतरी का दस्तावेज नहीं होगा, बल्कि यह सरकारी कर्मचारियों की आर्थिक गरिमा,पेंशनभोगियों की सामाजिक सुरक्षा और सरकार की राजकोषीय जिम्मेदारी के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास होगा। भले ही यह आयोग जनवरी 2026 में लागू न हो पाए, लेकिन 2027 के अंत या 2028 की शुरुआत में इसके लागू होने की प्रबल संभावना है। उस समय तक कर्मचारियों को न केवल संशोधित वेतन मिलेगा, बल्कि बड़े एरियर के रूप में एकमुश्त आर्थिक राहत भी प्राप्त हो सकती है, जो मौजूदा महंगाई और आर्थिक दबावों के बीच उनके लिए एक महत्वपूर्ण सहारा सिद्ध होगी।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने विजय दिवस पर 1971 के युद्ध में भारतीय सेना के शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दी

परिवहन विशेष न्यूज

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक रुपेन्द्र नागर के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से विजय दिवस के अवसर पर उन्नीस सौ इकहत्तर के युद्ध में भारतीय सेना के शहीद वीर जवानों को संस्था पदाधिकारियों ने कैंडल जलाकर हल्द्वानी नैनीताल रोड स्थित शहीद चंद्रशेखर मिश्रा पार्क में श्रद्धांजलि दी

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था मार्गदर्शक धरम पाल सदस्य मनीष साहू ने संयुक्त रूप से कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों के अद्भुत शौर्य पराक्रम उत्कृष्ट रण कौशल और अटूट कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक विजय दिवस हम भारतीयों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है क्योंकि 3 दिसंबर 1971 को पाकिस्तान से शुरू हुए बांग्लादेश मुक्ति संग्राम युद्ध में 16 दिसंबर 1971 को भारतीय सेना के अदम्य साहस पराक्रम से 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया जिससे भारत ने पूर्वी पाकिस्तान को स्वतंत्रता दिलाकर दुनिया के नक्शे को बदलकर बांग्लादेश का जन्म कराकर भारत ने मानवीय मूल्यों को निभाते हुए यह युद्ध जीतकर विश्व विजयी तिरंगा लहराकर पाकिस्तान को हरा दिया लेकिन इस युद्ध में भारतीय सेना के शहीद जवानों के बलिदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता इसलिए एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था बांग्लादेश की आजादी के लिए लड़े गए युद्ध में भारतीय सेना के शहीदों को श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति श्रद्धा भाव प्रकट कर उनके बलिदान को हमेशा याद रखती है और यह हम सभी भारतीयों का परम कर्तव्य है

इस दौरान श्रद्धांजलि देने में एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक रुपेन्द्र नागर उपाध्यक्ष लोकेश कुमार साहू कोषाध्यक्ष बलराम हालदार मार्गदर्शक अलका टंडन अतुल जायसवाल कपिल अग्रहरि खेमराज साहू सुनीता तिवारी ममता खत्री शांति रावत खुशी नागर धर्मेन्द्र साहू जानकी कश्यप धरम पाल आयुष नागर महेश साहू मनीष साहू नमन तिवारी आयुष वार्ष्णेय अरविन्द कुमार विनीत टंडन वंश तिवारी समीर राज लालू शर्मा महेंद्र सिंह संदीप यादव अमित गोस्वामी सूरज मिस्त्री कमलेश आर्या दीपक कुमार सुशील राय सूरज कुम्हार मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित

अंतरराष्ट्रीय ब्यूटी उद्योग की पहली पसंद बनी "मुल्तानी मिट्टी"

रामस्वरूप रावतसरे

राजस्थान के बाड़मेर एवं अन्य सरहदी जिले का नाम अक्सर वीरों की भूमि, युद्धों की कहानियों और थार की शौर्यगाथाओं के कारण सुर्खियों में रहता है लेकिन इस सीमांत इलाके की पहचान केवल वीरता तक सीमित नहीं है। यहां की रेगिस्तानी धरती में एक ऐसा प्राकृतिक खजाना छिपा है जिसकी मांग दुनिया भर में तेजी से बढ़ रही है। अमेरिका, जापान और यूरोप जैसे विकसित देश तक इसके दीवाने हो चुके हैं। इस मिट्टी का उपयोग चेहरे की खूबसूरती निखारने से लेकर बालों की मजबूती तक के लिए किया जाता है। स्थानीय लोग तो वर्षों से इस पारंपरिक मिट्टी पर भरोसा करते आए हैं लेकिन अब अंतरराष्ट्रीय ब्यूटी उद्योग भी इसे अपने उत्पादों में खास जगह देने लगा है।

बाड़मेर समेत आसपास के क्षेत्रों में मिलने वाली मुल्तानी मिट्टी दिखने में भले ही सामान्य लगे लेकिन जानकारी के अनुसार इसके गुण इसे खास बनाते हैं। चेहरे पर लगाने से स्किन ग्लो करती है और टाइट होती है जबकि बालों पर लगाने से वे घने, काले और रेशमी बन जाते हैं। यही कारण है कि देसी बाजारों से निकलकर मुल्तानी मिट्टी अब अंतरराष्ट्रीय ब्यूटी ब्रांडों की पहली पसंद बन चुकी है। विदेशों में इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गई है कि कई जगह इसे प्रीमियम स्किन केयर प्रोडक्ट्स में शामिल किया जा रहा है।

थार के धोरों में मिलने वाली यह मुल्तानी मिट्टी स्थानीय बाजारों में 20 से 30 रुपये प्रति किलो में आसानी से मिल जाती है लेकिन जब यही मिट्टी अमेरिका, जापान और यूरोप के बाजारों में पहुंचती है तो इसकी कीमत कई गुना बढ़ जाती है। विदेशों में इसे नेचुरल स्किन क्लेंज़र और ब्यूटी इंग्रेडिएंट के रूप में बेचा जाता है जहां इसका मूल्य प्रीमियम श्रेणी में माना जाता है। बाड़मेर की मिट्टी की खासियत यही है कि इसमें पाए जाने वाले मिनरल्स की गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरी उतरती है जिसके कारण विदेशी उपभोक्ताओं के बीच इसकी मांग तेजी से बढ़ी है।

जानकारी के अनुसार बड़ी अंतरराष्ट्रीय कंपनियां मुल्तानी मिट्टी को फेस मास्क, स्किन केयर किट और स्पा ट्रीटमेंट जैसे उत्पादों में शामिल कर रही हैं। मुल्तानी मिट्टी नेचुरल स्किन क्लेंज़र, ऑयल कंट्रोल एजेंट, टॉक्सिन एब्ज़ॉर्बर और आयुर्वेदिक ब्यूटी इंग्रेडिएंट के रूप में बेहद लोकप्रिय हो चुकी है। खास बात यह है कि यह 100 फीसदी प्राकृतिक होती है और किसी भी रसायन से मुक्त रहती है जिससे यह संवेदनशील त्वचा के लिए भी सुरक्षित मानी जाती है। यही वजह है कि केमिकल बेस्ड प्रोडक्ट्स से दूरी बनाने वाले देशों में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।

बाड़मेर और आसपास का इलाका सदियों से मुल्तानी मिट्टी के लिए जाना जाता है। यहां की मिट्टी में प्राकृतिक मिनरल्स की भरपूर मात्रा होती है जो त्वचा के लिए लाभकारी मानी जाती है। यही मिनरल्स स्किन टाइटनिंग, ग्लो बढ़ाने और त्वचा को साफ रखने में कारगर होते हैं। आयुर्वेदिक उपचारों में मुल्तानी मिट्टी का उपयोग लंबे समय से किया जाता रहा है और आधुनिक बाजार भी अब इसकी क्षमता को समझने लगा है।

अमेरिका और जापान जैसे देशों में नेचुरल स्किन केयर प्रोडक्ट्स की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। वहां के उपभोक्ता केमिकल युक्त उत्पादों से दूरी बनाते हुए मिट्टी और जड़ी-बूटी आधारित उत्पादों की ओर बढ़ रहे हैं। बाड़मेर की मुल्तानी मिट्टी का टेक्सचर और उच्च गुणवत्ता वाले मिनरल्स इसे अंतरराष्ट्रीय उपयोग के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

संपूर्ण सेहत के लिए गुणकारी मुल्तानी मिट्टी एक ऐसी चीज है जिसका इस्तेमाल घरेलू नुस्खों में प्राचीन समय से ही किया जाता आ रहा है अनेक तरह के ब्यूटी व स्किन केयर प्रोडक्ट्स में भी मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग होता है। मुल्तानी मिट्टी अनेक स्किन संबंधित समस्याएं जैसे फोड़े फुंसी, दाग धब्बे, मुंहासे, झुर्रियां, ट्रेनिंग आदि दूर करने के साथ-साथ त्वचा पर बढ़ती उम्र के प्रभाव को कम करके त्वचा को जवां बनाने का भी काम करती है। अक्सर गर्मियों के मौसम में त्वचा पर होने वाली घमोरी से भी छुटकारा दिलाकर त्वचा को ठंडक पहुंचाती है। मुल्तानी मिट्टी त्वचा के

साथ-साथ बालों के लिए भी बेहद गुणकारी मानी जाती है इसे बालों में लगाने से बाल सॉफ्ट और काले बने रहते हैं।

आयुर्वेद में मुल्तानी मिट्टी का काफी महत्व बताया गया है क्योंकि आयुर्वेद में मुल्तानी मिट्टी को एक औषधीय गुणों से भरपूर औषधि माना गया है। मुल्तानी मिट्टी स्किन व बालों के साथ साथ सम्पूर्ण सेहद के लिए बेहद गुणकारी होती है। मुल्तानी मिट्टी का उपयोग व्यापक रूप से सौंदर्य और त्वचा की देखभाल या उपचार के लिए किया जाता है, साथ ही बालों संबधी समस्याओं से छुटकारा पाने और बालों को नेचुरल चमक देने के लिए भी मुल्तानी मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है।

स्किन पर मुल्तानी मिट्टी लगाने के किसी तरह से कोई दुष्प्रभाव या साइड इफेक्ट नही है इसलिए स्किन व बालों संबंधी समस्याएं दूर करने के लिए मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग सदियों से किया जाता है। यह एक ऐसी उपयोगी मिट्टी है जो स्किन को हर तरह से सुरक्षा प्रदान करती है मुल्तानी मिट्टी पाकिस्तान के मुल्तान शहर में भी पाई जाती है इसलिए ही इसका नाम मुल्तानी मिट्टी पड़ा है। ग्रामीण इलाकों में मुल्तानी मिट्टी को ''मेट'' ''गाचनी मिट्टी'' के नाम से भी जाना जाता है।

इसमें खनिज और पानी की मात्रा अधिक होती है और मुल्तानी मिट्टी में कैल्शियम, मैग्नीशियम, सोडियम जैसी धातुओं के अणु मौजूद होते हैं। इसमें मोंटमोरिललोनाइट के अलावा एटापुलगाइट और पैल्गोरोसाइट जैसे मुख्य खनिज तत्व भी शामिल होते हैं मुल्तानी मिट्टी मुख्य रूप से हाइड्रेटेड एल्युमिनियम सिलिकेट्स का एक रूप है। महिलाओं में अक्सर होने वाली खून की कमी की समस्या में भी मुल्तानी मिट्टी का इस्तेमाल किया जाता है क्योंकि यह आयरन से भरपूर होती है। पुराने समय में महिलाओं को प्रेगनेंसी के दौरान मुल्तानी मिट्टी खाने की सलाह दी जाती थी।

आजकल के युवा सुंदर दिखने और खूबसूरत त्वचा और बाल पाने के लिए तरह तरह के प्रयोग करते रहते हैं और इसके लिए अनेक ब्यूटी प्रोडक्ट या फेस पैक का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन मार्केट में मिलने वाले कई फेस पैक केमिकल युक्त होने के कारण यह फायदे की बजाय त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं और इससे त्वचा की रंगत फीकी पड़ने के साथ-साथ अनेक तरह की समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है।

इसलिए इस तरह की समस्याओं से बचने और त्वचा को खुबसूरत बनाने के लिए मुल्तानी मिट्टी को बेहद गुणकारी माना जाता है। मुल्तानी मिट्टी त्वचा से अतिरिक्त तेल, अशुद्धियाँ और मृत त्वचा कोशिकाओं को हटा देती है, जिससे त्वचा को प्राकृतिक चमक मिलती है। मुल्तानी मिट्टी में गुलाब जल या पानी मिलाकर पेस्ट तैयार करके इसे त्वचा पर लगाया जाता है।

क्या भ्रष्टाचार का समाधान केवल कानून से संभव है?

डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल

राजस्थान की राजनीति में इन दिनों राजनेताओं से जुड़े भ्रष्टाचार की चर्चा व्यापक स्तर पर है। जब राजनीति से जुड़े लोग भ्रष्टाचार में लिप्त होते है तो लोकतंत्र की क्या दशा होगी, हम अंदाजा लगा सकते है। भ्रष्टाचार आधुनिक समाज की सबसे जटिल और गंभीर समस्याओं में से एक है। यह न केवल आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है, बल्कि सामाजिक नैतिकता, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनता के विश्वास को भी कमजोर करता है। सामान्यतः यह माना जाता है कि भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए कठोर कानून और सख्त दंड ही सबसे प्रभावी उपाय हैं किंतु प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में भ्रष्टाचार का समाधान केवल कानून से ही संभव है? इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है।

निस्संदेह, कानून भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, लोकपाल, सतर्कता आयोग, सीबीआई जैसी संस्थाएं तथा न्यायपालिका की सक्रिय भूमिका भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करने और दोषियों को दंडित करने में सहायक रही हैं। कानून का भय व्यक्ति को गलत कार्य करने से रोकने में कुछ हद तक प्रभावी भी होता है। जब दंड कठोर और प्रक्रिया पारदर्शी होती है, तो भ्रष्ट आचरण की संभावना कम होती है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि कानून भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई की आधारशिला है।

लेकिन केवल कानून पर्याप्त नहीं है, यह तथ्य व्यवहार में बार-बार सिद्ध हुआ है। अनेक सख्त कानूनों के बावजूद भ्रष्टाचार समाज के विभिन्न स्तरों पर विद्यमान है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि कानून तब तक प्रभावी नहीं हो सकता, जब तक उसके क्रियान्वयन में ईमानदारी और निष्पक्षता न हो। यदि कानून लागू करने वाली संस्थाएं ही भ्रष्टाचार से ग्रस्त हों तो कानून मात्र कागजों तक सीमित रह जाता है। लंबी न्यायिक प्रक्रियाएं, राजनीतिक हस्तक्षेप और दंड में देरी भी कानून की प्रभावशीलता को कम कर देती हैं।

भ्रष्टाचार की जड़ें केवल कानूनी ढांचे की कमजोरी में नहीं बल्कि सामाजिक, नैतिक और मानसिक प्रवृत्तियों में भी निहित हैं। जब समाज में अनैतिक आचरण को मौन स्वीकृति मिलती है, रिश्वत को सिस्टम का हिस्सा मान लिया जाता है और व्यक्तिगत लाभ को सार्वजनिक हित से ऊपर रखा जाता है, तब कानून अकेला कुछ नहीं कर सकता। स्पष्ट है कि भ्रष्टाचार एक नैतिक संकट भी है। इस संदर्भ में नैतिक शिक्षा और मूल्यबोध की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। बचपन से ही ईमानदारी, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और सामाजिक कर्तव्य जैसे मूल्यों का संस्कार यदि परिवार और शिक्षा-प्रणाली के माध्यम से किया जाए तो भविष्य में भ्रष्ट आचरण की प्रवृत्ति स्वतः कम हो सकती है।

जिस समाज में ईमानदारी को सम्मान और भ्रष्टाचार को सामाजिक तिरस्कार मिले, वहां कानून को बार-बार कठोर होने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसके अतिरिक्त, प्रशासनिक सुधार भी भ्रष्टाचार-निवारण में अहम भूमिका निभाते हैं। प्रक्रियाओं का सरलीकरण, डिजिटल तकनीक का प्रयोग, ई-गवर्नेंस, सूचना का अधिकार, और पारदर्शी निर्णय-प्रणाली भ्रष्टाचार के अवसरों को कम करती है। जब मानवीय हस्तक्षेप घटता है और जवाबदेही बढ़ती है, तब रिश्वत और अनियमितताओं की गुंजाइश स्वतः सीमित हो जाती है।

जनभागीदारी और जागरूकता भी उतनी ही आवश्यक है। यदि नागरिक स्वयं भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़े हों, शिकायत दर्ज कराएं, और 'देने' के साथ-साथ 'लेने' से भी इंकार करें, तो व्यवस्था पर सकारात्मक दबाव बनता है। मीडिया, नागरिक समाज और सामाजिक आंदोलनों की सक्रियता भी भ्रष्टाचार को उजागर करने और जनमत तैयार करने में सहायक होती है। भ्रष्टाचार का समाधान केवल कानून से संभव नहीं है लेकिन कानून के बिना भी संभव नहीं है। कानून आवश्यक है, पर पर्याप्त नहीं। इसके साथ नैतिक शिक्षा, सामाजिक चेतना, प्रशासनिक सुधार, पारदर्शिता और नागरिक सहभागिता का समन्वय अनिवार्य है। जब कानून, नैतिकता और समाज तीनों एक साथ सक्रिय होते हैं, तभी भ्रष्टाचार पर वास्तविक और स्थायी नियंत्रण संभव हो पाता है।

सफलता का अँधेरा: जब सब कुछ है, पर कुछ भी नहीं [सफलता की असली परीक्षा: अकेलापन और रिश्ते]

सफलता, एक ऐसा शब्द जो सुनते ही आँखों में चमक भर देता है। मंच पर रोशनी, तालियों की गूँज, महँगी गाड़ियाँ, आलीशान घर और हर तरफ़ तारीफों की बारिश। समाज इसे केवल मुकाम नहीं, बल्कि मुकुट समझता है। जिसे यह मिल जाए, वही पूर्ण माना जाता है। लोग सफलता को सबसे बड़ी दौलत मानते हैं, और इसके लिए इंसान अपनी ज़िंदगी की हर छोटी ख़ुशी को पीछे छोड़ देता है। लेकिन इस चमकदार तस्वीर के पीछे एक अनकहा साया भी चलता है, जिसे बहुत कम लोग देखना चाहते हैं। सफलता की ऊँचाई पर पहुँचते ही इंसान एक अजीब खामोशी में खो जाता है। आवाज़ें दूर चली जाती हैं, हँसी फीकी पड़ जाती है, और भीतर एक ठंडी, सुनसान रात उतर आती है। यही वह क्षण है जब चमक के बीच अकेलेपन का अँधेरा धीरे-धीरे फैलने लगता है, और इंसान अपने भीतर की खोई हुई दुनिया से रूबरू होता है।

सोचिए उस व्यक्ति की कहानी जिसने अपने सपनों को सच करने के लिए खुद को भुला दिया। दिन काम में डूबे रहे, रातें बेचैन रहीं, रिश्ते "कल" पर टलते गए। परिवार पास था, पर दूरी महसूस होती रही; दोस्त साथ थे, पर उनकी बातें सुनी नहीं गईं। हर पल काम और लक्ष्य के लिए समर्पित रहा, और अपनी ज़रूरतों, अपनी भावनाओं, अपनी खुशियों को पीछे छोड़ दिया। आज वही व्यक्ति सफलता की ऊँचाई पर है—नाम, दाम और पहचान सब उसके पास हैं। लेकिन जब दिन की रोशनी बुझती है, तो वह अपने ही घर में अजनबी बन जाता है। फोन में अनगिनत नंबर हैं, लेकिन कोई नहीं जो दिल की हालत पूछे। सफलता ने उसे बहुत कुछ दिया, लेकिन बदले में उससे वह सब छीन लिया जो उसे इंसान बनाता था—वो अपनापन, वो सहजता, वो बिना शर्त की हँसी और रिश्तों की गर्माहट।

यह अकेलापन किसी विशेष पेशे या वर्ग तक सीमित नहीं है। पर्दे पर चमकते सितारे, मैदान में जीतते खिलाड़ी, किताबों में अमर लेखक, या प्रयोगशालाओं में इतिहास रचते वैज्ञानिक—सभी इस सन्नाटे का सामना करते हैं। जब तालियाँ थम जाती हैं, कैमरे हट जाते हैं, तब बचता है सिर्फ़ एक इंसान और उसकी खामोशी। रिश्ते अब भावनाओं से नहीं, उपलब्धियों से जुड़े होते हैं। लोग साथ चलते हैं, लेकिन कदम सफलता के साथ मिलाते हैं, इंसान के साथ नहीं। जैसे-जैसे ऊँचाई बढ़ती है, साथ चलने वाले कम होते जाते हैं। इस अकेलेपन में सबसे दर्दनाक बात यह है कि यह दिखाई नहीं देता। बाहर मुस्कान होती है, भीतर टूटन। व्यक्ति खुद को मजबूत दिखाने के लिए दर्द छिपाता है, और यही छिपा दर्द धीरे-धीरे उसे खोखला कर देता है। यादें बार-बार लौटती हैं—माँ की आवाज़, दोस्तों की हँसी, बिना मतलब की बातें। सब कुछ है, लेकिन वह अपनापन नहीं जो कभी बिना मांगे मिल जाता था। सफलता ने जीवन बड़ा कर दिया, लेकिन दिल को छोटा और सूना छोड़ दिया।

समाज इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करता। हम मान लेते हैं कि जो सफल है, वह खुश होगा। उसकी थकान नहीं देखते, उसकी चुप्पी नहीं सुनते। पैसा सुविधा दे सकता है, सम्मान दिला सकता है, लेकिन किसी का इंतज़ार नहीं कर सकता, किसी के कंधे पर सिर रखकर रो नहीं सकता। जब इंसान जीवन के अंतिम मोड़ पर पीछे मुड़कर देखता है, तो उसे उपलब्धियों से ज़्यादा रिश्तों की कमी खलती है। तब एहसास होता है कि जीत सब कुछ नहीं होती; कुछ हारें ऐसी होती हैं जो जीवन भर चुभती रहती हैं। यही वह सच है जो समाज अक्सर अनदेखा कर देता है। जीत को देखकर हम केवल चमक देखते हैं, पर उसकी असली कीमत और कीमत चुकाने वाला अकेलापन नहीं।

कल्पना कीजिए, अगर कल सुबह आपकी सारी सफलता गायब हो जाए, तो क्या कोई ऐसा होगा जो फिर भी आपके पास बैठना चाहेगा? अगर उत्तर "हाँ" है, तो आप सच में सफल हैं। और अगर "न" है, तो समझ लीजिए कि आपने मंज़िल तो पा ली, लेकिन रास्ते में खुद को खो दिया। सफलता के पीछे नहीं, बल्कि सफलता के साथ चलना ज़रूरी है—रिश्तों को थामे हुए, अपनापन बनाए रखते हुए। जीवन की असली पहचान ऊँचाई नहीं, बल्कि वे हाथ हैं जो अँधेरे में भी आपका साथ नहीं छोड़ते। यही वह सफलता है जो दिल को भर देती है, और जीवन को वास्तविक अर्थ देती है।

सफलता की चमक और अकेलेपन की खामोशी— ये दोनों जीवन के अनिवार्य हिस्से हैं। इसे समझना ही असली परिपक्वता है। जो व्यक्ति केवल मुकाम की ओर भागता है, वह कभी पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता। वही वास्तव में अमर बनता है, जो रिश्तों और अपनापन को साथ लेकर चलता है। सफलता केवल बाहरी दुनिया की मान्यता नहीं है; यह भीतर की संतुष्टि, आत्मीयता और उन रिश्तों में है, जो अँधेरे में भी आपका हाथ थामते हैं और आपका साथ नहीं छोड़ते। यही वह अनमोल सीख है, जिसे हर सच्चा सफल व्यक्ति अपने जीवन भर अपने साथ रखता है।

और सबसे अहम बात—सफलता की असली कसौटी यह नहीं कि आप कितनी ऊँचाई पर पहुँच गए, बल्कि यह कि मुश्किल समय में आपके साथ कौन खड़ा है। यही वह सच्चाई है, जिसे समझकर जीवन में स्थायित्व और सच्चा संतोष मिलता है। पैसा, शोहरत, नाम और सम्मान मायने रखते हैं, लेकिन वे अकेलेपन और दिल की खालीपन को नहीं भर सकते। इसलिए सफलता के साथ हमेशा उन लोगों को थामे रखें, जिन्होंने आपकी शुरुआत से ही आपका साथ दिया। यही वह अद्वितीय सफलता है, जो केवल आपकी चमक ही नहीं, बल्कि आपके दिल को भी रोशन करती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

न तो अनुयायी, न आक्रामक—भारत एक संतुलनकर्ता शक्ति [सभ्यता से सामर्थ्य तक: भारत और नई विश्व-व्यवस्था]

· प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

जब विश्व की राजनीतिक धुरी बदल रही है और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नए अध्याय आकार ले रहे हैं, तब भारत की आवाज़ केवल सुनी ही नहीं जाती, बल्कि वह वैश्विक दिशा को भी प्रभावित करती है। प्राचीन सभ्यतागत विरासत से ऊर्जा लेकर आधुनिक तकनीकी युग में नेतृत्व करता हुआ भारत आज 21वीं सदी के वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त पहचान स्थापित कर चुका है। वर्ष 2023 में जी20 शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी से लेकर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और स्थायी सदस्यता की निरंतर दृढ़ मांग तक, भारत का प्रभाव निरंतर विस्तार पा रहा है। यह उभार किसी एक राष्ट्र की उपलब्धि भर नहीं, बल्कि विकासशील विश्व की सामूहिक आकांक्षाओं का प्रतीक है, जहां भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ वैश्विक शांति, संतुलन और समृद्धि की ठोस आधारशिला रखती है।

भारत की विदेश नीति की आधारशिला 'वसुधैव कुटुम्बकम' के विचार पर टिकी है, जो प्राचीन भारतीय दर्शन से निकलकर आज आधुनिक कूटनीति की दिशा तय कर रहा है। यह सिद्धांत केवल विचारात्मक घोषणा नहीं, बल्कि व्यवहारिक नीति के रूप में भारत के कार्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कोविड-19 महामारी के कठिन दौर में 'वैक्सीन मैत्री' पहल के तहत 95 से अधिक देशों तक वैक्सीन पहुँचाकर भारत ने स्वयं को विकासशील विश्व का भरोसेमंद और संवेदनशील साझेदार सिद्ध किया। जलवायु संकट के बीच भारत की प्रतिबद्धता 'पंचामृत' लक्ष्यों में झलकती है, जिनमें 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा, कार्बन उत्सर्जन में कटौती और हरित विकास की स्पष्ट रूपरेखा शामिल है। पेरिस समझौते के अंतर्गत भारत ने अपने दायित्वों का पालन करते हुए विकासशील देशों के लिए न्यायपूर्ण वित्तीय सहयोग की माँग उठाई, जिससे उसकी नैतिक नेतृत्व क्षमता सामने आई। यह जिम्मेदारी पर्यावरण तक सीमित नहीं रही; संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में भारत की अग्रणी भूमिका, अफ्रीका से मध्य-पूर्व तक तैनात उसके सैनिकों के माध्यम से, वैश्विक स्थिरता को सुदृढ़ करती है। यह सब केवल परोपकार नहीं, बल्कि दूरदर्शी रणनीति है, जो भारत को वैश्विक व्यवस्था और अर्थव्यवस्था में सशक्त स्थान दिलाती है।

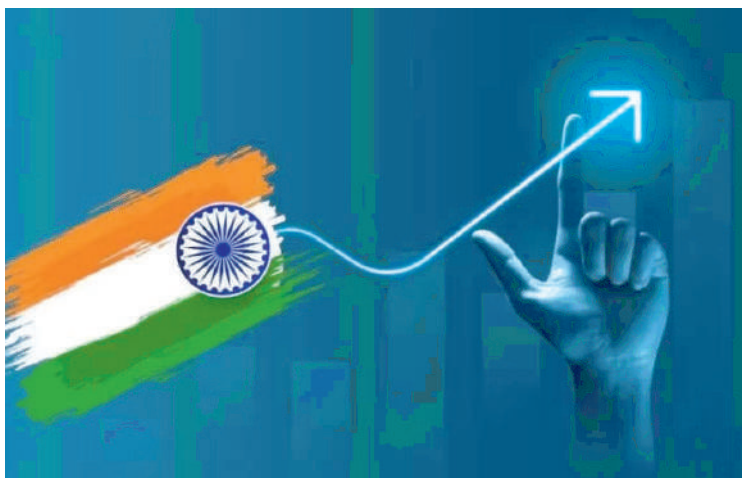

दुनिया में भारत का बढ़ता प्रभाव आर्थिक मोर्चे पर सबसे स्पष्ट है। 2025 में भारत की जीडीपी लगभग 4.2 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँच चुकी है, जो उसे विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाती है, तथा 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। यह प्रभाव विदेश नीति के माध्यम से बढ़ा है, जैसे 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के तहत एशिया-पैसिफिक क्षेत्र में साझेदारियां। क्वाड —भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया का गठबंधन, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में चीन की आक्रामकता के खिलाफ एक दीवार की तरह खड़ा है। भारत ने यहां न केवल सैन्य अभ्यास किए, बल्कि तकनीकी सहयोग से आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत किया। इसी तरह, ब्रिक्स (ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) में भारत की भूमिका विकासशील देशों की आवाज़ को मजबूत करती है, जहां न्यू डेवलपमेंट बैंक के माध्यम से इंफ्रास्ट्रक्चर फंडिंग हो रही है। लेकिन भारत की नीति अलग हटकर इसलिए है क्योंकि वह किसी एक ब्लॉक में बंधा नहीं; वह 'रणनीतिक स्वायत्तता' का पालन करता है। रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत ने तटस्थता अपनाई, लेकिन मानवीय सहायता प्रदान की, जिससे उसका प्रभाव दोनों पक्षों में बढ़ा। यह नीति न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है—जैसे रूस से सस्ता तेल आयात—बल्कि वैश्विक संतुलन बनाए रखती है।

अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा में भारत की प्रतिबद्धताएं और भूमिका भी उल्लेखनीय हैं। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की मांग करते हुए भारत ने जी4 (भारत, जापान, जर्मनी, ब्राजील) का नेतृत्व किया, जो पुरानी व्यवस्था को चुनौती दे रही है। 2025 में, जब विश्व आतंकवाद से जूझ रहा है, भारत की 'जीरो टॉलरेंस' नीति—जैसे मुंबई हमलों के बाद की कार्रवाई—वैश्विक मानक बन गई है। भारत ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) में पाकिस्तान और चीन के साथ बैठकर भी सीमा सुरक्षा पर अपनी बात रखी। लेकिन भारत का प्रभाव सॉफ्ट पावर से भी आता है—योग को अंतर्राष्ट्रीय दिवस का दर्जा दिलाना, बॉलीवुड की वैश्विक पहुंच और डिजिटल इंडिया की क्रांति। उबर और गूगल जैसे प्लेटफॉर्म्स में भारतीय इंजीनियर्स का योगदान भारत को तकनीकी सुपरपावर बनाता है। 2025 में, भारत की स्पेस प्रोग्राम—चंद्रयान-3 की सफलता के बाद आर्टेमिस समझौते में शामिल होना—वैश्विक सहयोग का प्रतीक है। यह सब मिलकर भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में पेश करता है जो न केवल प्रतिक्रिया देता है, बल्कि एजेंडा सेट करता है।

हालांकि, चुनौतियां भी कम नहीं। चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान से आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव भारत की नीति को परीक्षा में डालते हैं। लेकिन भारत की प्रतिबद्धता 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति में झलकती है, जहां बांग्लादेश और नेपाल के साथ जल समझौते और इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स हो रहे हैं। अफगानिस्तान में तालिबान के बाद भी भारत ने मानवीय सहायता जारी रखी, जो उसकी दीर्घकालिक दृष्टि दिखाती है। वैश्विक व्यापार में भारत की भूमिका भी बढ़ी है—आरसीईपी से बाहर रहकर भी इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क में शामिल होना। यह नीति आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है, जहां 'मेक इन इंडिया' वैश्विक निवेश आकर्षित कर रहा है। 2025 तक, भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था—यूपीआई की वैश्विक मान्यता—विकासशील देशों के लिए मॉडल बन गई है। लेकिन क्या यह प्रभाव स्थायी है? हां, क्योंकि भारत की नीति समावेशी है—महिलाओं की सशक्तिकरण से लेकर अफ्रीकी संघ को जी20 में शामिल कराना, जो वैश्विक दक्षिण की आवाज़ को मजबूत करता है।

भारत का बढ़ता प्रभाव सिर्फ आंकड़ों में नहीं, बल्कि वैश्विक मानसिकता में बदलाव ला रहा है। जहां पश्चिमी शक्तियां द्विध्रुवीय दुनिया चाहती हैं, भारत बहुपक्षीयता की वकालत करता है। उसकी प्रतिबद्धताएं—शांति, विकास और न्याय, न केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित हैं, बल्कि पूरी मानवता के लिए हैं। 2025 में, जब विश्व अनिश्चितताओं से घिरा है, भारत की भूमिका एक प्रकाश स्तंभ की तरह है, जो अंधेरे में रास्ता दिखाता है। यह अलग हटकर इसलिए है क्योंकि भारत न तो अनुयायी है और न ही आक्रामक; वह एक संतुलनकर्ता है, जो अपनी प्राचीन बुद्धिमत्ता से आधुनिक चुनौतियों का सामना करता है। आने वाले वर्षों में, भारत का प्रभाव और बढ़ेगा, और दुनिया इसे न केवल स्वीकार करेगी, बल्कि उससे प्रेरणा लेगी। यह भारत की कहानी है—एक उभरते हुए महाशक्ति की, जो विश्व को एक बेहतर जगह बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

क्या है ये SIR ?

विवेक रंजन श्रीवास्तव

भारत निर्वाचन आयोग (ECI) द्वारा चलाई जा रही SIR प्रक्रिया मतदाता सूची को शुद्ध और अद्यतन बनाने का एक महत्वपूर्ण कदम है जो फर्जी वोटरों को हटाने और असली मतदाताओं की पहचान सुनिश्चित करने पर केंद्रित है।

SIR का पूरा नाम Special Intensive Revision है, जिसे हिंदी में विशेष गहन पुनरीक्षण कहा जाता है। यह चुनाव आयोग की एक नियोजित प्रक्रिया है जिसमें मतदाता सूची का ब्लॉक लेवल ऑफिसर (BLO) घर-घर जाकर मतदाता सूची की जांच करते हैं, नाम, पता, उम्र, परिवार के सदस्यों का सत्यापन करते हैं। इसका मुख्य लक्ष्य डुप्लीकेट एंट्री, मृत व्यक्तियों के नाम हटाना , शिफ्ट हुए मतदाताओं या अवैध प्रविष्टियों को हटाना तथा नए बने 18+ उम्र के मतदाताओं को जोड़ना है।

सर का इतिहास..

SIR कोई नई योजना नहीं है, बल्कि दशकों पुरानी प्रक्रिया है जो चुनाव कानून के तहत हर चुनाव से पहले या आवश्यकता पर पहले भी की जाती रही है। बिहार में हाल ही में इसे सफलतापूर्वक लागू किया गया जहां 64 लाख फर्जी वोटर हटाए गए और इससे वोटिंग प्रतिशत 10% बढ़ा।

वर्ष 2025 में चुनाव आयोग ने इसे पूरे देश में विस्तार दिया, खासकर 23 साल बाद बड़े पैमाने पर यह हो रहा है लेकिन कुछ राज्य जैसे पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में विपक्ष ने इसका विरोध किया तथा सुप्रीम कोर्ट में इस व्यवस्था को चुनौती दी।

SIR प्रक्रिया का पहला आधिकारिक कार्यान्वयन सन 1952 में हुआ था जब भारत के पहले लोकसभा चुनाव हुए और मतदाता सूची को गहन पुनरीक्षण की आवश्यकता पड़ी । उस समय भारत निर्वाचन आयोग जो 1950 में स्थापित हुआ था, ने इसकी जिम्मेदारी ली थी । तत्कालीन मुख्य निर्वाचन आयुक्त सुकुमार सेन के नेतृत्व में मतदाता सूची शुद्ध करने का यह अभियान संपन्न हुआ था। इसके बाद यह प्रक्रिया समय-समय पर, विशेषकर बड़े चुनावों से पहले, जारी रही जैसे 2002-2004 के बीच पूरे देश में बड़े पैमाने पर सर को क्रियान्वित किया गया था।

SIR का तरीका..

BLO या SIR टीम घर घरआती है, अपना पहचान

पत्र दिखाती है । आप परिवार के वोटिंग लिस्ट के सदस्यों के नाम, पता, परिवार विवरण, दस्तावेज (आधार, राशन कार्ड, बिजली बिल आदि दस्तावेज से) सत्यापित करवाते हैं। फॉर्म 6 (नया पंजीकरण), फॉर्म 7 (नाम हटाना), फॉर्म 8 (सुधार) के फार्म भरवाए जाते हैं।

पारदर्शिता के लिए परिवार वंशावली प्रमाण जरूरी होता है।

बिहार मॉडल पर आधारित, यह वोटर लिस्ट सत्यापन के द्वारा वर्तमान जनसांख्यिकी (शहरीकरण, पलायन) के अनुरूप सही वोटर लिस्ट बनाता है।

SIR का औचित्य..

लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदाता सूची की शुद्धता अनिवार्य है, क्योंकि गलत वोटर चुनावी निष्पक्षता बाधित करते हैं।

SIR से मृत , पलायन कर चुके वोटर लिस्ट से समाप्त होते हैं, यदि कोई घुसपैठिए खासकर विदेशी सीमा से जुड़े प्रदेशों में किसी तरह आ गए हैं तो दस्तावेजों के अभाव में उनकी वोटिंग का गलत अधिकार रोक दिया जाता है । भारत के वास्तविक नागरिक के वोटिंग अधिकार सुरक्षित रहते हैं । वोटिंग प्रतिशत बढ़ जाता है, क्योंकि बोगस नाम कट जाने से वोटिंग लिस्ट यथार्थ और अद्यतन बन जाती है। विपक्षी आशंकाओं के बावजूद, यह एक रूटीन अभियान है जो वार्षिक संशोधन से आगे जाकर वोट लिस्ट की गहन सफाई सुनिश्चित करता है, ताकि हर योग्य वोट का अधिकार बरकरार रहे।

विवेक रंजन श्रीवास्तव
न्यूयॉर्क से

रामानुजन: वह आदमी जो अनंत को जानता था

● डॉ विजय गर्ग

श्रीनिवासा रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर, 1887 को इरोड, तमिलनाडु में हुआ था और उनका पालन-पोषण कुंबकोणम में हुआ। छोटी उम्र से ही उन्होंने संख्याओं के लिए असाधारण योग्यता दिखाई। जबकि अन्य बच्चों ने तालिकाओं को याद किया, रामानुजन ने सहज रूप से अनंत श्रृंखलाओं, भिन्नों और संख्यात्मक पैटर्न का पता लगाया।

श्रीनिवास रामानुजन सिर्फ एक गणितज्ञ नहीं थे; वह एक घटना थी। औपनिवेशिक भारत में एक मामूली परिवार में जन्मे, जिसमें औपचारिक प्रशिक्षण बहुत कम था और उन्नत गणितीय साहित्य तक लगभग कोई पहुंच नहीं थी, रामानुजन ने इतने मौलिक और गहन विचार उत्पन्न किए कि वे एक सदी से भी अधिक समय बाद गणित को प्रभावित करते रहे। उनकी जीवन कहानी - प्रतिभा, संघर्ष और अधूरे वादे की - ने उन्हें स्थायी खिताब दिलाया है ₹वह आदमी जो अनंतता को जानता था

प्रारंभिक जीवन: कठिनाई के बीच प्रतिभा

श्रीनिवासा रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर, 1887 को इरोड, तमिलनाडु में हुआ था और उनका पालन-पोषण कुंबकोणम में हुआ। छोटी उम्र से ही उन्होंने संख्याओं के लिए असाधारण योग्यता दिखाई। जबकि अन्य बच्चों ने तालिकाओं को याद किया, रामानुजन ने सहज रूप से अनंत श्रृंखलाओं, भिन्नों और संख्यात्मक पैटर्न का पता लगाया।

हालाँकि, उनकी प्रतिभा कठिनाई के साथ आई। रामानुजन ने पारंपरिक शिक्षा में संघर्ष किया क्योंकि उन्होंने अन्य विषयों की उपेक्षा करते हुए लगभग विशेष रूप से गणित पर ध्यान केंद्रित किया। परिणामस्वरूप, वह कॉलेज की परीक्षाओं में असफल हो गया और छात्रवृत्ति खो दी। गरीबी ने उनकी युवावस्था को घेर लिया, जिससे उन्हें जीवित रहने के लिए मित्रों और शुभचिंतकों पर निर्भर रहना पड़ा, जबकि उन्होंने हजारों मूल गणितीय परिणामों से नोटबुक भर दीं।

स्व-शिक्षित और आत्म-संचालित

रामानुजन की गणितीय दुनिया काफी हद तक स्व-निर्मित थी। उन्होंने जिन कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया उनमें से एक थी जी.एस. शुद्ध और अनुप्रयुक्त गणित में प्राथमिक परिणामों का सारांश सूत्रों के इस कंकाल संकलन से, रामानुजन ने गहरी अंतर्दृष्टि का निर्माण किया - अक्सर बिना किसी प्रमाण के - ऐसे परिणामों तक पहुंचने में जिन्हें सत्यापित करने में प्रशिक्षित गणितज्ञों को वर्षों लग गए।

उनका मानना था कि उनके कई विचार सहज रूप से उनके पास आए, कभी-कभी उन्होंने उन्हें देवी नामगिरी की दिव्य प्रेरणा के लिए जिम्मेदार ठहराया, जिनकी वे पूजा करते थे। चाहे रहस्यमय हो या मानसिक, उनकी अंतर्ज्ञान आश्चर्यजनक रूप से सटीक साबित हुई।

वह पत्र जिसने सब कुछ बदल दिया

1913 में, रामानुजन ने जी.एच. को एक अब पौराणिक पत्र लिखा। हार्डी, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में एक अग्रणी गणितज्ञ। पत्र में सौ से अधिक प्रमेय थे - कई पूरी तरह से नए।

हार्डी ने तुरंत रामानुजन की प्रतिभा को पहचान लिया, प्रसिद्ध रूप से कहा कि उनकी तुलना साधारण गणितज्ञों से करना एक सितारे की तुलना मोमबत्ती से करने जैसा था। हार्डी के सहयोग से रामानुजन ने 1914 में इंग्लैंड की यात्रा की, जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

कैम्ब्रिज वर्ष: मान्यता और संघर्ष

कैम्ब्रिज में, रामानुजन ने हार्डी के साथ सहयोग किया और निम्नलिखित में अभूतपूर्व कार्य किया:

संख्या सिद्धांत
अनंत श्रृंखला
निरंतर अंश
मॉड्यूलर रूप
संख्याओं के विभाजन

शैक्षणिक सफलता के बावजूद इंग्लैंड में जीवन कठिन था। रामानुजन ने ठंडी जलवायु, अपरिचित भोजन, नस्लवाद और अलगाव के साथ संघर्ष किया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उनका स्वास्थ्य खराब हो गया, और वे गंभीर बीमारी से पीड़ित थे, जो संभवतः कुपोषण और तनाव के कारण बदतर हो गई थी।

फिर भी बीमारी के दौरान भी उनकी रचनात्मकता फीकी नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध प्रकरण में संख्या 1729 शामिल है, जिसे रामानुजन ने दो अलग-अलग तरीकों से दो घनों के योग के रूप में व्यक्त करने योग्य सबसे छोटी संख्या के रूप में पहचाना — अब हार्डी विक्टररामनुजान संख्या के रूप मे जाना जाता है।

भारत लौटें और शीघ्र मृत्यु

रामानुजन गंभीर रूप से बीमार होकर 1919 में भारत लौट आए। सिर्फ एक साल बाद, 26 अप्रैल, 1920 को उनका 32 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

अपने छोटे से जीवन में, उन्होंने लगभग 4,000 गणितीय परिणाम प्रस्तुत किए, जिनमें से कई अपने समय से दशकों आगे थे। आज भी गणितज्ञ उनके काम की गहराई को उजागर करना जारी रखते हैं, विशेष रूप से उनकी अप्रकाशित नोटबुक से।

स्थायी विरासत

रामानुजन के विचार अब आधुनिक गणित और भौतिकी में केंद्रीय हैं। उनके काम का अनुप्रयोग निम्नलिखित में है:

क्रिप्टोग्राफी
कंप्यूटर विज्ञान
ब्लैक होल भौतिकी
स्ट्रिंग सिद्धांत

भारत में 22 दिसंबर को उनके सम्मान में राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उनके जीवन ने रॉबर्ट कनिगेल द्वारा प्रशंसित पुस्तक ₹द मैन हू नॉव इन्फिनिटी₹ और बाद में एक फिल्म रूपांतरण को प्रेरित किया, जिससे उनकी उल्लेखनीय कहानी वैश्विक दर्शकों तक पहुंची।

निष्कर्ष

श्रीनिवास रामानुजन का जीवन हमें याद दिलाता है कि प्रतिभा कहीं भी उभर सकती है - विशेषाधिकार से अछूती, जिज्ञासा से प्रेरित और जुनून से संचालित। यद्यपि उनका जीवन संक्षिप्त था, फिर भी उनके योगदान का प्रभाव अनंत है। वह मानव क्षमता का प्रतीक बना हुआ है, यह साबित करता है कि गणित की भाषा संस्कृति, भूगोल और परिस्थिति से परे है।

रामानुजन ने सिर्फ अनंत का अध्ययन नहीं किया - उन्होंने इसे जीया।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात गणितज्ञ स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब -152107

भविष्य उन राष्ट्रों के लिए खुला है जो अपनी खुफिया जानकारी स्वयं बनाते हैं, और भारत उस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है

डॉ विजय गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वैश्विक प्रगति को नया रूप दे रही है, और इस परिवर्तन के केंद्र में लार्ज लैंग्वेज मॉडल या एलएलएम है। मानव मन के विपरीत, जो एक विचार से शुरू होता है और फिर सही शब्दों की खोज करता है, एलएलएम विपरीत दिशा में सीखता है। यह अनगिनत विषयों पर अरबों वाक्य पढ़ता है, मनुष्य के संवाद करने के तरीके में पैटर्न की खोज करता है, और धीरे-धीरे एक ऐसी प्रणाली बनाता है जो मानव तर्क से मिलते-जुलते तरीकों से प्रतिक्रिया दे सकती है। सरल शब्दों में, एक एलएलएम मानवता के लिखित ज्ञान का संपीड़ित संस्करण बन जाता है।

यह विचार एक लंबे समय से चले आ रहे सिद्धांत को दर्शाता है। समाज तेजी से बढ़ता है जब ज्ञान को बार-बार पुनः खोजने के बजाय उसे साझा, पुनः उपयोग और विस्तारित किया जाता है। एलएलएम ज्ञान को तुरंत सुलभ और पुनः प्रयोज्य बनाकर हमारी सामूहिक समझ को गुणा करते हैं। लेकिन इस बुद्धि की सच्ची नींव भाषा है। मानव सभ्यता कानून, संस्कृति, मूल्यों, विज्ञान, यादों और पहचान सहित सभी महत्वपूर्ण चीजों को भाषा के अंदर संग्रहीत करती है। जब एआई किसी भाषा को गहराई से सीखता है, तो वह उसे भी सीख लेता है

उस भाषा के पीछे विश्वदृष्टि है। इससे भाषा-आधारित एलएलएम किसी भी समुदाय के लिए आवश्यक हो जाता है जो एआई युग में प्रासंगिक बने रहना चाहता है।

भारत को यहां एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। एआई के बारे में सार्वजनिक बातचीत मुख्य रूप से छवि जनरेटर, वीडियो निर्माण ऐप्स, फिल्टर, टेम्पलेट और त्वरित सामग्री सिस्टम जैसे उपकरणों पर केंद्रित होती है। ये उपकरण केवल एआई की दृश्यमान परत को दर्शाते हैं, वह भाग जिसके साथ लोग बातचीत करते हैं। इन उपकरणों के नीचे वास्तविक इंजन - एलएलएम - है। यह एलएलएम है जो तर्क, ज्ञान, संदर्भ, समझ और तार्किक संरचना प्रदान करता है। यदि कोई राष्ट्र केवल एआई उपकरणों को संचालित करना सीखता है, तो वह उपयोगकर्ता ही रहेगा। यदि कोई राष्ट्र उन उपकरणों के पीछे खुफिया जानकारी बनाता है, तो वह नेता बन जाता है। एआई युग में, नेतृत्व

यह उन लोगों का होगा जो बुनियादी मॉडल बनाते हैं, न कि उन लोगों का जो केवल दूसरों द्वारा निर्मित अनुप्रयोगों का उपयोग करते हैं।

यह भारतीय भाषाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। तमिलएआई परियोजना के संस्थापक के रूप में, मुझे अक्सर इस प्रश्न का सामना करना पड़ता है: यदि चैटजीपीटी और जेमिनी जैसी वैश्विक प्रणालियाँ पहले से ही तमिल में उत्तर देती हैं, तो हमें अपने स्वयं के तमिल मॉडल क्यों बनाने चाहिए?

यह एक उचित संदेह है, लेकिन इसका उत्तर भारत के तकनीकी भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

जबकि वैश्विक प्रणालियां तमिल पाठ को आउटपुट कर सकती हैं, उन उत्तरों के नीचे की बुद्धिमत्ता अंग्रेजी-भारी डेटा और पश्चिमी तार्किक संरचनाओं द्वारा आकारित होती है। ये मॉडल ज्यादातर अंग्रेजी बोलने वाले समाजों से सीखते हैं, उनके विचार पैटर्न को आत्मसात करते हैं, और फिर अंतिम आउटपुट को तमिल में परिवर्तित कर देते हैं। लिपि हमारी है, लेकिन शब्दों के पीछे का मन नहीं। इसका परिणाम तमिल में एक विदेशी संज्ञानात्मक ढांचे के माध्यम से व्यक्त किया जाता है - देशी तर्क के बजाय अनुवाद।

यह अंग्रेजी तर्क का तमिल अनुवाद है, न कि तमिल तर्क स्वयं।

तमिल की प्राचीनता और गहराई वाली भाषा के लिए यह पर्याप्त नहीं है। जो भाषा केवल आउटपुट परत पर ही जीवित रहती है, उसे अपना प्राकृतिक विश्वदृष्टि और सांस्कृतिक तर्क खोने का खतरा रहता है। एक सभ्यता के ज्ञान की रक्षा करने के लिए, भाषा को खुफिया परत के भीतर ही मौजूद होना चाहिए। केवल तभी जब कोई एलएलएम तमिल को उसके मूल में सीखता है, जिसमें उसका व्याकरणिक तर्क, दार्शनिक आधार, मुहावरे, कविता, इतिहास और सांस्कृतिक तर्क शामिल हैं, तब ही एआई युग में एक सोच प्रणाली के रूप में तमिल जीवित रह सकता है।

यह परिप्रेक्ष्य वैश्विक एआई नीति को प्रभावित कर रहा है। सांस्कृतिक संप्रभुता की रक्षा के लिए यूरोप यूरोपीय भाषाओं के लिए एलएलएम का निर्माण कर रहा है। चीन में कई राष्ट्रीय एलएलएम हैं। जापान और कोरिया में सरकार द्वारा वित्तपोषित भाषा मॉडल हैं। ये देश मानते हैं कि मातृभाषा एआई के बिना, तकनीकी और सांस्कृतिक निर्भरता अपरिहार्य हो जाती है।

भारत भी इसी तरह के चौराहे पर खड़ा है। तमिल, हिंदी, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली और अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं में स्वदेशी एलएलएम होना चाहिए जो उनकी अपनी ज्ञान प्रणालियों से निर्मित हों। तभी भारत विदेशी तकनीक के उपयोगकर्ता होने से वैश्विक खुफिया जानकारी का निर्माता बन सकता है।

तमिल एआई उस दिशा में एक प्रारंभिक कदम है, लेकिन बड़ा मिशन राष्ट्रीय है। भारत के पास अपनी एआई नींव बनाने की प्रतिभा, दृष्टि और सांस्कृतिक गहराई है। यदि हम अपनी भाषाओं में निवेश करते हैं और अपने स्वयं के एलएलएम बनाते हैं, तो हम न केवल एआई युग में भाग ले सकते हैं बल्कि आत्मविश्वास के साथ इसका नेतृत्व भी कर सकते हैं। भविष्य उन राष्ट्रों के लिए खुला है जो अपनी खुफिया जानकारी स्वयं बनाते हैं, और भारत उस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

एआई चैटबॉट्स संकट में किशोरों के लिए जोखिम भरा हो सकता है

डॉ विजय गर्ग

डिजिटल दुनिया आज किशोरों के जीवन का एक बड़ा हिस्सा बन चुकी है। पढ़ाई हो, दोस्ती, या भावनात्मक समस्याएँ—हर सवाल का जवाब उन्हें ऑनलाइन मिल जाता है। इसी कड़ी में AI चैटबॉट्स बहुत लोकप्रिय हो गए हैं। ये बॉट्स तुरंत जवाब देते हैं, दोस्ताना भाषा अपनाते हैं और 24 घंटे उपलब्ध रहते हैं। लेकिन जब बात मानसिक स्वास्थ्य या संकट की स्थिति में पड़े किशोरों की हो, तो AI चैटबॉट्स उतने सुरक्षित या भरोसेमंद नहीं साबित होते।

किशोर और संकट—क्यों बढ़ रहा है चैटबॉट्स पर भरोसा?

किशोर उम्र भावनाओं का उतार–चढ़ाव लेकर आती है।

घर या स्कूल में तनाव
दोस्तों से दूरी
आत्म-संदेह या दबाव
सोशल मीडिया की तुलना

ऐसे समय में किशोर ऐसे स्थान ढूँढते हैं जहाँ वे बिना जजमेंट के अपनी बात रख सकें।

AI उनसे बिना नाराज़ हुए, बिना पूछताछ किए बात करता है—यही उन्हें आकर्षित करता है।

लेकिन यहीं सबसे बड़ा खतरा छुपा है।

AI चैटबॉट्स क्यों हो सकते हैं खतरनाक?

1. गलत या असंगत सलाह

AI पेशेवर डॉक्टर या काउंसलर नहीं है।

संकट की स्थिति में वह गंभीर समस्याओं को भी सामान्य मान सकता है।

कभी–कभी वह ऐसी सलाह दे देता है जो स्थिति को और अधिक गंभीर बना सकती है।

2. भावनाओं को समझने की सीमित क्षमता

किशोरों की भाषा—इशारे, व्यंग्य, या छिपे हुए संकेत—AI हमेशा ठीक से नहीं पकड़ पाता।

कभी–कभी आत्महत्या जैसे खतरनाक संकेत भी AI नजरअंदाज कर सकता है।

3. डेटा गोपनीयता का जोखिम

किशोर अक्सर अपनी निजी जानकारी चैटबॉट्स के साथ साझा कर देते हैं।

यह डेटा कहाँ जाता है, कौन देखता है, और कैसे इस्तेमाल होगा—इस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं होता।

4. गलत सुरक्षा का भ्रम

AI के दोस्ताना व्यवहार से किशोर को लगता है कि कोई उसे समझ रहा है।

पर वास्तविकता यह है कि AI के पास

संवेदनाएँ नहीं
संवेदना (एम्पैथी) नहीं
मानव निर्णय क्षमता नहीं

यह भरोसा हानिकारक साबित हो सकता है।

5. संकट को बढ़ाने की संभावना

अगर किशोर निराश, अकेला या आघात से गुजर रहा हो और AI की प्रतिक्रिया कठोर, ठंडी या तकनीकी हो जाए, तो भावनात्मक नुकसान और बढ़ सकता है

किशोर मानसिक स्वास्थ्य—AI से अलग मानवीय समझ आवश्यक

संकट में पड़े किशोरों को

सहानुभूति,
मानवीय स्पर्श,
भरोसा
और
भावनात्मक सुरक्षा
की आवश्यकता होती है।

ये सभी गुण केवल इंसानों में होते हैं—माता-पिता, शिक्षकों, या प्रशिक्षित काउंसलरों में।

तो AI चैटबॉट्स का क्या स्थान है?

AI सहायक भूमिका निभा सकता है—

जानकारी देना
संसाधनों की सूची देना
अभ्यास या सुझाव बताना

लेकिन वह किसी भी स्थिति में व्यावसायिक मानसिक स्वास्थ्य सहायता का विकल्प नहीं बन सकता।

किशोरों की सुरक्षा के लिए क्या जरूरी है?

1. डिजिटल शिक्षा

किशोरों को यह समझाना कि AI क्या है, उसकी सीमाएँ क्या हैं, और कब मानव मदद जरूरी होती है।

2. माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका

किशोरों की ऑनलाइन गतिविधि पर नज़र रखना, उनसे खुलकर बात करना और भरोसे का वातावरण देना।

3. सुरक्षित AI डिजाइन की मांग

कंपनियों को ऐसे चैटबॉट्स बनाने की आवश्यकता है जो संकट संकेत पहचान कर तुरंत

हेल्पलाइन नंबर सुझाएँ
पेशेवर सहायता की ओर दिशा दें
संवेदनशील बातचीत से बचें

4. नियमित निगरानी और नियंत्रण

किशोरों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ऐप्स में सुरक्षा सेटिंग, समय सीमाएँ और फिल्टर जरूरी है

निष्कर्ष: AI मददगार है, लेकिन संकट में मानव ही सहारा

AI चैटबॉट्स तेज, समझदार और उपलब्ध जरूर हैं, लेकिन वे मानव भावनाओं की गहराई में उतरने में सक्षम नहीं।

किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के लिए हमें यह मानना पड़ेगा कि तकनीक सहायक है—उपचार नहीं।

किशोरों के संकट में भावनाओं का महत्व सबसे अधिक होता है, और इसमें किसी मानव की भूमिका को कोई AI कभी नहीं बदल सकता।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

वक्त के साथ बदले सुंदरता के पैमाने

डॉ विजय गर्ग

बॉलीवुड में वक्त के साथ सौंदर्य के मापदंड बदल गये हैं। कभी मधुबाला की ब्यूटी की तारीफ होती थी , हेमा मालिनी को स्वप्न सुंदरी कहा जाता था। आज कियारा आडवाणी या जाह्नवी कपूर को किसी दूसरी वजह से सुंदरियों में स्थान मिलता है। अब हॉटनेस सिर्फ चेहरे से नहीं मापी जा रही। हीरोइन की किस भाव-भंगिमा पर दर्शक मुग्ध होंगे, बताना मुश्किल है।

बॉलीवुड की बात जाने दें, तो आम जिंदगी में भी महिला की सुंदरता का मापदंड बहुत बदल चुका है। बॉलीवुड में कभी मोम की मूर्ति मधुबाला के जिस अप्रतिम सौंदर्य की तारीफ होती थी, उसका पैमाना काफी बदल चुका है। इसका सबसे बड़ा कारण दृष्टि में परिवर्तन है।

आकर्षक लगने का तरीका

अब जैसे कि कभी हेमा मालिनी को जिस वजह से स्वप्न सुंदरी कहा जाता था, आज कियारा आडवाणी या जाह्नवी कपूर को किसी दूसरी वजह से सुंदरियों के बीच स्थान दिया जाता है। हालांकि, इसके लिए पुरुषों पर कोई आरोप लगाना सही नहीं होगा। बल्कि हॉट इज़ द न्यू कूल... और यह हॉटनेस अब सिर्फ चेहरे को देखकर नहीं मापी जा रही है। आखिर सुंदरी की किस भाव-भंगिमा पर दर्शक मुग्ध होंगे, यह बताना मुश्कि ल है। कभी माधुरी दीक्षित, रानी मुखर्जी या काजोल के नख-शिख सौंदर्य पर दर्शक मुग्ध थे। पर आज वे किसी नई तारिका का सौंदर्य देख मोहित होते हैं।

दीपिका नहीं, जाह्नवी के नयन

'तुम्हारी आंखें मेरे मन में बहुत कुछ चित्रित कर जाती हैं' उन्हें देखकर किसी सौंदर्यप्रेमी दर्शक की प्रतिक्रिया को नज़रअंदाज़ करना बिल्कुल मुमकिन नहीं। ज़रा फ्लैशबैक पर जाएं, तो अभिनेत्री दीपिका की डेब्यू फिल्म में उन पर फिल्माया गया एक गाना है — 'आंखों में तेरी अजब-सी अदाएं हैं।' पर आज यही बात जाह्नवी कपूर के बारे में कही जाती है। पिछले दिनों रिलीज़ 'परम सुंदरी ' में उनकी आंखों ने सिने-रसिकों को आकर्षित करती हैं।

बेबो का अट्रैक्टिव लुक

कभी युवा दर्शक बेबो के ज़ीरो फिगर के कायल थे। पर आज तारिका रश्मिका मंधाना को कुछ इसी दृष्टि से देखते हैं। साउथ की अभिनेत्री रश्मिका हिंदी फिल्मों में भी पांव फैला रही हैं। वह अलग-अलग फिल्मों में तरह-तरह के लुक में नजर आई हैं- चाहे शुरुआती दौर में उनका मोटापा भरा सौंदर्य हो या ट्रेंड पलट देने वाला ज़ीरो साइज़ फिगर। 'पुष्पा-1' के बाद से हर फिल्म में उनके रूप का एक अलग नज़ारा रहा है। पिछले दिनों रिलीज़ 'थामा ' में नज़र आईं।

फैशन सुंदरी सोनम

वैसे कई तारिकाएं ऐसी हैं, जिनके किसी खास अंदाज़ के बारे में चर्चा करना बेमानी है। उनके सौंदर्य में उनका फैशन लुक ज़्यादा हावी रहा। इसकी एक मिसाल अभिनेत्री सोनम कपूर हैं। हालांकि नए दौर की कृति सैनन, कियारा, सारा अली आदि में एक्ट्रेस के गुण हैं।

कैटरीना की दर्शनीय सुंदरता

उनके कटि-प्रदेश के सौंदर्य के सभी क़ायल थे। तब आलिया भट्ट, परिणीति चोपड़ा सहित कई तारिकाओं ने कैटरीना के फिगर को अपना आदर्श माना था। इसलिए 'शरीर-चर्या' के तमाम टिप्स के लिए आज भी कैट का उदाहरण दिया जाता था। कमर का सौंदर्य भी इतना दर्शनीय हो सकता है, यह कैट ने बार-बार प्रमाण किया है। देखा जाए तो इन दिनों ज्यादातर तारिकाओं में वह सौंदर्य-बोध नहीं है।

श्यामल रूपसी प्रियंका

अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा भले ही बॉलीवुड से दूर जा चुकी हों, पर उनके इस श्यामल सौंदर्य पर हॉलीवुड मुग्ध होगा, यह किसी ने नहीं समझा था। उनके होंठों में हमेशा खामोशी तोड़ने वाला सुर मौजूद रहता है।

अनुष्का के बालों की महिमा

अभिनेत्री अनुष्का ने अपने सौंदर्य की बारीकियों को बहुत अच्छी तरह से पकड़ रखा है। एक दौर था, जब वह होठों का इम्प्लांट करवाती थीं, तो प्रशंसकों का दिल टूट जाता था। मगर कभी उनके केशों के मायावी लोक में उनके प्रशंसक गुम हो जाते थे, जिसे उन्होंने आज भी बखूबी मेंटेन कर रखा है। 'रब ने बना दी जोड़ी' के सही अनुपात में कट लंबे स्ट्रेट बाल हों या 'बॉम्बे वेलवेट ' का अपडू हेयरस्टाइल — अनुष्का के बाल उड़ने पर पुरुषों के मन में खलबली मच जाती थी। एक बातचीत के दौरान अनुष्का का कहना था, ' मैं हमेशा बालों की लंबाई को ठीक रखने की कोशिश करती हूं। लटों को समय पर छांटना मुझे बहुत पसंद है।'

यह तो था रूपहले परदे की कुछ तारिकाओं का रूप-रहस्य। हालांकि आज भी ऐसे ढेरों सिने-रसिक हैं, जो नए दौर की हीरोइन में मधुबाला, मीना कुमारी, वहीदा रहमान, वैजयंती माला, सायरा बानो, पद्मिनी जैसी हीरोइनों की सुंदरता को देखना चाहते हैं — जो नए संदर्भ में एक निरर्थक सोच लगती है।

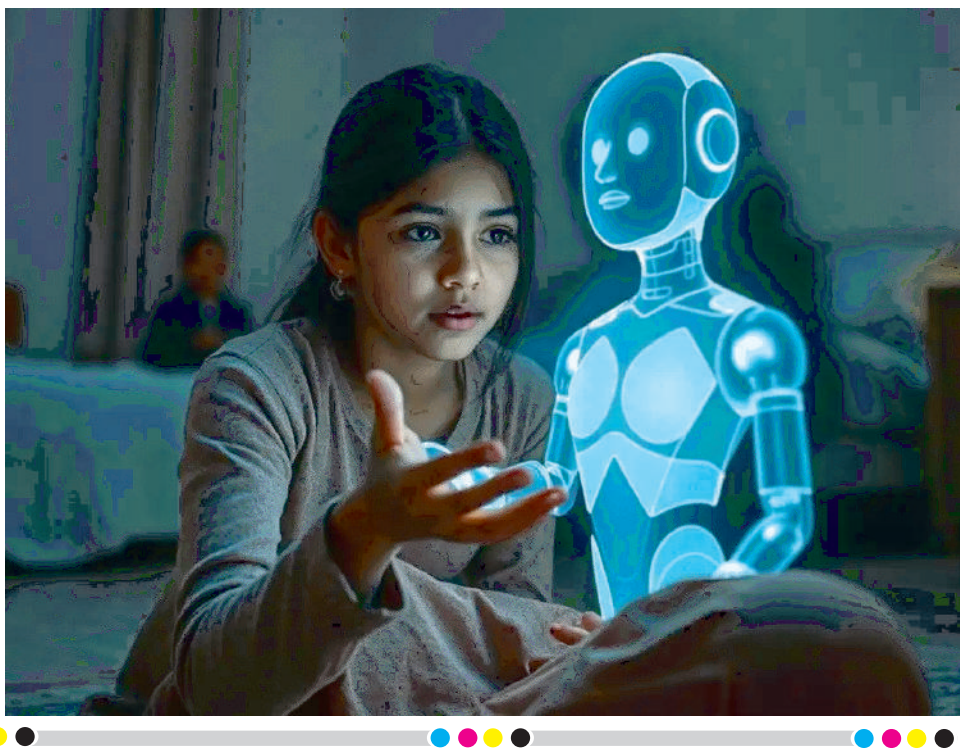

विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठानको डिकोड करना: भविष्य की चुनौतियाँ और अतीत की विरासत के संदर्भ में (शिक्षक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में)

परिवहन विशेष न्यूज

प्रस्तावित 'विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान' विधेयक भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों की संरचना में एक युगांतरकारी बदलाव का संकेत है। यह विधेयक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद जैसे मौजूदा निकायों को हटाकर एक एकल, व्यापक नियामक प्राधिकरण की स्थापना का प्रस्ताव करता है।

वि बी एस ए विधेयक की एक प्रमुख विशेषता बहुविषयक और समग्र शिक्षा पर इसका ज़ोर है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 का मुख्य विज़न रहा है। इस नए ढांचे के तहत, मानक परिषद (विकसित भारत शिक्षा मानक परिषद), नियामक परिषद (विकसित भारत शिक्षा विवियन परिषद) और प्रत्यायन परिषद (विकसित भारत शिक्षा गुणवत्ता परिषद) के बीच समन्वित कामकाज को पारंपरिक अनुशासनात्मक बाधाओं को तोड़ने और विभिन्न क्षेत्रों के बीच वैचारिक जुड़ाव को प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

हालाँकि नियामक सरलीकरण और गुणवत्ता आश्वासन के उद्देश्य आकर्षक लगते हैं, लेकिन इस विधेयक ने शैक्षणिक गलियारों में एक गंभीर बहस छेड़ दी है। ये चिंताएं केवल प्रक्रियात्मक नहीं हैं, बल्कि शिक्षा के दार्शनिक और संरचनात्मक आधार पर प्रहार करती हैं—विशेष रूप से 'शिक्षक शिक्षा' के क्षेत्र में, जो पूरी शिक्षा व्यवस्था की नींव है।

I. भविष्य की चिंताएं: आगे की राह

1. केंद्रीयकरण बनाम शैक्षणिक संघवाद

वीबीएसए के तहत नियामक शक्ति एक केंद्रीय रूप से नियुक्त निकाय में केंद्रित होगी। शिक्षा 'समवर्ती सूची' का विषय है, जहाँ राज्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक शिक्षा, जो स्थानीय भाषाओं और क्षेत्रीय संस्कृतियों से गहराई से जुड़ी है, उसे ₹संदर्भ के प्रति संवेदनशीलता₹ की आवश्यकता होती है। अत्यधिक केंद्रीयकरण से क्षेत्रीय जरूरतों की अनदेखी होने का भय है।

2. वैधानिक शिक्षक प्रतिनिधित्व का अभाव

इस विधेयक की सबसे विवादास्पद विशेषताओं में से एक इसके शासन ढांचे में शिक्षकों के प्रतिनिधित्व

की कमी है। पाठ्यक्रम कार्यान्वयन, मूल्यांकन और शिक्षण नैतिकता जैसे नीतिगत निर्णयों में शिक्षकों के अनुभवजन्य ज्ञान को दरकिनार करना इसे शैक्षणिक के बजाय केवल ₹प्रशासनिक₹ ढांचा बना सकता है।

3. बाहरी प्रत्यायन और बाजार का तर्क

वि बी एस ए अब एन ए ए सी /एनबीए के दायरे से बाहर जाकर तीसरे पक्ष की एजेंसियों के माध्यम से मान्यता की अनुमति देता है। इससे मान्यता की प्रक्रिया के व्यवसायीकरण और ग्रामीण क्षेत्रों में काम करने वाले शिक्षक शिक्षा संस्थानों के पिछड़ने का खतरा पैदा हो गया है, क्योंकि ये संस्थान अक्सर संसाधनों की कमी से जूझते हैं।

4. दंडात्मक ढांचा और अनुपालन का तनाव

विधेयक में भारी जुर्माने और संस्थान बंद करने जैसे कड़े दंड का प्रावधान है। यह सख्त रवैया संस्थानों के भीतर शैक्षणिक प्रयोगों और नवाचार को हतोत्साहित कर सकता है, जिससे सुधार के बजाय केवल 'डर के माहौल' में कागजी खानापूर्ति बढ़ेगी।

II. अतीत की चिंताएं: विरासत और पहचान का संकट

1. एनसीटीई का विघटन और पेशेवर पहचान का नुकसान

एनसीटीई को एक स्वतंत्र निकाय के रूप में समाप्त करना शिक्षक शिक्षा की विशिष्ट पहचान को खतरे में डाल सकता है। शिक्षण केवल एक अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक राष्ट्र निर्माण का मिशन है। इसे एक सामान्य नियामक ढांचे के तहत लाने से इसकी पेशेवर गरिमा और विशेषज्ञता कम हो सकती है।

2. संस्थागत स्मृति का विखंडन

यूजीसी और एनसीटीई जैसे संस्थानों ने दशकों में विशेषज्ञता और अनुभव संचित किया है। उनके अचानक विघटन से नीतिगत निरंतरता में बाधा आ सकती है और मौजूदा संस्थानों के लिए संक्रमण काल अनिश्चितता से भर सकता है।

3. विकास सहायता से निगरानी की ओर

ऐतिहासिक रूप से, नियामक निकायों ने निरीक्षण के साथ-साथ विकास कार्यों (जैसे संकाय विकास और पाठ्यक्रम नवीनीकरण) पर भी ध्यान दिया है। इसके विपरीत, वीबीएसए का झुकाव नियामक-दंडात्मक (रेगुलेटरी -पेनल) प्रवृत्तियों की ओर अधिक है, जो संस्थानों के मनोबल को प्रभावित कर सकता है।

निष्कर्ष: सावधानी और सहमति के साथ सुधार

वीबीएसए निस्संदेह भारत के उच्च शिक्षा शासन की कल्पना करने का एक साहसिक प्रयास है। फिर भी, यह याद रखना चाहिए कि 'दक्षता' कभी भी 'विवेक' का विकल्प नहीं होनी चाहिए और 'नियंत्रण' कभी 'विश्वास' की जगह नहीं ले सकता।

वीबीएसए की सफलता के लिए, विशेष रूप से शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में, कुछ सुधार अनिवार्य हैं:

- शासन में शिक्षकों का वैधानिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए।
- शिक्षक शिक्षा के लिए विशेष शैक्षणिक परिषदों की स्थापना हो।
- नियामक शक्ति और विकासात्मक समर्थन के बीच संतुलन बनाया जाए।

सच्चा शैक्षिक सुधार केवल नियमों को सख्त बनाने में नहीं, बल्कि उन लोगों को सशक्त बनाने में निहित है जो देश के भविष्य को आकार देते हैं।

डॉ.तपन कुमार साहु
प्रिंसिपल, एस.डी कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन
बरनाला

समर्पित से न करते किनारा...!

किस-किस को दिखाओगे बाहर का रास्ता,
पहले से ही हो रही पार्टी की हालत खस्ता।
वह 'सत्य की ओर' ही तो कर रहे थे इशारा,
समर्पित रहें मो . मुकीम से न करते किनारा।
प्राथमिक सदस्यता से निष्कासित कर दिया,
पार्टी विरोधी गतिविधियों को 'चस्पा' किया।
यह दल आज भी मुश्किल दौर से गुजर रहा,
नए नेतृत्व की जरूरत का आगाज़ कर रहा।
पार्टी प्रमुख नेता के रूप में आवश्यक मेहनत,
दौड़-भाग ;लोगों से जुड़ाव संभव सब सहमत।
पार्टी में खरगे सलाहकार की भूमिका निभाएं,
वह किसी सक्रिय 'युवा नेतृत्व' को आगे लाएं।
(संदर्भ-कांग्रेस ने पूर्व विधायक को निष्कासित किया)

संजय एम तराणेकर

"सेफ्टी कमिटी की भूमिका और ज़िम्मेदारियाँ" पर ट्रेनिंग

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : सरकार राज्य में फैक्ट्रियों में काम करने के सुरक्षित माहौल और वर्कर सेफ्टी को प्राथमिकता दे रही है, इसलिए फैक्ट्रीज़ और एयर फ़ोर्स डायरेक्टरेट, स्टेट इंश्योरेंस डिपार्टमेंट की मंज़ूरी से, सेफ्टी ऑफिसर्स के लिए अलग-अलग सेफ्टी ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित कर रहा है, जिससे हादसों की रोकथाम मज़बूत होती है।

इस संबंध में, 12.12.2025 को, स्टेट लेबर इंस्टीट्यूट के साथ मिलकर, ₹सेफ्टी कमिटी की भूमिका और ज़िम्मेदारियाँ₹ पर एक स्टेट-लेवल ट्रेनिंग वर्कशॉप इंस्टीट्यूट के कॉन्फ्रेंस हॉल में एल्युमिनियम यूनिट्स के सेफ्टी कमिटी मेंबर्स की मौजूदगी में सफलतापूर्वक पूरी हुई। इस वर्कशॉप का दूसरा फ़ेज़ 17.12.2025 रिख को 41 दूसरे सेफ्टी ऑफिसर्स की मौजूदगी में सफलतापूर्वक पूरा हुआ। इस ट्रेनिंग प्रोग्राम का मुख्य मकसद सेफ्टी कमेटियों को मज़बूत करना और मेंबर्स की जागरूकता, ज़िम्मेदारी और असरदार एक्शन के ज़रिए वर्कप्लेस पर सेफ्टी पक्का करना था।

डायरेक्टरेट ऑफ़ फैक्ट्रीज़ एंड एनवायरनमेंट के डायरेक्टर, श्री इंद्रमणि त्रिपाठी (IAS) चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए। श्री त्रिपाठी ने अपने कीनोट एड्रेस में कहा कि "सेफ्टी सिर्फ़ नियमों तक सीमित नहीं है, यह ज़िम्मेदारी और सहयोग का नतीजा है। कमेटियों की एक्टिव भागीदारी, रेगुलर ट्रेनिंग और जागरूकता से हम

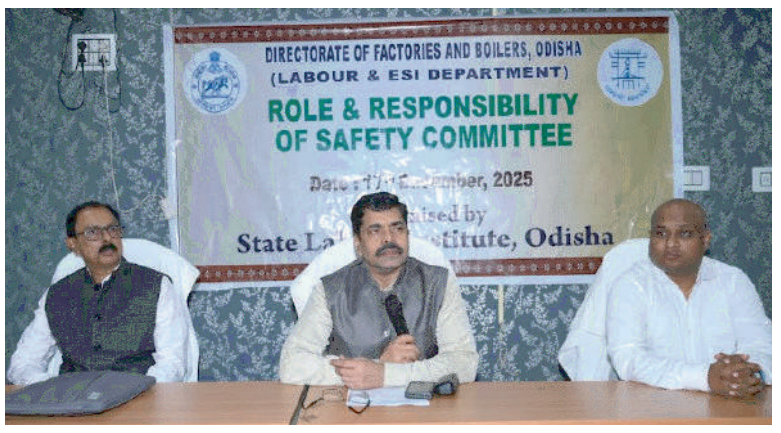

सभी के लिए एक सुरक्षित वर्कप्लेस बना सकते हैं।"

डॉ. मलय कुमार प्रधान, डिप्टी डायरेक्टर (सेफ्टी), डायरेक्टरेट ऑफ़ फैक्ट्रीज़ एंड एनवायरनमेंट भी मीटिंग में शामिल हुए। श्री प्रधान ने कहा कि "वर्कप्लेस पर सेफ्टी सिर्फ़ अधिकारियों की ज़िम्मेदारी नहीं है; यह हर कर्मचारी की सामूहिक ज़िम्मेदारी है। रेगुलर ट्रेनिंग, जागरूकता प्रोग्राम और कमेटियों की एक्टिव भूमिका से हम दुर्घटनाओं को कम कर सकते हैं और एक सुरक्षित, स्वस्थ और प्रोडक्टिव वर्किंग माहौल बना सकते हैं।"

डॉ. किरण कुमार पांडा, EHS कंसल्टेंट, पूर्व हेड और एडवाइजर, HSE, AM-NS इंडिया, श्री जितेंद्र परिदा, एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट (सेफ्टी), जिंदल स्टील एंड पावर लिमिटेड, अंगुल, श्री देबाशीष पटनायक, AGM (HR) SAIL – रावलकेला स्टील प्लांट, सुंदरगढ़, श्री निहार कांत राउत, EHS कंसल्टेंट, पारादीप फॉस्फेट्स लिमिटेड, जगतसिंहपुर के साथ-साथ अलग-अलग डिपार्टमेंट के सदस्यों ने हिस्सा लिया और प्रोग्राम को सफल बनाया। इस प्रोग्राम में ट्रेनर्स ने एक सवाल-जवाब सेशन भी रखा। आखिरी शाम को इंस्टीट्यूट से ट्रेनिंग पाए 41 जाने-माने सेफ्टी ऑफिसर्स को सर्टिफिकेट दिए गए।

बीजेडी ने सीएम के दिल्ली आवास पर निशाना साधा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: BJD ने मुख्यमंत्री के दिल्ली वाले घर को लेकर फिर सवाल उठाए। प्रेस कॉन्फ्रेंस में पार्टी के प्रवक्ता लेनिन मोहंती ने कहा कि आज़ादी के बाद से ओडिशा के किसी मुख्यमंत्री ने ऐसा घर नहीं लिया है। लेकिन अब मुख्यमंत्री के लिए ऐसा इंतज़ाम क्यों किया जा रहा है? पैसा ओडिशा के खजाने से जा रहा है, जिससे ओडिशा को नुकसान होगा। पिछली प्रेस कॉन्फ्रेंस में BJD की तरफ से कुछ सवाल पूछे गए थे लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। नवीन पटनायक पिछले 24 साल से मुख्यमंत्री हैं। जब वे दिल्ली गए तो उन्हें कभी घर की ज़रूरत नहीं पड़ी।

उन्होंने यह भी दावा किया कि BJD को लगता है कि मुख्यमंत्री के

दिल्ली घर से ओडिशा और ओडिशा के लोगों के खिलाफ कुछ काम किया जाएगा। इसके साथ ही, ओडिशा से पुलिस की एक प्लाटून ले जाने का मतलब है कि ओडिशा सरकार को दिल्ली पुलिस पर भरोसा नहीं है। और इस पुलिस के दिल्ली में होने से ओडिशा को नुकसान होगा। BJP का एक ग्रुप तीन अंकों वाली गली में पावर सेंटर बनाने की कोशिश कर रहा है। मुख्यमंत्री मोहन माझी को खुद यह साफ करना चाहिए। BJP को भी इस आरोप का जवाब देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा, मुख्यमंत्री खुद जवाब नहीं दे रहे हैं, लेकिन कुछ पत्रकार सोशल मीडिया अकाउंट बनाकर BJP के प्रवक्ता बन रहे हैं। यह किस तरह की पत्रकारिता है? मेफेयर से हर दिन 100 से ज़्यादा मिल आ रही हैं। हर मिल की कीमत 4000 रुपये है। यह लोक सेवा भवन के 400 मीटर के दायरे में इस्तेमाल हो रही है। इतना ही नहीं, जायसवाल नाम का यह आदमी कौन है? अब ओडिशा का सुपर मुख्यमंत्री कौन है? BJP या मुख्यमंत्री को इसका जवाब देना चाहिए। किसी भी पत्रकार को BJP का प्रवक्ता नहीं बनना चाहिए।

केरल में स्थानीय निकायों के नतीजों के मायने

वीरेन्द्र सिंह परिहार

गतदिनों केरल के स्थानीय निकायों के चुनावों में जो नतीजे आये हैं, वो चौंकाने वाले हैं। अभी तक केरल का जो राजनीतिक परिदृश्य था, उसमें वहाँ पर वाम मोर्चा और कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व वाला संयुक्त मोर्चा ही मुख्य धारा के राजनीतिक दल थे। भाजपा को वहाँ पर एक अलग-थलग रहने वाला दल ही माना जाता था। यद्यपि गत लोकसभा चुनाव में केरल से भाजपा ने कन्नूर की एक सीट जीत कर और तिरुवनंतपुरम की लोकसभा सीट कम मतों से हार कर भाजपा ने राजनीतिक जगत में यह सन्देश जरूर दे दिया था कि भाजपा अब केरल की मुख्य धारा की राजनीतिक पार्टी बनने के मुहाने पर खड़ी है लेकिन स्थानीय चुनावों ने यह सिद्ध कर दिया कि कांग्रेस और वाम मोर्चा के साथ के साथ भाजपा भी अब केरल में मुख्य धारा की पार्टी है।

जैसा कि सभी को पता है कि तिरुवनंतपुरम में नगर निगम की 101 सीटों में 50 सीटें जीतकर जो करीब-करीब बहुमत के पास है, और इसमें कोई दो मत नहीं कि वह निर्दलीय सदस्यो के सहयोग से केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम नगर निगम में कब्जा कर लेगी। प्रदेश में दूसरी जगहों पर भाजपा को उल्लेखनीय सफलता भले न मिली हो पर वोटरों का रूझान यह बताता है कि केरल में भी ईसाई मतों को भाजपा की ओर रूझान बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में जब केरल में भाजपा करीब-करीब तीसरी राजनीतिक शक्ति बन चुकी है तो यह तय माना जाना चाहिए कि बंगाल की तरह केरल में भी वाम मोर्चा अप्रासंगिक होने के कगार पर है। ऐसा इसलिये संभव है कि कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति के चलते मुस्लिम मतदाताओं का समर्थन उसे मुख्य धारा की राजनीति शक्ति बनाये रखेगा। दूसरी तरफ हिन्दुओं के साथ ईसाई मतदाताओं के एक बड़े वर्ग के समर्थन के चलते यदि अगले विधानसभा चुनाव में भाजपा बहुमत प्राप्त कर ले तो इससे कोई बहुत बड़ी हैरानी नहीं होनी चाहिए। लोगों की याददाश्त में कहीं-न-कहीं यह होना चाहिए कि त्रिपुरा में जब पहली बार भाजपा सत्ता में आई थी तो उसे 'शून्य से शिखर की यात्रा' ही कहा गया था।

गौर करने की बात यह कि भारतीय राजनीति में दो मुख्य पार्टियों कांग्रेस और भाजपा को लेकर यूं तो कई बुनियादी भिन्नताए हैं, पर एक बड़ी बुनियादी भिन्नता यह कि जहाँ कांग्रेस प्रान्त दर प्रान्त क्रमशः सत्ता से बेदखल होती जा रही है, वही भाजपा क्रमशः क्रमशः सत्ता में आती जा रही है जिसके चलते कांग्रेस मात्र कर्नाटक, तेलंगाना और हिमांचल प्रदेश में सत्ता में है, वहीं भाजपा अधिकाशं राज्यों में सत्ता में है। यदि सत्ता में नहीं है तो पंजाब और तमिलनाडु जैसे राज्यों को छोड़कर या तो विपक्ष में है, या वहाँ पर उसकी मजबूत उपस्थिति है। उदाहरण के लिये तेलंगाना जैसे राज्य को देखा जा सकता है जहाँ भाजपा राज्य में मुख्य विपक्षी दल भले न हो, लेकिन गत लोकसभा में चुनाव में 17 में 8 सीटें जीतकर वह यह बता चुका है कि तेलंगाना में भी भाजपा सत्ता की दहलीज पर ख़ड़ी है, ठीक वैसे ही जैसे वह बंगाल में सत्ता के दरवाजे पर खड़ी है। यह भी सभी को पता होगा कि 25 वर्ष तक लगातार उड़ीसा की सत्ता में रहने वाले वर्ष 2024 के चुनाव में भाजपा, बीजद को सत्ता से अपदस्थ कर चुकी है।

विचारणीय प्रश्न यह कि आखिर में ऐसी कौन-सी बड़ी वजह है कि दिनों-दिन पूरे देश में भाजपा का जनाधार बढ़ता जा रहा है और कांग्रेस का जनाधार छिटकता जा रहा है। निश्चित रूप से कमोबेश इसका एक बड़ा कारण जहाँ भाजपा एक तरह से परिवारवाद की बीमारी से मुक्त है, वहीं पर यह बड़ी सच्चाई है कि वर्तमान में देश का मतदाता यह मान चुका है कि कांग्रेस की तुलना में ही नहीं, दूसरी क्षेत्रीय पार्टियों की तुलना में भी भाजपा एक बेहतर पार्टी है। परिवारवाद से मुक्त होने के साथ जहाँ विकास का मापदण्ड है, वह बेहतर नतीजे दे रही है। इसके अलावा ऐसा तो नहीं कहा जा सकता कि भाजपा का जहाँ राज है, वहाँ रामराज्य है परन्तु अवश्य कहा जा कहा जा सकता है कि वहाँ सुशासन की दिशा में प्रयास अवश्य दिखाई देता है।

बड़ी बात यह कि भाजपा की चाहे केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकारें, वहाँ घोटाले की गूँज सुनाई नहीं पड़ती जबकि कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों से शासित राज्यों में कुशासन और घोटाले आम तौर पर सुनने को मिलते रहते हैं। इसके अलावा एक बड़ी बात भाजपा का हिन्दुत्व, भारतीय संस्कृति के प्रति आग्रह और स्व के प्रति जागरण का प्रयास भी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नैतिक दबाव के चलते भाजपा एक विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा की पार्टी सतत बनी हुई है। यही कारण है कि भाजपा का दिग्विजयी अश्व बीच-बीच में झटके भले खाता हो पर वह सतत आगे बढ़ता ही जा रहा है।

हांसी : इतिहास के केंद्र से हाशिये तक और फिर जिले की दहलीज़ पर

हांसी कभी हरियाणा क्षेत्र की राजधानी रही है। जॉर्ज थॉमस के शासनकाल में यह प्रशासनिक और व्यापारिक केंद्र था। मुगल काल में यहां टकसाल और सैनिक छावनी स्थापित की गई। 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के खिलाफ तीव्र प्रतिरोध के कारण हांसी से जिला दर्जा छीना गया और लगभग 1870–80 के बीच हिसार को जिला बनाया गया। 1966 में हरियाणा गठन के बाद हिसार का कई बार पुनर्गठन हुआ। 2025 में हांसी को पुनः जिला बनाने की घोषणा हुई, जिसे ऐतिहासिक न्याय के रूप में देखा जा रहा है।

- डॉ. प्रियंका सौरभ

इतिहास कभी अचानक नहीं बदलता, वह धीरे-धीरे करवट लेता है। हरियाणा की प्राचीन नगरी हांसी इसका जीवंत उदाहरण है। एक समय यह नगर सत्ता, प्रशासन, व्यापार और सामरिक दृष्टि से उत्तरी भारत के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में गिना जाता था। आज वही हांसी, जिसने सदियों तक शासन का भार उठाया, लंबे समय तक प्रशासनिक उपेक्षा झेलने के बाद एक बार फिर जिले के रूप में अपनी पहचान पाने की ओर अग्रसर हुई है। वर्ष 2025 में हांसी को नया जिला बनाए जाने की घोषणा केवल एक प्रशासनिक फैसला नहीं, बल्कि इतिहास के एक अधूरे अध्याय को पूरा करने की कोशिश के रूप में देखी जा रही है।

अंग्रेजों के भारत आगमन से बहुत पहले हांसी का गौरव अपने चरम पर था। जॉर्ज थॉमस के दौर में हांसी हरियाणा क्षेत्र की राजधानी के रूप में स्थापित थी। उस समय यह नगर दिल्ली परगना के अधीन उत्तरी भारत के प्रमुख व्यापारिक केंद्रों में शामिल था। हांसी से ही प्रशासनिक आदेश जारी होते थे और आसपास के बड़े भूभाग पर शासन संचालित किया जाता था। यह नगर केवल सत्ता का केंद्र नहीं था, बल्कि व्यापारिक गतिविधियों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सैनिक रणनीतियों का भी प्रमुख केंद्र था।

मुगल काल में भी हांसी का महत्व कम नहीं हुआ। अकबर के शासनकाल के ऐतिहासिक दस्तावेजों और नक्शों में हांसी को एक महत्वपूर्ण मुगल केंद्र के रूप में दर्शाया गया है। यहां एक टकसाल स्थापित थी, जहां सिक्कों का निर्माण होता था। किसी भी नगर में टकसाल का होना उसकी आर्थिक और प्रशासनिक ताकत का प्रतीक माना जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि हांसी केवल एक कस्बा नहीं, बल्कि उस दौर की अर्थव्यवस्था का अहम स्तंभ था।

हांसी की भौगोलिक स्थिति ने भी इसे सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया था। दिल्ली, पंजाब और राजस्थान की ओर जाने वाले मार्गों पर स्थित होने के कारण यहां मुगलों ने सैनिक छावनी स्थापित की। बाद में अंग्रेजों ने भी इसी सामरिक महत्ता को समझते हुए यहां अपनी सैन्य मौजूदगी बनाए रखी। हांसी की किलेबंदी, प्रशासनिक ढांचा और सैन्य व्यवस्था इसे उत्तरी भारत के सुरक्षित और संगठित नगरों में शामिल करती थी।

लेकिन इतिहास की दिशा 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के साथ बदल गई। हांसी और आसपास के क्षेत्रों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ खुलकर विद्रोह किया। यह क्षेत्र उन इलाकों में शामिल था जहां अंग्रेजों को सबसे तीव्र प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। स्थानीय जनता, सैनिकों और जमींदारों ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी। यह विद्रोह अंग्रेजों के लिए केवल कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं था, बल्कि उनकी सत्ता के लिए सीधी चुनौती था।

1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने प्रतिशोध की नीति अपनाई। जिन क्षेत्रों ने सबसे अधिक प्रतिरोध किया, उन्हें प्रशासनिक रूप से कमजोर किया गया। हांसी भी इसी नीति का शिकार बना। भले ही हांसी से जिले का दर्जा छीने जाने की कोई सटीक और प्रमाणिक तारीख उपलब्ध नहीं है, लेकिन इतिहासकारों का मानना है कि 1870 से 1880 के बीच अंग्रेजों ने हांसी से जिला मुख्यालय हटाकर हिसार को नया जिला बना दिया। इसके साथ ही हांसी का प्रशासनिक महत्व लगभग समाप्त कर दिया गया।

हिसार को जिला बनाकर अंग्रेजों ने न केवल प्रशासनिक ढांचा बदला, बल्कि हांसी की ऐतिहासिक भूमिका को भी हाशिये पर डाल दिया। फतेहाबाद, सिरसा जैसे इलाकों पर हिसार से शासन चलाया जाने लगा। यह बदलाव केवल सुविधा के नाम पर नहीं था, बल्कि एक ऐसे क्षेत्र को नियंत्रित करने की रणनीति थी, जिसने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ विद्रोह का साहस दिखाया था।

इतिहासकार यह भी बताते हैं कि 1700 ईस्वी के आसपास हरियाणा, पंजाब से अलग एक विशिष्ट भू-राजनीतिक पहचान के साथ नक्शों में मौजूद था। उस दौर के कई नक्शे आज भी उपलब्ध हैं, जिनमें हांसी को हरियाणा की राजधानी के रूप में दर्शाया गया है। जॉर्ज थॉमस ने हांसी को अपना प्रमुख केंद्र बनाकर पूरे इलाके पर शासन किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि हांसी का महत्व किसी एक शासक या काल तक सीमित नहीं था, बल्कि यह लंबे समय तक सत्ता का केंद्र रहा।

स्वतंत्रता के बाद 1966 में जब हरियाणा राज्य का गठन हुआ, तब हिसार प्रदेश का सबसे बड़ा जिला था। उस समय हांसी एक बार फिर उम्मीद कर रहा था कि उसे उसका ऐतिहासिक दर्जा वापस मिलेगा। लेकिन प्रशासनिक प्राथमिकताओं और राजनीतिक संतुलनों के चलते ऐसा नहीं हो सका। इसके बजाय हिसार जिले का समय-समय पर पुनर्गठन किया गया।

1972 में भिवानी को अलग जिला बनाया गया। इसके बाद 1975 में सिरसा और 1997 में फतेहाबाद को जिला का दर्जा मिला। 2016 में भिवानी से अलग होकर चरखी दादरी नया जिला बना। इन सभी विभाजनों ने हिसार के प्रशासनिक नक्शे को लगातार बदला और छोटा किया, लेकिन हांसी हर बार जिले की सूची से बाहर रह गया।

इस उपेक्षा ने धीरे-धीरे हांसी में असंतोष को जन्म दिया। लोगों को लगने लगा कि यह केवल प्रशासनिक अनदेखी नहीं, बल्कि ऐतिहासिक अन्याय का विस्तार है। पिछले लगभग दस वर्षों से हांसी को जिला बनाने की मांग ने जोर पकड़ना शुरू किया। स्थानीय सामाजिक संगठनों, व्यापार मंडलों और राजनीतिक प्रतिनिधियों ने इस मुद्दे को लगातार उठाया। यह मांग धीरे-धीरे एक जन आंदोलन का रूप लेने लगी।

हांसी के लोग यह तर्क देते रहे कि यह नगर ऐतिहासिक, भौगोलिक और प्रशासनिक—तीनों दृष्टियों से जिला बनने की सभी शर्तें पूरी करता है। यहां पहले से ही कई प्रशासनिक कार्यालय मौजूद हैं। आसपास के क्षेत्रों की दूरी और जनसंख्या दबाव को देखते हुए भी जिला बनना तर्कसंगत माना गया। लेकिन इन सभी दलीलों से ऊपर एक भावनात्मक पहलू भी था—हांसी को उसका खोया हुआ सम्मान लौटाने की आकांक्षा।

2025 में जब हांसी को नया जिला बनाए जाने की घोषणा हुई, तो इसे केवल एक प्रशासनिक खबर के रूप में नहीं देखा गया। यह घोषणा हांसी के इतिहास, संघर्ष और प्रतीक्षा की परिणति मानी गई। लोगों ने इसे उस अन्याय के आंशिक सुधार के रूप में देखा, जो 1857 के बाद अंग्रेजों ने किया था और जिसे स्वतंत्र भारत में लंबे समय तक अनदेखा किया गया।

हांसी का जिला बनना प्रशासनिक विकेंद्रीकरण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल स्थानीय लोगों को बेहतर प्रशासनिक सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क और रोजगार जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा होने की संभावना है। इसके साथ ही यह निर्णय क्षेत्रीय संतुलन को भी मजबूत करेगा।

इतिहास गवाह है कि जिन नगरों को सत्ता के केंद्र से हटाया गया, वे केवल भौगोलिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी हाशिये पर चले जाते हैं। हांसी भी लंबे समय तक इसी स्थिति से गुजरा। लेकिन अब जिला बनने के साथ ही यह नगर एक बार फिर केंद्र में लौटने की तैयारी कर रहा है।

हांसी की कहानी हमें यह भी सिखाती है कि इतिहास केवल किताबों में दर्ज घटनाओं का संग्रह नहीं होता, बल्कि वह वर्तमान की नीतियों और फैसलों को भी प्रभावित करता है। हांसी को जिला बनाना इस बात का प्रमाण है कि इतिहास चाहे देर से ही सही, लेकिन अपनी न्यायपूर्ण दिशा जरूर खोज लेता है।

आज जब हांसी जिले की दहलीज़ पर खड़ा है, तो यह केवल एक प्रशासनिक इकाई का विस्तार नहीं, बल्कि उस नगर की आत्मा की पुनर्स्थापना है, जिसने कभी हरियाणा को राजधानी दी थी, जिसने सत्ता को चुनौती दी थी और जिसने लंबे समय तक उपेक्षा सहकर भी अपनी पहचान नहीं खोई। हांसी का यह नया अध्याय इतिहास के उसी पुराने गौरव से जुड़ता है, जहां से उसकी यात्रा शुरू हुई थी।

हांसी एक नज़र में

प्राचीन पहचान : जॉर्ज थॉमस के शासनकाल में हरियाणा क्षेत्र की राजधानी

मुगल काल : अकबर के समय प्रमुख प्रशासनिक केंद्र, यहां टकसाल स्थापित

सामरिक महत्व : मुगल और अंग्रेजी दौर में सैनिक छावनी

1857 का विद्रोह : अंग्रेजों के खिलाफ सशक्त प्रतिरोध, प्रशासनिक दंड मिला

जिला दर्जा छीना गया : लगभग 1870–80 के बीच हांसी से जिला मुख्यालय हटाया गया

हिसार जिला बना : हांसी, फतेहाबाद व सिरसा हिसार के अधीन आए

हरियाणा गठन (1966) : हिसार सबसे बड़ा जिला

हिसार का पुनर्गठन :

1972 – भिवानी अलग
1975 – सिरसा अलग
1997 – फतेहाबाद अलग
2016 – चरखी दादरी अलग
2025 : हांसी को नया जिला बनाए जाने की घोषणा

मांग की अवधि : पिछले लगभग 10 वर्षों से निरंतर आंदोलन

बाल वाणी में ब्रह्मबोध : विश्व की सबसे कम आयु की अंतर्राष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया को 'लिटिल चैंपियन ऑफ द ईयर–2025' सम्मान

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। जब बाल कंठ से धर्म, करुणा और मानवता की वाणी प्रवाहित हो, तब वह केवल प्रवचन नहीं, बल्कि युगबोध बन जाती है। ऐसी ही दिव्य चेतना की प्रतिनिधि, विश्व की सबसे कम आयु की अंतर्राष्ट्रीय बाल व्यास श्वेतिमा माधव प्रिया को धार्मिक-आध्यात्मिक क्षेत्र में उनके अद्वितीय योगदान के लिए 'लिटिल चैंपियन ऑफ द ईयर–२०२५' जैसे प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से विभूषित किया गया। यह सम्मान मानवाधिकार दिवस–२०२५ के पावन अवसर पर आयोजित १५वें ग्लोबल समिट एवं अवॉर्ड सेरेमनी में प्रदान किया गया।

सम्मान पत्र में श्वेतिमा माधव प्रिया के अलौकिक व्यक्तित्व, धर्मबोध से ओतप्रोत प्रवचनों, मानवीय मूल्यों के जागरण, करुणा, साहस एवं समाज के प्रति निःस्वार्थ समर्पण की भावपूर्ण सराहना की गई है। अल्पायु में ही उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक परंपरा, सनातन संस्कारों एवं सांस्कृतिक चेतना को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित करते हुए देश-विदेश में श्रद्धा और सम्मान अर्जित किया है। बाल आयु में वेदांत, भक्ति और मानवता का जो समन्वय उनकी वाणी में झलकता है, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहा है। उनके प्रवचन केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन मूल्यों की पुनःस्थापना का माध्यम हैं, जो समाज को सत्य, अहिंसा और करुणा के मार्ग पर अग्रसर करते हैं।

दिल्ली में आयोजित इस आध्यात्मिक गरिमा से परिपूर्ण समारोह में श्वेतिमा माधव प्रिया की उपस्थिति प्रस्तावित थी, किंतु अपरिहार्य कारणों से उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान हर्ष त्रिपाठी एवं सविनय पाण्डेय द्वारा श्रद्धापूर्वक ग्रहण कर उन्हें प्रेषित किया गया।

प्राप्त सम्मान पत्र पर डॉ. हृदित भंडारी, गोपी दत्त आकाश तथा एम्बेसेडर डॉ. एस. जे. शांडिल्य सहित अनेक प्रतिष्ठित हस्तियों के हस्ताक्षर अंकित हैं। इन सभी ने श्वेतिमा माधव प्रिया को मानवता, संवेदना, आध्यात्मिक चेतना और वैश्विक सद्भाव का उज्ज्वल दीप बताया। इस दिव्य उपलब्धि पर धर्म, संस्कृति और शिक्षा जगत में हर्ष और गौरव की अनुभूति है। ब्रह्मज्ञानों का मत है कि यह सम्मान केवल एक बाल प्रतिभा की उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक

परंपरा, सनातन मूल्यों और मानव कल्याण की सार्वभौमिक चेतना का अंतर्राष्ट्रीय उद्घोष है।

फैसले ऐसे लिखें जो आम जनता समझ सके'

सीजेआई ने कानूनी भाषा को सरल बनाने की दी सलाह

परिवहन विशेष न्यूज

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि सिर्फ भाषा ही नहीं, फैसलों में भी स्पष्टता होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि एक जैसे कानूनी सवालों वाले मामलों को एक साथ रखा जाए, ताकि फैसले समान हों।

सीजेआई सूर्यकांत ने न्यायपालिका से कहा है कि वह जरूरत से ज्यादा कठिन कानूनी भाषा का इस्तेमाल कम करे, क्योंकि इससे आम लोगों और न्याय के बीच दूरी बनती है। उन्होंने कहा कि अदालत के फैसले साफ और आसान भाषा में लिखे जाने चाहिए, ताकि लोग उन्हें समझ सकें। वह शनिवार को वेस्ट जोन रीजनल कॉन्फ्रेंस में बोल रहे थे।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया ने कहा कि अगर न्याय साफ और समझने योग्य न हो, तो जिन लोगों के लिए वह है, उनके लिए उसका महत्व खत्म हो सकता है। उन्होंने बताया कि अदालत के फैसले सिर्फ अकादमिक चर्चा नहीं होते, बल्कि वे लोगों के अधिकार और जिम्मेदारियाँ तय करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जब फैसलों की भाषा और ढांचा बहुत अलग-अलग होता है, तो आम लोगों के लिए उनका मतलब समझना

मुश्किल हो जाता है।

जटिल कानूनी भाषा से होने वाली परेशानी को समझाते हुए सीजेआई ने उन लोगों की हालत बताई, जिन्हें केस जीतने के बाद भी यह समझ नहीं आ पाया कि उन्हें असल में क्या राहत मिली है। उन्होंने कहा कि यह भ्रम इसलिए हुआ क्योंकि आदेशों में इस्तेमाल की गई भाषा बहुत ज्यादा तकनीकी, अस्पष्ट और घुमावदार थी, जिसे समझना आम लोगों के लिए लगभग नामुमकिन था

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि न्यायिक लेखन में एकरूपता का मतलब है कि फैसले साफ, समझने में आसान और भरोसेमंद हों। उन्होंने बताया कि इसके लिए ऐसा तरीका अपनाना चाहिए जिसमें कम शब्दों में स्पष्ट तर्क हों और आदेश से जुड़े जरूरी निर्देश साफ-साफ लिखे हों।

"एकीकृत न्यायिक नीति" की बात करते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि तकनीक का असली फायदा इसकी जटिलता में नहीं, बल्कि इस बात में है कि आम आदमी आसानी से समझ सके कि उसके मामले का फैसला क्या हुआ और वह न्यायपूर्ण है। उन्होंने बताया कि नए उपकरण अब ऐसे काम कर सकते हैं जो न्याय को समझने में मदद करें, जैसे फैसलों को आसान भाषा में लिखना और उन्हें अलग-अलग भाषाओं में तुरंत अनुवाद करना, ताकि ज्यादा लोग उन्हें समझ सकें।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि सिर्फ भाषा ही नहीं, फैसलों में भी स्पष्टता होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि एक जैसे कानूनी सवालों वाले मामलों को एक साथ रखा जाए, ताकि फैसले समान हों। उन्होंने एक पुराने मामले का उदाहरण दिया, जिसमें उच्च न्यायालय की तीन अलग-अलग पीठों ने भूमि अधिग्रहण से जुड़ी समान अपीलों में अलग-अलग निर्णय दिए थे, जिससे याचिकाकर्ताओं को अपने अधिकारों को लेकर भ्रम हुआ।

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि न्यायपालिका को जिम्मेदार होना चाहिए। उन्होंने बताया कि हाल ही में उन्होंने एक आदेश दिया है, जिसमें कहा गया है कि जमानत, बंदी, बेदखली और विध्वंस जैसे तुरंत निर्णय वाले मामलों को खामियां दूर होने के दो दिन के अंदर ही सूचीबद्ध किया जाए। उन्होंने कहा कि इसका मकसद यह सुनिश्चित करना है कि तात्कालिक फैसले केवल मौके पर निर्णय लेने की बजाय व्यवस्थित तरीके से लिए जाएं।

अपने भाषण के अंत में मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि तकनीक सिर्फ एक साधन है, लेकिन तरीका हमेशा मानवीय होना चाहिए। उनका उद्देश्य एक ऐसी प्रणाली बनाना है जहां "कानून का शासन" सिर्फ शब्द न होकर आम लोगों के लिए सचमुच अनुभव की जा सकने वाली चीज़ हो।

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिगनस के साथ साझेदारी में उत्तर भारत की पहली 3डी प्रिंटिंग और वर्चुअल रियलिटी तकनीक का शुभारंभ किया

अमृतसर (साहिल बेरी)

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिगनस के सहयोग से उत्तर भारत में अस्पताल-आधारित 3डी प्रिंटिंग और वर्चुअल रियलिटी तकनीक का पहला शुभारंभ किया है। यह मरीजों के लिए एक ऐतिहासिक कदम है और चिकित्सा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति है।

यह नई सुविधा अमृतसर के आसपास के क्षेत्रों में अत्याधुनिक शल्य चिकित्सा योजना और अनुकूलित उपचार समाधान प्रदान करने में बहुत उपयोगी साबित होगी। नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अभिजात शेठ ने अमनदीप उजाला अस्पताल में 3डी प्रिंटिंग और वर्चुअल रियलिटी तकनीक का उद्घाटन किया, जो चिकित्सा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

उनकी उपस्थिति से इस कार्यक्रम ने स्वास्थ्य सेवा वितरण में क्रांति लाने के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला।

नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अभिजात शेठ ने अमनदीप उजाला अस्पताल में 3डी प्रिंटिंग और वर्चुअल रियलिटी तकनीक का उद्घाटन किया। यह कार्यक्रम एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

यह गतिविधि आधुनिक शल्य चिकित्सा योजना और आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होगा।

इस पहल के साथ, अमनदीप उजाला अस्पताल देश के उन चुनिंदा अस्पतालों में से एक होगा जो नैदानिक अभ्यास को 3डी प्रिंटिंग और वर्चुअल रियलिटी तकनीक के साथ सीधे एकीकृत कर सकता है।

यह अनुसंधान एवं विकास सर्जनों को सबसे उन्नत और उच्च गुणवत्ता वाले शारीरिक मॉडल, सटीक रोगी सलाह और जटिल अस्थिचिकित्सा के लिए अनुकूलित प्रत्यारोपण प्रदान करने में मदद करेगा।

यह रीढ़ की हड्डी में लगी चोटों की मरम्मत करेगा, जोड़ों को सही स्थिति में लाएगा, विकृतियों को ठीक करेगा और 3डी प्रिंटेड इम्प्लांट्स लगाएगा।

इससे कम समय में अधिक रोगियों के लिए बेहतर उपचार, सटीक संरेखण और देखभाल संभव हो सकेगी। इस अवसर पर, अमनदीप उजाला अस्पताल के ऑर्थोपेडिक विभाग के अध्यक्ष डॉ. अवतार सिंह ने कहा कि यह बड़ा कदम छोटे से बड़े की ओर एक कदम है।

सर्जरी के क्षेत्र में किए गए अपने वादे को पूरा करने की दिशा में यह एक शानदार पहल है। इसके लागू होने से अब हम सबसे जटिल मामलों को भी खूबसूरती और कुशलता से संभाल सकेंगे।नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग के अध्यक्ष डॉ. अभिजात शेठ के अनुसार, आज के संदर्भ में अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में 3डी प्रिंटिंग तकनीक एक विशेष कदम है, जिससे स्वास्थ्य सेवा में सुधार होगा।

इस पहल से शल्य चिकित्सा गतिविधियों में निश्चित रूप से सुधार होगा।

यह लॉन्च अमनदीप हॉस्पिटल्स और उजाला सिगनस के बीच उत्तर भारत के टियर 2 और टियर 3 शहरों में उन्नत प्रौद्योगिकियों को लाने के दीर्घकालिक सहयोगात्मक दृष्टिकोण का हिस्सा है।इस पहल के साथ, अमनदीप उजाला अस्पताल रोबोटिक्स, एआई-संचालित निदान, उन्नत ऑर्थोपेडिक और ट्रॉमा देखभाल के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी अस्पताल बन जाएगा।हमें अत्यंत गर्व है कि अमनदीप ग्रुप 750 बिस्तरों वाले अस्पताल और 170 डॉक्टरों की टीम के साथ नई ऊंचाइयों को छू रहा है। यह अस्पताल छह स्थानों पर बहुत अच्छी तरह से कार्यरत है, जिनमें से दो अमृतसर में, एक पठानकोट में, एक श्रीनगर में और एक तरनतारन में स्थित है।इससे भी अधिक गर्व की बात यह है कि इस समूह ने पिछले वर्षों में 25 लाख से अधिक लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करके एक बड़ा नाम कमाया है।

ओड़िया स्वाभिमान पुरूष मयूरभंज महाराजा श्री राम चंद्र भंजदेव , जिस माटी से है भारत की महामहिम राष्ट्रपति

1947 मयूरभंज रियासत भारत में विलय नहीं हो पाया । तब सरायकेला, खरसावां ओडिशा से निकाल कर केवल 1वर्ष के लिए बिहार में रखा गया । जिसे आज तक लौटाया नहीं जा सका !!

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्तंभकार

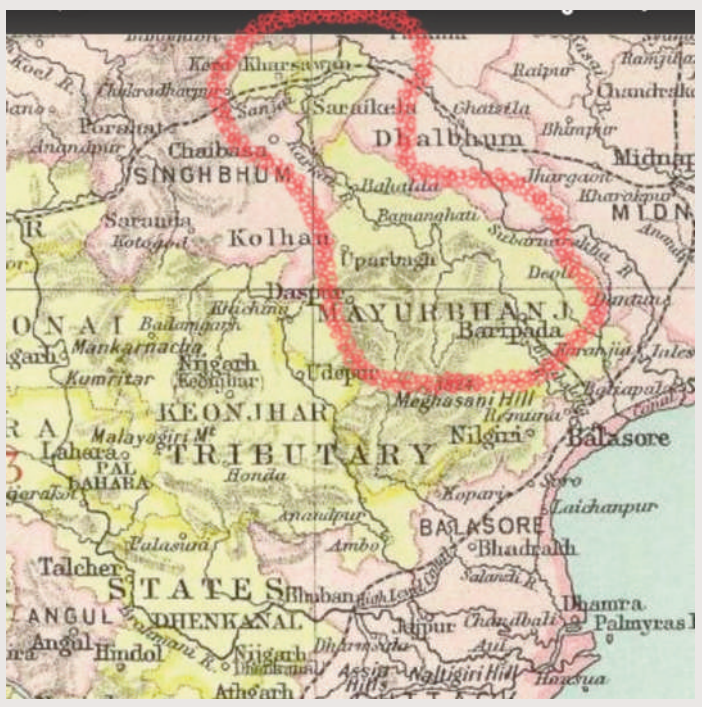

जिनका लाभ अब ओडिशा का प्रत्येक निवासी उठा रहे है।

उत्कल माता के अनेकों सपूतों में से एक थे मयूरभंज के महाराजा श्री राम चंद्र भंज देव ।जिनके रियासत जमीन से आज की महामहिम राष्ट्रपति, भारत - श्रीमती द्रोपदी मूर्मू आती हैं। संयोग से आज 17 दिसंबर महाराजा का जन्मदिन है , उधर महज बारह दिन बाद महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मूर्मू सरायकेला खरसावां जिले मे पहुंच रही है जो राजनीतिक षड्यंत्र के कारण अब बिहार के बाद झारखंड का हिस्सा है ।मयूरभंज आज भी ओड़िशा का सर्वाधिक बड़ा जिला है ।कभी झारखंड का सरायकेला जिला भी उसी मयूरभंज का हिस्सा रहा । जिसका ओड़िया पट्टा में नाम कुचुंग पीढ आज भी दर्ज है ।यह मां किचकेश्वरी का प्रदेश रहा है ।

महाराजा श्रीराम चंद्र भंज जिन्होंने पूरा जीवन अपने राज्य मयूरभंज और पूरे उत्कल देश की सेवा में समर्पित की थी ।उनकी उपलब्धियाँ और वीरता आज भी लाखों ओड़िया, गैर ओड़िया लोगों के दिलों में बसी हैं।

ओडिया भाषा के प्रति उनके सामूहिक और सार्वभौमिक प्रेम ने तत्कालीन अलगाववादी ओडिया समुदाय को एक भाषा के धागे में पिरो दिया फिर उन्होंने स्वतंत्र ओडिशा प्रांत के गठन में अपना पूरा योगदान दिया।

हां, यह अपवाद है आजादी के बाद ऐन केन प्रकारेण भले ही ओडिशा में शामिल हुए सरायकेला, खरसावां दो देशी रियासतों को उसी मयूरभंज जिले के स्वतंत्र भारत वर्ष में विलय न हो पाने के कारण एक वर्ष के लिए बिहार में रखा गया । पर बड़ी ही चालाकी से आजतक उसे बिहार सरकार ने ओडिशा को नहीं लौटाया है ।आज भी झारखंड में यह ओडिया भाषी जिला कैसे रखा गया है बड़ा ही विचित्र राजनीतिक घटना है । भाषा-संस्कृति , सामाजिक, आर्थिक मसले पर शोषण बदस्तूर जारी है जिसे राजनीतिक षड्यंत्र कहा जा सकता है। सरायकेला खरसावां ओडिशा ओड़िया इलाका आज एक गैर ओडिशा भाषी राज्य में रखा जाना श्री राम चन्द्र भंज का घोर अपमान कहा जाय तो यह कोई अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग नहीं कहलायेगा , जिस माटी की स्वयं महामहिम राष्ट्रपति ।

केवल मयूरभंज ही नहीं नये ओडिशा के निर्माता के रूप में उनकी ख्याति स्वर्णिम अतीत अटा पड़ा है। इन सबसे बढ़कर, महाराजा श्रीरामचंद्र भंजदेव जैसे महान देशभक्त, भाषा प्रेमी और गुणी व्यक्ति इतिहास में मिलना दुर्लभ हैं।

उनका जन्म आज ही के दिन 17 दिसंबर को हुआ था ।बचपन में अवचा से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, युवा महाराजा श्रीरामचंद्र को आगे की शिक्षा के लिए कटक भेजा गया ।बारोबटी किले के पश्चिमी घाट के पास स्थित एक बंगला, जिसे नरसिंहपुर बंगला के नाम से जाना जाता है वहीं पढ़ाई की ।फिर उन्होंने कटक के रेवेनशॉ कॉलेजिएट स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। बाद में, उन्होंने रेवेनशॉ कॉलेज से एफ.ए. और बी.ए. की उपाधि प्राप्त की और अपने राज्य मयूरभंज लौट आए।

इसी क्रम में, उन्होंने 15 अगस्त, 1892 से मयूरभंज राज्य का प्रशासन भार संभाला ।महाराजा के रूप में अपने राज्य के सुशासन के लिए एक परिषद का गठन किया और सदस्यों की सलाह पर, पिछली प्रशासनिक व्यवस्था में कई सुधार किए। देश की खानों से विभिन्न धातुओं और पत्थरों के निकलवाकर राज्य की आय में वृद्धि की गई।

महाराजा श्री रामचंद्र भंजदेव न केवल मयूरभंज, बल्कि पूरे उत्कल क्षेत्र के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत रहे।

इसलिए, ओडिया लोगों ने उन्हें उत्कल सम्मेलन का पहला अध्यक्ष चुना।

कहा जाता है कि एक बार महाराजा जब विदेश दौरे से लौटने तब कलकत्ता में बंगाली बुद्धिजीवियों ने उनका भव्य स्वागत किया। स्वागत के जवाब में, सभी को उम्मीद थी कि महाराजा अंग्रेजी या बंगाली में जवाब देंगे। लेकिन गहरे अपनी राष्ट्रवाद से ओतप्रोत महाराजा ने शुद्ध उड़िया में भाषण देकर सभी को मंत्रमुग्ध और आश्चर्यचकित कर दिया।

युवावस्था में महाराजा ने ब्रह्म धर्म प्रचारक केशव सेन की सुंदरी पुत्री सुसिरा देवी से विवाह करने का निर्णय लिया। चूंकि महाराजा के संरक्षकों ने इसका विरोध किया, इसलिए श्री रामचंद्र ने जनता की राय जानते हुए इसे अस्वीकार कर दिया।। वे स्वयं को एक संवैधानिक राजा मानते थे। इससे जुड़ी अनेक रोचट कहानी है।

महाराजा अक्सर ट्रेन, विदेश जाने के टिकट आदि की व्यवस्था स्वयं के पैसे से किया करते थे ।महाराजा श्रीरामचंद्र उत्कल मणि ने पंडित गोपबंधु दास को अपने राज्य का वकील नियुक्त किया था ।उत्कलमणि गोपबंधु कुछ वर्षों तक मयूरभंज में रहे ।जिस घर में वे रहते थे, वह आज भी बारीपदा में गोपबंधु भवन के नाम से जाना जाता है।

राजा को ओडिया भाषा और साहित्य से अपार प्रेम था ।उनके संरक्षण में बारीपदा से 'उत्कलप्रभा' और 'मनोरमा' नामक दो साहित्यिक पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं।

दरअसल, उस समय 'उत्कलप्रभा' लेखकों को पुरस्कार देने वाली पहली ओडिया पत्रिका थी।

इसमें महान कवि लेखक राधानाथ, फकीरमोहन, मधुसूदन राव आदि जैसे महान लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित हुईं।श्रीरामचंद्र ने ओडिशा में स्वास्थ्य सेवा और प्रशासनिक क्षेत्रों में बहुत प्रगति की।इसके अलावा भंज वंश द्वारा कृतज्ञतापूर्वक दान की गई संपत्ति से ओडिशा में कई संस्थानों का निर्माण किया गया है।

महाराजा श्रीरामचंद्र अपनी मातृभूमि ओडिशा से इतना प्रेम करते थे कि यह उनके उस समय के व्यवहार से स्पष्ट होता है।आज हम जानते हैं कि कटक में स्थित श्री रामचंद्र भंजा मेडिकल कॉलेज या एससीबी मेडिकल कॉलेज, ओडिशा और पूरे पूर्वी भारत के सबसे पुराने और अग्रणी मेडिकल कॉलेजों में से एक है।मयूरभंज के महाराजा श्री रामचंद्र भंज के प्रयासों और आर्थिक सहयोग से स्थापित इस महाविद्यालय का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है।

महाराजा श्री रामचंद्र भंज एक देशभक्त और राष्ट्रवादी व्यक्तित्व थे।ओडिया राष्ट्र के उत्थान के लिए उनके अनेक प्रयास अविस्मरणीय हैं।ओडिशा के कई जन कल्याणकारी संस्थान उनके अमूल्य योगदान से ही सुस्थापित हुए हैं और उनकी पवित्र स्मृति में गौरवान्वित हैं।

22 फरवरी, 1912 को कम उम्र में ही उनका निधन हो गया, जिससे उनके अथक प्रयास से उनके माता उत्कल का नाम रोशन हुआ। वे जन कल्याण के लिए जीवन भर समर्पित रहे। महाराजा जिन्होंने विलासिता को त्यागकर जन कल्याण में अपना जीवन व्यतीत किया, आज भी स्मृति में शेष हैं।

नगर निगम द्वारा जी.आई.एस सर्वे के नाम पर कोई फीस नही ली जा रही

लोगों से सर्वे के नाम पर पैसे मांगने को लेकर निगम कमिश्नर ने किया आगाह

अमृतसर,17 दिसंबर (साहिल बेरी)

नगर निगम अमृतसर द्वारा शहर के अंतर्गत आने वाली प्रापर्टीयों (घरों, कर्मशियल और रिहाईशी ईमारतों, दुकानों, फैक्ट्रीयों आदि) की डीजिटल मैपिंग के लिए करवाए जा रहे जी.आई.सी सर्वे को लेकर लोगों से पैसे मागंने को लेकर निगम कमिश्नर ने लोगों को आगाह किया है। इसके संबंधी जानकारी देते हुए निगम कमिश्नर बिक्रमजीत सिहं शेरगिल ने बताया की लोकल बॉडी विभाग द्वारा शहर की लगभग चार लाख प्रापर्टीयों की डीजिटल मैपिंग के लिए साईबर स्विफ्ट कंपनी को ठेका दिया गया है। जिसको लेकर उनके ध्यान में आया है कि कुछ लोग जी.आई.एस सर्वे के नाम पर धड़ले से घरों से सौ-सौ रूपऐ की वसूली कर रहें हैं। जो की सरासर गलत है। निगम द्वारा साईबर सिवफ्ट कंपनी के अलावा किसी और कंपनी या संस्था को जी.आई.एस सर्वे के लिए नही रखा गया है और कंपनी के कर्मचारियों द्वारा ही घर-घर जाकर बिना किसी पैसे के यह सर्वे किया जा रहा है। शहरवासियों को सिर्फ सर्वे के लिए आने वाली टीम को अपनी प्रापर्टी से संबंधित जानकारी देनी है और अगर कोई सर्वे के नाम पर पैसों की मांग करता है तो उसकी जानकारी तुरंत नगर निगम को दें।

उन्होंने सर्वे की प्रगति के बारे में बताया कि अभी सर्वे टीमों द्वारा वार्ड नबंर 3, 4, 31, 67 में घर-घर जाकर जी.आई.एस सर्वे किया जा रहा है और अगले 10-15 दिनों में टीमों द्वारा वॉर्ड नंबर 7, 32,69, 71 में सर्वे का काम शुरू किया जाएगा। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि लोग सर्वे के लिए आने वाली टीमों को पूरा सहयोग करें और सही जानकारी दें। क्योंकि डीजिटल मैपिंग से नगर निगम के लिए शहर के बुनियादे ढांचे को अपग्रेड करने, बेहतर टाऊन प्लानिंग, पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को बेहतर करने के साथ-साथ आपातकालीन सेवाओं को बेहतर बनाने में सुविधा होगी।

हेल्थ डिपार्टमेंट ने लंगज केयर फाउंडेशन के साथ मिलकर एक दिन की ट्रेनिंग वर्कशॉप का किया आयोजन

सर्दियों के मौसम में सांस की बीमारियों से बचने के लिए बुजुर्गों और छोटे बच्चों का खास ख्याल रखें : डॉ. राजिंदर पाल कौर

अमृतसर, 17 दिसंबर (साहिल बेरी)

पंजाब सरकार के आदेश के मुताबिक, सिविल सर्जन डॉ. सतिंदरजीत सिंह बजाज की गाइडेंस में, असिस्टेंट सिविल सर्जन डॉ. राजिंदर पाल कौर की लीडरशिप में लंग केयर फाउंडेशन की तरफ से एक खास ट्रेनिंग का आयोजन किया गया जिसमें स्टेट प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ. सोनाली वोहरा, डॉ. शिवानी सूद और डॉ. राहुल अरोड़ा ने जिले के सभी मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ को सांस और फेफड़ों की बीमारियों से बचाव और इलाज की ट्रेनिंग दी। इस मौके पर असिस्टेंट सिविल सर्जन डॉ. राजिंदर पाल कौर ने कहा कि सर्दियों के मौसम में सांस और फेफड़ों की बीमारियों से बचने के लिए बुजुर्गों और छोटे बच्चों का खास ख्याल रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदूषित हवा नेशनल हेल्थ इमरजेंसी बनती जा रही है, जो जान के लिए जानलेवा साबित हो रही है। फैक्ट्रियों, मोटर गाड़ियों, फ्यूल और पराली जलाने से एनवायरनमेंट प्रदूषित हो रहा है। वायु प्रदूषण में कई हानिकारक गैसें पैदा होती हैं, जिनमें कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, अमोनिया आदि शामिल हैं। खतरनाक गैसें वायुमंडल में फैल रही हैं, जिससे ओजोन परत में गैप आ रहा है और भारत के कई राज्यों का एयर क्वालिटी इंडेक्स दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। पंजाब में पराली जलाना एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या बन रही है। इन हानिकारक गैसों का बुरा असर गर्भवती माताओं, छोटे बच्चों और बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर बहुत ज्यादा पड़ता है। इसीलिए लंग्स केयर फाउंडेशन ने भारत में करीब 2.8 मिलियन फेफड़ों को बचाने में मदद करने का लक्ष्य रखा है। इस संबंध में अमृतसर जिले में मेडिकल अधिकारियों को ट्रेनिंग देकर उन्हें पहले ही मास्टर ट्रेनर बना दिया गया है। ये मास्टर ट्रेनर आगे बढ़कर अपने-अपने ब्लॉक में आम जनता और खासकर पैरामेडिकल स्टाफ को जागरूक कर रहे हैं। इस दौरान सीनियर मेडिकल अधिकारी डॉ. भारती धवन, जिला एम ई आई ओ अमरदीप सिंह और सभी मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ मौजूद थे।

अवैध मादक पदार्थ व्यापार मे जमशेदपुर का एक ओपी प्रभारी निलंबित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर। जमशेदपुर के उलीडीह ओपी प्रभारी दीपक कुमार ठाकुर को गंभीर अनियमितता और कर्तव्य में लापरवाही के आरोप में निलंबित कर दिया गया है। उनके स्थान पर मोहम्मद शारिक अली को उलीडीह ओपी का नया प्रभारी नियुक्त किया गया है। यह कार्रवाई एसएसपी पीयूष पांडेय के निर्देश पर की गई है। निलंबन के साथ ही प्रभारी के खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू कर दी गई है।

मामले की शुरुआत उस समय हुई जब सिटी एसपी को सूचना मिली कि उलीडीह ओपी प्रभारी द्वारा अवैध मादक पदार्थ कारोबार में संलिप्त कुछ युवकों को संदिग्ध परिस्थितियों में बिना किसी कानूनी प्रक्रिया के छोड़ दिया गया है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए पूरे मामले की जांच की जिम्मेदारी सिटी एसपी कुमार शिवाशीष को सौंपी गई थी।

जांच में सामने आया कि 10 दिसंबर की रात करीब 8 बजे अवैध गांजा खरीद-बिक्री के आरोप में चार युवकों को कई पुड़िया गांजा के साथ हिरासत में लेकर थाना लाया गया था। इनमें अमन सिंह और संतोष ठाकुर शामिल थे। जांच में यह पाया गया कि दोनों युवकों को न तो प्राथमिकी दर्ज किए बिना और न ही किसी वरीय पदाधिकारी को सूचना

दिए बिना ओपी से छोड़ दिया गया, जो पुलिस की निर्धारित प्रक्रिया और नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है।

इतना ही नहीं, 11 दिसंबर को साधु मुंडा नामक एक अन्य संदिग्ध को भी अवैध मादक पदार्थ से जुड़े संदेह में हिरासत में लिया गया था, लेकिन उसे भी बिना किसी कानूनी कार्रवाई और प्राथमिकी दर्ज किए छोड़ दिया गया। जांच रिपोर्ट में इन सभी मामलों में ओपी प्रभारी की भूमिका को संदिग्ध बताया गया है।

जांच रिपोर्ट के आधार पर एसएसपी पीयूष पांडेय ने इसे गंभीर अनुशासनहीनता मानते हुए दीपक कुमार ठाकुर को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है तथा विभागीय जांच के आदेश दिए हैं। पुलिस प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि अवैध मादक पदार्थ के मामलों में किसी भी स्तर पर लापरवाही या नियमों की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023